सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 176, नई दिल्ली, बुधवार 03 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

रिश्ता चाहे इस धरती पर कोई भी हो, सबका सिर्फ एक ही पासवर्ड है "भरोसा"

03 दिल्ली–एनसीआर में प्रदूषण कम करने के लिए केंद्र सरकार की दो लाख ट्रक व...
06 कैसे छात्र एक पुस्तक महोत्सव का अधिकतम लाभ उठा सकते हैं
08 केदारनाथ-हेमकुंड साहिब रोपवे परियोजनाओं पर हुआ समझौता

क्या दिल्ली परिवहन विभाग को महिलाओं की सुरक्षा के मद्देनजर ई रिक्शा पर चालक का नाम और मोबाइल नंबर लिखा जाना अनिवार्य नहीं करना चाहिए ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। यूपी में महिला आयोग ने ई-रिक्शा में महिलाओं से छेड़छाड़ की घटनाओं पर बड़ा फैसला लिया है। रिक्शा चालकों के लिए विशेष निर्देश दिए हैं।

आदेश के तहत अब मोबाइल नंबर के साथ लिखना होगा चालक का नाम और यह आदेश यूपी के सभी 75 जिलों में होगा लागू।

उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग ने महिलाओं के साथ ई-रिक्शा में हो रही छेड़छाड़ की घटनाओं को गंभीरता से लेते हुए अहम कदम उठाया है। आयोग ने निर्देश दिया है कि अब हर ई-रिक्शा पर चालक का नाम और मोबाइल नंबर स्पष्ट रूप से लिखा होना चाहिए।

महिला आयोग की अध्यक्ष ने बाराबंकी में अफसरों के साथ बैठक कर यह निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी इस मामले को लेकर गंभीर हैं। बैठक में आयोग ने महिलाओं की सुरक्षा को लेकर कई अहम बिंदुओं पर चर्चा की।

इसके साथ ही आयोग ने हेल्पलाइन 1090 और 181 की कार्यप्रणाली की समीक्षा कराने का आश्वासन दिया, ताकि पीड़ित महिलाओं को तुरंत सहायता मिल सके।

महिला आयोग की अध्यक्ष ने सभी थानों में महिला डेस्क को और मजबूत करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि इन कदमों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि महिलाएं बिना किसी डर के अपनी शिकायत दर्ज करा सकें और उन्हें त्वरित न्याय मिले।

आपको बता दें कि इसके पहले भी उत्तर प्रदेश ट्रैफिक पुलिस ने ऑटो टेंपो और ई रिक्शा में ड्राइवर का नाम उसका मोबाइल नंबर मालिक का नाम समेत अन्य जानकारियां शीशे पर आगे लिखने का एक अभियान चलाया था। जिसमें कई गाड़ियों पर इसका पालन भी हुआ, हालांकि बीच में फिर शिथिलता बरती गई है।

अब एक बार वापस से महिला आयोग के अध्यक्ष के इस फैसले के बाद इस मामले में तेजी देखने को मिल सकती है और आने वाले दिनों में तमाम ई रिक्शा और ऑटो रिक्शा के शीशे पर उनके ड्राइवर का नाम मोबाइल नंबर समेत अन्य जानकारियां सार्वजनिक तौर पर लिखी रहेंगी।

महिला आयोग की अध्यक्ष की तरफ से यह फैसला महिलाओं की सुरक्षा के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है इससे काफी हद तक घटनाओं में कमी आने की संभावना है वहीं उनका यह कदम महिलाओं के प्रति सराहनीय है।

दिल्ली के सड़को पर व्यवसायिक गतिविधि में चलने वाले सभी सवारी वाहनों के लिए यह नियम और परमिट कंडीशन के तहत ही बहुत पहले से अनिवार्य है **"वाहन मालिक का नाम, वाहन चालक का नाम, दोनों के मोबाइल नंबर, चालक का लाइसेंस और बेज नंबर लिखा होना"** फिर दिल्ली परिवहन विभाग इसे ई रिक्शाओ पर आखिर क्यों नहीं लागू कर रहा और उसका सख्ती से पालन क्यों नहीं करवाना चाहता, सोचनीय है।

कही ऐसा तो नहीं दिल्ली परिवहन विभाग के अधिकारियों ने जो एक ही लाइसेंस पर कई कई ई रिक्शे नियम के बाहर जाकर पंजीकृत किए हुए है वह बड़ा कारण हो क्योंकि एक लाइसेंस से एक समय में एक ही ई रिक्शा सड़क पर चल सकता है तो अन्य उसी लाइसेंस पर पंजीकृत रिक्शे कैसे चलेंगे ?

दिल्ली परिवहन विभाग को तत्काल प्रभाव से दिल्ली की सड़को पर ई रिक्शा चलाने वाले चालकों के नाम, पता और मोबाइल नंबर का ई रिक्शे पर लिखना अनिवार्य करने के आदेश पारित कर उसे सख्ती से पालन करवाना चाहिए। साथ ही समय समय पर प्रवर्तन शाखा परिवहन विभाग और दिल्ली यातायात पुलिस से जांच करवानी चाहिए की चालक वही है जिसका नाम ई रिक्शा पर लिखा हुआ है या नहीं।

गुलामी और यातना से मुक्ति: कानून बनाम हकीकत, सार्वभौम अधिकार

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) पिंकी कुंडू, महासचिव

क्या आप जानते हैं हर इंसान को जन्म से ही स्वतंत्रता और गरिमा का अधिकार है।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार घोषणा यूडीएचआर (UDHR) का अनुच्छेद 4 और 5 यह साफ कहता है कि –

1. किसी भी व्यक्ति को दासता या गुलामी में नहीं रखा जाएगा।

2. किसी को भी यातना (Torture) या अमानवीय, अपमानजनक व्यवहार या दंड नहीं दिया जाएगा।

भारत का कानून:-

भारतीय संविधान (अनुच्छेद 21) – जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार देता है।

बंधुआ मजदूरी उन्मूलन अधिनियम, 1976 – बंधुआ मजदूरी को अपराध घोषित करता है।

IPC (भारतीय दंड संहिता) – यातना, शारीरिक शोषण और जबरन श्रम को दंडनीय अपराध मानती है।

नेशनल ह्यूमन राइट्स कमीशन (NHRC) – ऐसे मामलों पर निगरानी रखता है।

विवाद और चुनौतियां

मानव तस्करी (Human Trafficking): भारत और पड़ोसी देशों (नेपाल, बांग्लादेश, म्यांमार) से महिलाएं और बच्चे अक्सर जबरन मजदूरी, वेश्यावृत्ति या घरेलू काम के लिए बेचे जाते हैं।

बंधुआ मजदूरी: आज भी कई ईंट-भट्टों, खदानों और कृषि क्षेत्रों में गरीब परिवार कर्ज़ के बदले पीढ़ियों तक काम करने को मजबूर होते हैं।

पुलिस हिरासत में यातना: कई रिपोर्ट्स में सामने आया है कि पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां पूछताछ के दौरान शारीरिक व मानसिक यातना देती हैं, जबकि भारत ने अभी तक यातना के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UN Convention against Torture, CAT) को पूर्ण रूप से लागू नहीं किया है।

आसपास के देशों की स्थिति

नेपाल: मानव तस्करी एक गंभीर समस्या है; कई महिलाएं भारत और खाड़ी देशों में बेची जाती हैं।

बांग्लादेश: जबरन बाल श्रम और मानव तस्करी प्रमुख मुद्दे हैं।

पाकिस्तान: अल्पसंख्यकों और गरीब तबकों में जबरन मजदूरी (खासतौर पर ईंट-भट्टों में) व्यापक है।

म्यांमार: सैन्य शासन में मानवाधिकार उल्लंघन, जबरन मजदूरी और यातना आम हैं।

भारत में वास्तविकता बनाम कानून

1. कानून सख्त हैं, लेकिन लागू करने में कमी है।

2. कई मामलों में पीड़ितों को न्याय मिलने में सालों लग जाते हैं।

एनजीओ और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं लगातार रिपोर्ट करती आ रहीं हैं भारत देश में "कागज़ पर अधिकार हैं, लेकिन ज़मीनी हकीकत अलग है।"

निष्कर्ष "स्वतंत्रता और गरिमा हर मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है। कानून तभी सार्थक हैं जब समाज और सरकार दोनों मिलकर यह सुनिश्चित करें की कोई भी इंसान गुलामी, बंधुआ मजदूरी या यातना का शिकार नहीं है।"

"टोलवा ट्रस्ट"
tolwaindia@gmail.com

यातायात परामर्श :- दिल्ली यातायात पुलिस

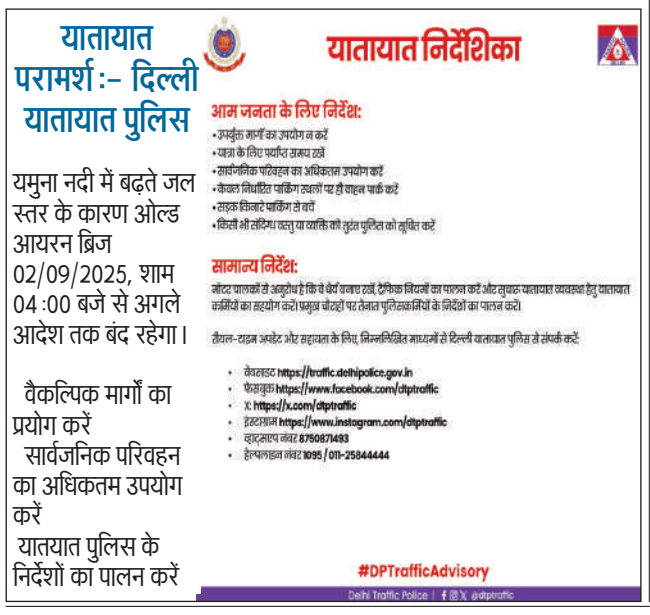

यमुना नदी में बढ़ते जल स्तर के कारण ओल्ड आयरन ब्रिज 02/09/2025, शाम 04:00 बजे से अगले आदेश तक बंद रहेगा।

वैकल्पिक मार्गों का प्रयोग करें

सार्वजनिक परिवहन का अधिकतम उपयोग करें

यातयात पुलिस के निर्देशों का पालन करें

भारत में विदेशी नागरिकों पर अब हो सकती है कड़ी निगरानी, इमिग्रेशन एंड फॉरेनर्स एक्ट लागू

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। नए कानून के तहत देश में रह रहे या अवैध रूप से प्रवेश करने वाले विदेशियों के लिए सख्ती। इमीग्रेशन एंड फॉरेनर्स एक्ट 2025 बिल अप्रैल 2025 में संसद में पारित हुआ था। इस बिल के तहत

1. ब्यूरो ऑफ इमिग्रेशन को विदेशी नागरिकों की भारत में स्क्रूटनी और उन पर कार्रवाई के कानूनी अधिकार दिए गए हैं।

2. नियमों का उल्लंघन कर भारत में आए विदेशी नागरिकों को तुरंत डिपोर्ट करने के लिए ब्यूरो ऑफ इमिग्रेशन के पास संवैधानिक अधिकार होगा और वह संबंधित राज्यों से कोऑर्डिनेट करेगा।

3. नियमों के तहत अवैध तरीके से जिस संस्थान में चाहे वह होटल हो शिक्षण संस्थान हो या फिर और कुछ भी वहां विदेशी नागरिकों की आवाजाही हो तत्काल प्रभाव से उसका रजिस्ट्रेशन भी रद्द किया जाएगा।

ब्यूरो ऑफ इमिग्रेशन विदेशी नागरिकों का राज्य डेटाबेस बरकरार रखेगी और समय समय पर विदेशी यात्री के बारे में संबंधित जानकारी देती रहेंगी।

भारत के हितों को नुकसान पहुंचाने वाले विदेशी नागरिक जो भारतीय वीज़ा और पासपोर्ट की मदद से भारत में रहते हैं उन पर लगाम कसने के लिए यह बिल संसद में लाया गया था। गृह मंत्रालय द्वारा इसका नोटिफिकेशन जारी किया गया है और तत्काल प्रभाव से यह नियम लागू होंगे।

नए इमिग्रेशन एंड फॉरेनर्स एक्ट, 2025 में भारत आने वाले विदेशियों के लिए आप्रवास केंद्र पर रिपोर्ट करने की शर्तें और इससे संबंधित तरीके बताए गए हैं।

नियमानुसार भारत आगमन पर प्रत्येक विदेशी को आप्रवास केंद्र पर अपना पासपोर्ट या अन्य यात्रा दस्तावेज़, वीज़ा या भारत का विदेशी नागरिक कार्ड या इलेक्ट्रॉनिक यात्रा प्राधिकार पेश करना होगा। इसका मकसद नाम, राष्ट्रीयता, आयु, लिंग और जन्म स्थान का सत्यापन करना होगा और आप्रवास अधिकारी की मांग पर उसे भारत में अपना रहने का पता या इच्छित पता, यात्रा का उद्देश्य और भारत में रहने की प्रस्तावित अवधि / अन्य सुसंगत जानकारी देनी होगी।

भारत सरकार के नए इमिग्रेशन एंड फॉरेनर्स एक्ट, 2025 के तहत, बिना वैध पासपोर्ट या वीज़ा के भारत में प्रवेश करने वाले विदेशी को 5 साल तक की जेल और 5 लाख रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। नए नियम में कहा गया है कि यदि प्रवेश, निवास या निकास जाली पासपोर्ट या यात्रा दस्तावेजों के आधार पर किया गया हो, तो सजा 2 से 7 साल की जेल और 1 लाख से 10 लाख रुपये तक का जुर्माना होगा।

यह नया कानून 1 सितंबर 2025 से प्रभावी हो गया है। केंद्र ने इसे संसद के बजट सत्र में पारित होने के बाद अधिसूचित किया है। सरकार द्वारा लाए गए नए कानून इमिग्रेशन एंड फॉरेनर्स एक्ट, 2025 ने चार पुराने कानूनों- फॉरेनर्स एक्ट, 1946; पासपोर्ट (एंट्री इनटू इंडिया) एक्ट, 1920, रजिस्ट्रेशन ऑफ फॉरेनर्स एक्ट, 1939 और इमिग्रेशन (कैरियर्स लायबिलिटी) एक्ट, 2000 निरस्त कर दिया है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के सदस्य बनने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म पर क्लिक करें और भरकर जमा करे, पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट (पंजीकृत अंडर सेक्शन 60), नीति आयोग भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त, एमएसएमई में पंजीकृत
https://forms.gle/VEThcFgMcknGFc1u9

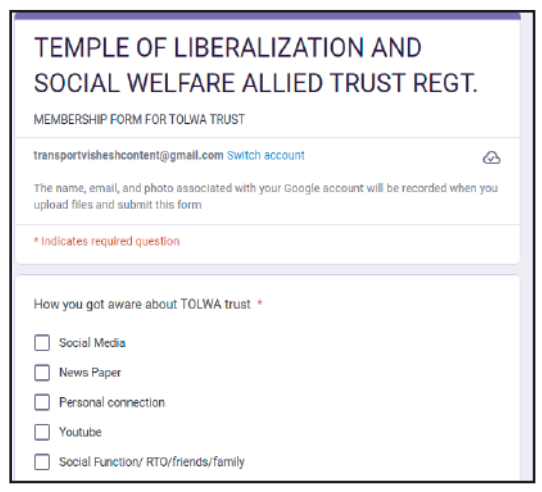
TEMPLE OF LIBERALIZATION AND SOCIAL WELFARE ALLIED TRUST REGT.
MEMBERSHIP FORM FOR TOLWA TRUST
transportvisheshcontent@gmail.com Switch account
The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form
* Indicates required question
How you got aware about TOLWA trust *
Social Media
News Paper
Personal connection
Youtube
Social Function/ RTO/friends/family

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) अपने समाज की लड़ाई लड़ने में सक्षम व हमें भी कोऑपरेटिव के तर्ज पर काम करने की आवश्यकता

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार के लिए बस हम एक चलते फिरते तिजोरी से काम नहीं –डॉ राजकुमार यादव

असंन्ध (करनाल) हरियाणा - असंन्ध ट्रक यूनियन करनाल में यूनाइटेड फ्रंट फॉर ट्रक ट्रांसपोर्टर्स एन्ड सारथी एसोसिएशन, राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) द्वारा आयोजित अधिवेशन में हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, ओड़शिा, उत्तर प्रदेश व महाराष्ट्र से विभिन्न संस्थाओं के प्रधान/मुखीया राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा के पदाधिकारीगण शामिल हुए। भारी बारिश व विकट मौसम के बावजूद विपरीत परिस्थितियों में भी सदस्यों व प्रतिनिधियों की संख्या उत्साहवर्धक रही। सर्वप्रथम अमर शहीद भगत सिंह जी के छायाचित्र पर सलाहकार समिति के हरदीप सिँह ढिल्लों, सिसपाल मोर, हरदीप सिँह वढेरा, राधेश्याम मलिक, आयोजन समिति के -छतर सिंह जी राष्ट्रीय कमेटी के राकेश अग्रवाल, मोहम्मद अफसर, रविंद्र बधानी, प्रदेश समिति के बलजिंदर सहारन, के अलावा राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव के सामूहिक आतिथय में माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात कार्यक्रम की शुरुआत असंन्ध यूनियन के प्रधान छतर सिंह जी के अभी भाषण से हुआ। केथल से रामफल जी ने यूनियनों की दुरावस्था पर अफ़सोस जताया, गुरनाम सिंह जोहल अमृतसर ने परिवहन व्यवसाय को आज की परीस्थिति में मौत का दूसरा नाम बताया, हरपरीत सिँह गिल भटिंडा ने परिवहन धाराओं को समझने व प्रयोग पर बल दिया, मोहम्मद अफसर अमरावती महाराष्ट्र ने जिसका माल उसका हमाल के लिए एकजुट होने की बात की, राकेश अग्रवाल नागपुर महाराष्ट्र ने जीएसटी में संशोधन करने व उसके दुरुपयोग को रोकने के बात पर जोर दी, रविंद्र धरनिया हनुमानगढ़ राजस्थान ने ट्रैक्टर ट्राली के इस्तेमाल पर रोक व ओवरलोड को बंद करने की मूहिम में साथ आने की अपील की, मोहन सिंह दिल्ली ने एनसीआर में पॉल्यूशन के नाम पर गाड़ियों के साथ होने वाली ज़्यादती पर विरोध जताया, महेंद्र सिंह सिरसा ने सभी समस्याओं के लिए सर्वप्रथम सभी संस्थाओं को एक होकर राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के बैनर तले काम करने का आह्वान किया। सुखविंदर सिंह बराड़ ने संस्था के लिए सभी को तन मन से सहयोग करने के साथ ही संस्था के एजेंडे को लागू करने के लिए धन की आवश्यकता पर भी

बल दिया। रविंद्र बधानी ने व्हाट्सएप फेसबुक जैसे सोशल मीडिया पर लगातार पनपते संस्थाओं के कारण सड़कों पर लड़ाई लड़ने वाले कार्यकर्ताओं के मनोबल पर ठेस लगने चिंता व्यक्ति करते हुए ऐसी संस्थाओं से दूर रहने की अपील की।

राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने - अब तक मिल रहे अप्रत्याशित समर्थन के लिए सबका हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इतने बड़े विशाल युवा फौज के साथ ही साथ अनुभवी सलाहकार मंडली रूपी रत्न भंडार होने के कारण हमारी संस्था एक अलग चमक के साथ नए आयाम हासिल कर रही है व आने वाले दिनों में निश्चित रूप से अप्रत्याशित संख्याओं में विभिन्न मुद्दों पर विजय पताका लहराएगी।

60 संस्थाओं से अधिक के प्रतिनिधियों ने इस अधिवेशन में शामिल होकर राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की लड़ाई में तन मन धन से सहयोग करने का निर्णय लेते हुए एकजुटता के साथ संघर्ष की बात की। इसी अधिवेशन में पंजाब के दो, राजस्थान के चार, दिल्ली से दो, महाराष्ट्र से तीन नए संस्थाओं ने राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे को समर्थन देते हुए परिवहन व्यवसायों के लड़ाई में इसकी भूमिका पर विश्वास व्यक्त किया। अंततः सलाहकार समिति के चयन के रूप में - महेंद्र सिंह सिरसा, राधेश्याम मलिक हिसार, होशियार सिंह फतेहाबाद, बलराज शर्मा जींद, रामफ़ल प्रधान कैथल, शीशपाल मोर अंबाला, हरदीप सिंह ढिल्लों कुरुक्षेत्र, ताराचंद सैनी यमुनानगर, हरदीप सिंह बडेरा करनाल व छतर सिंह असंन्ध को सर्वसम्मति से मनोनीत किया गया। वहीं सुखविंदर सिंह बराड़, हरप्रीत सिंह गिल, गुरनाम सिंह जोहल, रविंद्र धरनिया, गुरमीत सिंह कालरा को भी विभिन्न समितियों व कोर कमेटी हेतु चयनित किया गया।

इस अधिवेशन हेतु प्रमुख भूमिका में सतकुँवार गर्ग जींद, नरेश गोछी झज्जर, सतवीर बेनीवाल पानीपत, बृजलाल ऐलनाबाद, देवी लाल शर्मा अंबाला, विष्णु लाम्बा हिसार व अन्य मौजूद थे।

दिल्ली में ई-रिक्शा: उपयोग, सड़क सुरक्षा और जीवन प्रभावित करने वाले पहलू

अभिषेक राजपूत

नई दिल्ली। दिल्ली में ई-रिक्शा आज एक महत्वपूर्ण परिवहन साधन बन चुके हैं, जो खासतौर पर मेट्रो स्टेशनों, बाजारों और आवासीय इलाकों में लोगों को किफायती और पर्यावरण मित्रता वाली यात्रा उपलब्ध कराते हैं। हालांकि, इनके बढ़ते उपयोग के साथ ही सड़क सुरक्षा से जुड़े कई गंभीर मुद्दे और ट्रैफिक जाम की समस्याएं भी उभर रही हैं।

ई-रिक्शा के उपयोग और सड़क सुरक्षा संबंधी समस्याएं

ई-रिक्शा दिल्ली में मुख्य रूप से अंतिम मील कनेक्टिविटी के लिए इस्तेमाल होते हैं। ये छोटे, सस्ते और स्वच्छ ऊर्जा द्वारा चलने वाले वाहन हैं, जो जनता को सार्वजनिक परिवहन तक पहुंचाने में सहायक हैं। परन्तु, इनकी बढ़ती संख्या ने ट्रैफिक व्यवस्था को चुनौती दी है। कई चालक ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करते हैं, जैसे लाल बत्ती का उल्लंघन, ज़िग-ज़ैग ड्राइविंग, गलत स्थानों पर गाड़ी खड़ी करना, और मुख्य सड़कों पर पार्किंग करना। इससे न केवल सड़क पर दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ती है, बल्कि ट्रैफिक जाम भी बढ़ जाता है। यात्रियों की संख्या अधिक लेकर चलना और अचानक रुकना भी आम हैं, जो सड़क पर खतरनाक स्थिति पैदा करते हैं। अधिकारियों ने दिल्ली में लगभग 1.2 लाख रजिस्टर्ड ई-रिक्शा होने की बात कही है, जबकि असली संख्या इससे दोगुनी होने का अंदेशा है। इससे जाम और सड़क की भीड़ बढ़ती जा रही है, और सड़क सुरक्षा का स्तर कम हो रहा है।

ई-रिक्शा चालकों की आमदनी और जीवन पर प्रभाव

ई-रिक्शा चलाना कई लोगों के लिए आजीविका का मुख्य साधन बन चुका है। दिल्ली में ई-रिक्शा चालक रोजाना लगभग 800 से 1000 रुपये तक कमा लेते हैं, जो उन्हें पारंपरिक रिक्शा या अन्य छोटे स्वरूप

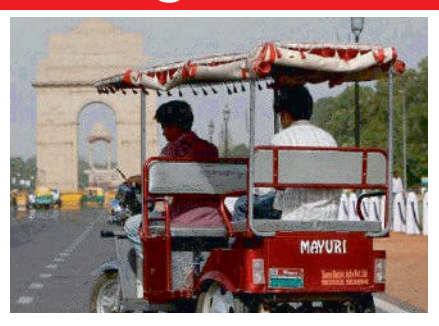

की नौकरी से बेहतर आमदनी देता है। यह रोजगार उन लोगों के लिए बहुत फायदेमंद है जिनके पास ज्यादा स्किल या शिक्षा नहीं होती। हालांकि, ई-रिक्शा चालक कई बार बिना लाइसेंस या बिना पंजीकरण के वाहन चलाते हैं, जिससे उनको कानूनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही, उनकी आय अस्थिर होती है और उन्हें प्रशिक्षण की कमी की वजह से सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने में दिक्कत होती है।

ट्रैफिक जाम और असुविधाओं से निपटने के उपाय ई-रिक्शा की वजह से होने वाले ट्रैफिक जाम और असुविधाओं को नियंत्रित करने के लिए दिल्ली सरकार और पुलिस कई कदम उठा रही हैं। इनमें प्रमुख हैं:

लाल बत्तियों का उल्लंघन करने, गलत पार्किंग करने और ट्रैफिक नियम तोड़ने वाले चालकों पर कड़ी कार्रवाई और भारी चालान।

पंजीकरण और लाइसेंसिंग के नियम कड़े करना ताकि अवैध ई-रिक्शाओं को सड़कों से हटाया जा सके।

मेट्रो स्टेशनों और बाजारों के आसपास ई-रिक्शा के लिए तय पार्किंग स्टैंड बनाना ताकि मुख्य सड़कों पर फालतू खड़ा न हो।

ड्राइवरों को ट्रैफिक नियमों के पालन के लिए नियमित प्रशिक्षण और जागरूकता अभियान।

सड़क पर ई-रिक्शा के लिए निश्चित लेन बनाना और संख्या को नियंत्रित करना ताकि तेज गाड़ी चलाने वालों और ई-रिक्शा के बीच संघर्ष कम हो।

अवैध चार्जिंग स्टेशनों पर नियंत्रण और सुरक्षित चार्जिंग स्टेशन बनाना ताकि बिजली चोरी और आग जैसी दुर्घटनाओं को रोका जा सके।

निष्कर्ष

ई-रिक्शा दिल्ली के परिवहन तंत्र का एक बड़ा हिस्सा बन चुके हैं और इनसे कई लोगों को रोजगार और सहूलियत मिली है। लेकिन इनके कारण सड़क सुरक्षा में कमी और ट्रैफिक समस्याएं भी बढ़ी हैं। बेहतर नियमन, सख्त कानूनों का पालन, और चालक प्रशिक्षण के जरिए इन नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता है। तभी दिल्ली की सड़कें सुरक्षित और सुचारू रूप से चल सकेंगी, और ई-रिक्शा चालक भी अपनी आमदनी और सम्मान के साथ जीवन यापन कर सकेंगे।

जनहित में जारी : स्वदेशी अपनाओ, राष्ट्र को शक्तिशाली बनाओ।

संजय बाटला

आए डालते हैं खाने पीने की चीजों पर एक नज़र

आजकल अधिकतर लोग ₹पिज्जा₹ बड़े शौक से खाना पसंद करते हैं, चलिये सबसे पहले पिज्जा पर एक नज़र डालें:-

पिज्जा बेचने वाली कंपनिया –

"Pizza Hut, Dominos,
KFC, McDonalds, Pizza Corner, Papa John's Pizza, California Pizza Kitchen, Sal's Pizza₹

ये सब कम्पनियाँ अमेरिका की हैं और पिज्जा में टेस्ट लाने के लिये E-631 flavour Enhancer नाम का तत्व का उपयोग करती हैं जो सुअर के मांस से बनता है !

आप चाहो तो Google पर जांच कर सकते हैं

आपको सावधान कर रहे है निम्न जानकारी से अवगत कराते हुए, विदेशी खाने पीने की चीजों के पैकेटों पर प्रयोग में आने वाले इंग्रेट के कोड लिखे होते है जिनसे आप जांच कर सकते हैं उसमें क्या चीजें मिली हुई है।

आपकी जानकारी के लिए कोड और कोड का अर्थ नीचे प्रस्तुत है

E 322 - गाय का मांस
E 422 - एल्कोहल तत्व
E 442 - एल्कोहल तत्व और केमिकल
E 471 - गाय का मांस और एल्कोहल तत्व
E 476 - अल्कोहल तत्व
E 481 - गाय और सुअर के मास का संगटक
E 627 - घातक केमिकल
E 472 - गाय + सुअर + बकरी के मिक्स मांस के संगटक
E 631 - सुअर की चर्बी का तेल
E 635 - सुअर के मांस से बना पदार्थ

नोट - यह सभी कोड आपको ज्यादातर विदेशी कम्पनीयों के उत्पादन जैसे :- चिप्स, बिस्कुट, च्युंगम, टॉफी, कुरकुरे ओर मैगी आदि में दिखेगे। ध्यान दें, यह अफवह नही है यह बिलकुल सच है और आप को अगर यकीन नही हो तो इंन्टरनेट गुगल पर सर्च कर सकते हैं।

1. मैगी के पैक पर ingredient में देखें, flavor (E-635) लिखा मिलेगा, यह जानकर भी आप मैगी खाते हैं तो आश्चर्यजनक बात है।

आप google पर जांच कर देख सकते हैं इन सब नम्बर्स को:-

E100, E110, E120, E140, E141, E153, E210, E213, E214, E216, E234, E252, E270, E280, E325, E326, E327, E334, E335, E336, E337, E422, E430, E431, E432, E433, E434, E435, E436, E440, E470, E471, E472, E473, E474, E475, E476, E477, E478, E481, E482, E483, E491, E492, E493, E494, E495, E542, E570, E572, E631, E635, E904.

भारत के १ ५ करोड़ लोगों में से अगर सिर्फ 10% लोग प्रतिदिन 10 रुपये का फलों का रस पिए तो महीने भर में होता है लगभग ₹3600 करोड़₹ जो देश में रहेगा और देश हित में काम आएगा और अगर आप इसकी जगह कोका कोला या पेप्सी पीते हैं तो यह₹3600 करोड़₹ रुपये देश के बाहर चला जाता है।

कोका कोला, पेप्सी जैसी कंपनियाँ प्रतिदिन "7000 करोड़" से भी ज्यादा रकम देश से जहरीला पानी पिलाकर बाहर ले जाती है।

अगर आप सभी गन्ने का जूस, नारियल पानी, आम, फलों के रस आदि का सेवन करने लगेंगे तो सेहत भी दुरुस्त रहेगी और देश का ₹7000 करोड़₹ रूपये बचा कर हमारे किसानों और देश हित में काम आएगा।

फलों के रस के धंधे से ₹1 करोड़₹ लोगों को रोजगार मिलेगा और 10 रूपये के रस का गिलास 5 रूपये में ही मिलने लगेगा इसलिए स्वदेशी अपनाओ, राष्ट्र को शक्तिशाली बनाओ।

Cocacola
Maggi
Fanta
Garnier
Ravlon
Lorial
Huggis
Levis
Nokia
Macdownalds
Calvin clin
Kit kat
Sprite

ऊपरलिखित कंपनियों द्वारा निर्मित प्रोडक्ट अगर 80% लोगों ने इस्तेमाल करना बंद कर दिया तो इनकी आधे से ज्यादा ब्रांच बंद हो जाएगी। पर इसके लिए सभी देशवासी को एकजुट होकर जागृत होना होगा और एकमत होकर अपने देश में बना हुआ माल स्वदेशी को अपनाना शुरू करना होगा!

पाँच दिशाओं के पाँच हनुमान

हनुमानजी के हर रूप की या तो मूर्तियां हैं और यदि मूर्तियां नहीं बनी हैं तो चित्र या तस्वीर बने होंगे।

हनुमान की मूर्तियों को किस दिशा में स्थापित किया गया है इसका विशेष महत्व माना गया है। जैसे दक्षिणमुखी हनुमान की पूजा का उद्देश्य और महत्व अलग है उसी तरह उत्तरमुखी हनुमानजी की पूजा का उद्देश्य और महत्व भिन्न है।

हनुमानजी के किस विग्रह की पूजा करने से क्या होगा

1. पूर्वमुखी:- पूर्व की तरफ जो मुंह है उसे 'वानर' कहा गया है। जिसकी प्रभा करोड़ों सूर्यो के तेज समान हैं। इनका पूजन करने से समस्त शत्रुओं का नाश हो जाता है। इस मुख का पूजन करने से शत्रुओं पर विजय पाई जा सकती है।

2. पश्चिममुखी :- पश्चिम की तरफ जो मुंह है उसे 'गरूड़' कहा गया है। यह रूप संकटमोचन माना गया है। जिस प्रकार भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ अजर-अमर हैं उसी तरह इनको भी अजर-अमर माना गया है।

3. उत्तरामुखी हनुमान :- उत्तर दिशा देवताओं की मानी जाती है। यही कारण है कि शुभ और मंगल की कामना उत्तरामुखी हनुमान की उपासना से पूरी होती है। उत्तर की तरफ जो मुंह है उसे 'शूकर' कहा गया है। इनकी उपासना करने से अबाध धन-सम्पदा, ऐश्वर्य, प्रतिष्ठा, लंबी आयु तथा निरोगी काया प्राप्त होती है।

4. दक्षिणामुखी हनुमान :- दक्षिण की तरफ जो मुंह है उसे 'भगवान नृसिंह' कहा गया है। यह रूप अपने उपासको को भय, चिंता और परेशानीयों से मुक्त करवाता है। दक्षिण दिशा में सभी तरह की बुरी शक्तियों के अलावा यह दिशा काल की दिशा मानी जाती है। यदि आप अपने घर में उत्तर की दीवार पर हनुमानजी का चित्र लगाएंगे तो उनका मुख दक्षिण की दिशा में होगा। दक्षिण में उनका मुख होने से वह सभी तरह की बुरी शक्तियों से हमें बचाते हैं। इसलिए दक्षिणामुखी हनुमान की साधना काल, भय, संकट और चिंता का नाश करने वाली होती है। इससे शनि की सभी तरह की बाधा भी दूर रहो जाती है।

5. ऊर्ध्वमुख हनुमान :- हनुमानजी का ऊर्ध्वमुख रूप 'घोड़े' के समरूप है। यह स्वरूप ब्रह्माजी की प्रार्थना पर प्रकट हुआ था। मान्यता है कि हयग्रीवदैत्य का संहार करने के लिए वे अवतरित हुए थे।

ममता- विवेचना

ममता शब्द मम से बना है, मम यानि मेरे पन का भाव, संसार में बहुत लोग ममता का अर्थ प्रेम समझते हैं परन्तु प्रेम और ममता में तो दूर-दूर तक कोई समानता नहीं है - प्रेम व्यक्ति को आनंद देता है और ममता कष्ट देती है

ममता में स्वामी होने का भाव है, उसका अधिकार है और इसी, मैं-मेरे पन, के कारण लोग दुःख पा रहे हैं, जीव को, मैं-मेरेपन रुपी, ममता से मुक्त हो जाना चाहिए, ताकि सच्चा प्रेम जन्म ले सके

ये संसार-परिवार, वस्तुएँ- साधन, भूमि, पेड़-पौधे, नदी-वन सभी परमात्मा की देन है और जीव केवल इनका उपभोगी है, जहाँ इन्हें अपना मानना शुरू किया, वहीं से कष्ट आरम्भ होते हैं

समस्या किसी को भी अपना मानने से ही आरम्भ हो जाती है, क्योंकि श्री कृष्ण के अलावा दुनिया में कोई अपना हो नहीं सकता

श्रीमद्भगवद्गीता में श्री कृष्ण ममता का त्याग करने को ही सुख और आनंद के लिए आवश्यक बताते हैं

!!!Life Provide Us Beautiful People and Beautiful People Provide Us Beautiful Life!!!

आत्मरक्षा में धर्मयुद्ध करना मनुष्य का परम धर्म है

बुद्धा पार्क के विकास को लेकर नगर आयुक्त से मिला भारतीय जाटव समाज का प्रतिनिधिमंडल

मुख्यमंत्री से हुई पूर्व चर्चा का दिया हवाला, नगर आयुक्त ने शीघ्र कार्यवाही का दिया आश्वासन

आगरा, संजय साग़र सिंह। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र सिंह और प्रदेश अध्यक्ष नेत्रपाल सिंह ने सोमवार को नगर निगम आगरा स्थित कार्यालय में नगर आयुक्त अंकित खंडेलवाल से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान कालिंदी विहार रोड, शाहदरा स्थित बुद्धा पार्क के समग्र विकास को लेकर विस्तृत चर्चा की गई एवं एक ज्ञापन भी सौंपा गया।

वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह ने नगर आयुक्त को अवगत कराया कि 3 अगस्त को भारतीय जाटव समाज का एक प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाराजजी से लखनऊ में मुलाकात कर बुद्धा पार्क के विकास की मांग कर चुका है। मुख्यमंत्री जी ने प्रतिनिधिमंडल को सकारात्मक आश्वासन देते हुए कहा था कि आगरा के सर्वांगीण विकास के लिए बुद्धा पार्क को प्राथमिकता के आधार पर विकसित किया जाएगा और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश भी दिए जाएंगे।

उक्त प्रतिनिधिमंडल में उपेंद्र सिंह, नेत्रपाल सिंह, अनिल कुमार, लोकेश प्रधान और तेज कपूर शामिल थे। प्रतिनिधिमंडल द्वारा मुख्यमंत्री को सौंपे गए मांग पत्र पर अब प्रभावी कार्यवाही प्रारंभ हो चुकी है। इसी क्रम में मुख्यमंत्री कार्यालय द्वारा जारी आदेश की प्रति आज नगर आयुक्त को भी सौंपी गई।

नगर आयुक्त अंकित खंडेलवाल ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त करते हुए बताया कि बुद्धा पार्क के विकास हेतु कार्य योजना तैयार की जा चुकी है। शीघ्र ही एक तकनीकी प्रतिनिधिमंडल स्थल का भ्रमण करेगा। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि वह स्वयं पूर्व में बुद्धा पार्क का निरीक्षण कर चुके हैं और परियोजना को शीघ्र क्रियान्वयन में लाया जाएगा।

नामकरण से जुड़ी अफवाहों पर स्पष्ट करते हुए नगर आयुक्त ने भरोसा दिलाया कि पार्क का नाम ₹बुद्धा पार्क₹ ही रहेगा और इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि यह पार्क लगभग 30 बीघा क्षेत्रफल में फैला हुआ है, और इसके साथ-साथ आस-पास के समूचे क्षेत्र को भी समुचित रूप से विकसित किया जाएगा।

भारतीय जाटव समाज की इस पहल को स्थानीय नागरिकों एवं सामाजिक संगठनों ने सराहा है और आशा व्यक्त की है कि बुद्धा पार्क शीघ्र ही एक आकर्षक और सर्वसुविधायुक्त सार्वजनिक स्थल के रूप में विकसित होगा।

अश्वगंधारिष्ट के लाभ

1.अवसाद और चिंता में

अश्वगंधारिष्ट एक बेहद प्रभावशाली और दमदार आयुर्वेदिक औषधि है। कई महत्वपूर्ण समस्याओं के निदान के लिए इसका सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया जाता है।अवसाद और चिंता के मरीजों के इलाज में भी ये सहायता करता है।

2.याददाश्त सुधारने में

अश्वगंधारिष्ट में मिश्रित तमाम जड़ी-बूटियों का संयुक्त प्रभाव इतना ज्यादा होता है कि इससे हमारी याददाश्त में भी आशाजनक सुधार आता है। यदि आप इसका नियमति इस्तेमाल करें तो प्रभावी रूप से ये आपके मस्तिष्क की क्षमता को भी सुधारेगा।

3.नसों को शांत करने में

इसकी मदद से आप अपने शरीर के नसों को भी आराम दे सकते हैं। विशेषज्ञ बताते हैं कि इसके इस्तेमाल से हमारे शरीर की नसें शांत होती हैं।इसके नियमति सेवन से आपको कई स्वास्थ्यवर्धक फायदे मिलते हैं।

4.पाचन तंत्र की मजबूती के लिए

हमारे शरीर के पाचनतंत्र का बेहतर सेहत कई बिमारियों के संभावना को खत्म कर सकता है।जब आप अश्वगंधारिष्ट का सेवन करते हैं तो आपके पाचन तंत्र को मजबूती मिलती है। मजबूत पाचनतंत्र आपके लिए स्वास्थ्य का द्योतक साबित होता है।

5.स्वास्थ्य सुधार में मदद

अश्वगंधारिष्ट में पाए जाने वाले तमाम गुणों के आधार पर आप ये कह सकत हैं कि इसका सेवन आपको कई स्वास्थ्य लाभ देकर आपके स्वास्थ्य को सुधारने में मदद करता है। यानी ये कहा जा सकता है कि ये आपके समग्र स्वास्थ्य के सुधार में मदद करता है।

जलझूलनी एकादशी आज

भाद्रपद माह (भादों) की शुक्लपक्ष की एकादशी तिथि को परिवर्तिनी एकादशी के नाम से जाना जाता हैं। इस एकादशी को और भी कई अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे, जलझूलनी एकादशी, वामन एकादशी, पद्मा एकादशी, जयंती एकादशी और डोल ग्यारस। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान विष्णु अपनी योग निद्रा के दौरान इस दिन अपनी करवट बदलते हैं। इस कारण से इसे परिवर्तिनी एकादशी कहा जाता हैं।

जलझूलनी एकादशी कब हैं ?

=====================

इस वर्ष जलझूलनी एकादशी व्रत 3 सितम्बर, 2025 बुधवार के दिन किया जायेगा।

जलझूलनी एकादशी का महत्व

=======================

हिंदु धर्म शास्त्रों के अनुसार जलझूलनी एकादशी का व्रत बहुत ही उत्तम व्रतों में माना जाता हैं। ऐसा कहा जाता है कि इस दिन का व्रत करने से जातक को वाजपेय यज्ञ के बराबर पुण्यफल प्राप्त होता हैं। जलझूलनी एकादशी का व्रत करने से मनुष्य के जीवन के सभी संकट और कष्टों का नाश होता है, समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ती है, धन-धान्य की कोई कमी नही होती और जीवन के सभी सुखों का आनंद लेकर अंत में मोक्ष को प्राप्त होता हैं।

इस एकादशी का एक नाम पद्मा एकादशी भी हैं। पौराणिक कथानुसार इस दिन देवताओं ने स्वर्ग पर अपना पुनः अधिकार प्राप्त करने के लिये माँ लक्ष्मी की आराधना की थी। इसलिये इस दिन माँ लक्ष्मी की विशेष पूजा करने से माँ लक्ष्मी प्रसन्न होती है और साधक को मनोवांछित फल प्रदान करती हैं। साथ ही साधक को उनकी कृपा से अत्युल्य वैभव की प्राप्ति होती हैं। इस एकादशी पर भगवान विष्णु के वामन अवतार की पूजा करने का विधान हैं। इस दिन भगवान के वामन अवतार की पूजा करने से जातक के सभी पापों का नाश हो जाता हैं, और उसको वैकुण्ठ की प्राप्ति होती हैं।

धर्मशास्त्रों के अनुसार जलझूलनी एकादशी के ही दिन भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण का सूरज पूजा (जलवा पूजन) गया था। इस प्रकार उनके जन्म के बाद यह उनका पहला धार्मिक संस्कार था। यह भी कहा जाता है कि इस एकादशी का व्रत करने से ही जन्माष्टमी का व्रत पूर्ण होता हैं। जो भी जन्माष्टमी का व्रत करता है, उसे जलझूलनी एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिये। तभी उसका जन्माष्टमी का व्रत पूर्ण होता हैं। इस दिन श्री कृष्ण की विशेष पूजा किये जाने का भी विधान हैं।

इस एकादशी का एक नाम ड़ोल ग्यारस भी हैं। राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि कुछ राज्यों में इस दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी का बहुत सुंदर श्रृंगार किया जाता है और सुंदर, सजे-धजे ड़ोले में बिठाकर उनकी सवारी निकाली जाती हैं। इसीलिये इसे लोग ड़ोल ग्यारस के नाम से भी जानते हैं।

हिंदु मान्यता के अनुसार इस एकादशी का व्रत विधि-विधान और पूर्ण श्रद्धा-भक्ति से करने वाले मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।

एक कथा के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण ने इस एकादशी के व्रत के महात्म्य के विषय में धर्मराज युधिष्ठिर को बताते हुये कहा था कि जो भक्त इस एकादशी का व्रत करता है और पूजन में भगवान विष्णु को कमल का पुष्प अर्पित करता हैं, उसे अंत समय में प्रभु की प्राप्ति होती हैं। उसे उनका सानिध्य प्राप्त होता हैं। इस एकादशी का व्रत और पूजन करने से भक्त को त्रिदेव एवं त्रिलोक पूजन के समान पुण्य प्राप्त होता हैं।

जलझूलनी एकादशी व्रत एवं पूजन विधि

==========================

* अन्य एकादशियों की ही भांति जलझूलनी एकादशी का व्रत भी एक दिन पूर्व यानि दशमी तिथि की रात से ही आरम्भ हो जाता हैं। जातक को दशमी की रात्रि से ही ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये। और सात्विक जीवन जीना चाहियें।

* एकादशी के दिन प्रातःकाल जल्दी उठकर स्नानादि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

* फिर पूजास्थान पर एक चौकी बिछाकर उसपर भगवान विष्णु के वामन अवतार की प्रतिमा स्थापित करें। एक कलश में जल भरकर स्थापित करें। पूजा की थाली लगायें। उसमें रोली, मोली, अक्षत, फल, फूलमाला, कमल के फूल, दूध, दही, घी, शहद, इत्र, चंदन, तुलसी, जनेऊ, आदि रखें।

* भगवान की प्रतिमा के समक्ष बैठकर हाथ में जल लेकर जलझूलनी एकादशी के व्रत का संकल्प करें।

* भगवान विष्णु के वामन स्वरूप का पंचामृत से अभिषेक करें।

* धूप-दीप जलाकर भगवान विष्णु के वामन स्वरूप की पूरे विधि-विधान के साथ पूजन करें। रोली, चावल से तिलक करें, मोली चढायें, जनेऊ चढ़ाये, वस्त्र अर्पित करें, फूलमाला चढ़ाये, कमल के फूल अर्पित करें। अगर आप पूजन नही कर सकते है, तो आप किसी योग्य पण्ड़ति के द्वारा भी पूजा करवा सकते हैं।

* भगवान को मिठाई का भोग लगायें।

* फिर भगवान विष्णु के वामन अवतार की कहानी कहें या सुने। और फिर विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।

* इस दिन माँ लक्ष्मी की विशेष पूजन का भी विधान हैं। विधि-विधान से माँ लक्ष्मी की षोड़शोपचार पूजन करें और भोग लगायें। फिर लक्ष्मी अष्ट्टोत्तर स्त्रोत्र का पाठ करें। ऐसा करने से माँ लक्ष्मी शीघ्र प्रसन्न होती हैं और अपने भक्त को अकल्पनीय धन-वैभव प्रदान करती हैं।

* इस एकादशी के व्रत में साधक को भोजन में अन्न ग्रहण नही करना चाहिये। सिर्फ दिन में एक बार फलाहार ही करना चाहिये।

* भगवान के पंचामृत के छींटे अपने एवं अपने परिवार के सदस्यों पर लगाकर, सब के साथ पंचामृत (चरणामृत) को ग्रहण करें।

* व्रत की रात्री को जागरण का आयोजन करें। भजन-कीर्तन में समय बितायें। सोते समय भी भगवान वामन की स्थापित की हुई मूर्ति के पास ही निन्द्रा लें।

* तत्पश्चात अगले दिन यानी द्वादशी को ब्राह्मणों को भोजन करायें और दक्षिणा देकर उन्हे संतुष्ट करें।

जलझूलनी एकादशी पर क्या दान करना चाहिये ?

==========================

जलझूलनी एकादशी पर दान-पुण्य का बहुत महत्व हैं। इस दिन इन वस्तुओं का दान करने से जातक को महान पुण्य प्राप्त होता हैं।

* गरीब और जरूरत्मंद लोगों को, वेद-पाठी ब्राह्मणों को भोजन कराये और दक्षिणा दें।

* लोगों भगवान की भक्ति की ओर अग्रसर करें। इसके लिये भगवान विष्णु के व्रत, एकादशी व्रत, उनके मंत्रो और स्त्रोत्रों की पुस्तकें बाँटे।

* बुजुर्गों और लाचारों की सेवा करें।

* अनाथालय आदि में भोजन, वस्त्र, आदि आवश्यक वस्तुओं का दान करें।

जलझूलनी एकादशी की कहानी

======================

तब भगवान ने विराट रूप धारण करके एक पग में पूरी पृथ्वी, आकाश और समस्त दिशाओं को ढक लिया। और दूसरे पग में स्वर्गादि सारे लोकों को ढक लिया। उसके बाद राजा बलि से पूछा कि अब तीसरा पग कहा धरूँ। तब राजा बलि ने उनसे कहा कि आप तीसरा पग मेरे शीष पर रखों। उसकी संकल्पबद्धता और भक्ति देखकर भगवान ने उससे वर माँगने को कहा। तब बलि ने भगवान से हमेशा अपने सामने रहने का वरदान माँगा। भगवान ने प्रसन्न होकर उसे पाताल का राजा बना दिया और स्वयं उसके साथ पाताल लोक में चले गये।

इस प्रकार राजा बलि ने अपना सर्वस्व भगवान विष्णु के चरणों में अर्पित कर दिया। और भगवान विष्णु ने वो सब देवताओं को वापस दे दिया। इस प्रकार देवताओं को उनके अधिकार और उनका राज्य पुनः प्राप्त हुआ।

पौराणिक कथानुसार त्रेतायुग में एक दानवों का राजा था बलि। राजा बलि बहुत ही शक्तिशाली था। उसने अपनी शक्तियों के बल पर तीनों लोकों को अपने अधिकार में कर लिया था। उसने देवताओं को भी स्वर्ग से निष्कासित कर दिया था। तब सभी देवता भगवान विष्णु की शरण में गयें। और उनसे सहायता माँगी। तब भगवान विष्णु ने देवताओं की सहायता के लिये वामन रूप में अवतार लिया।

दैत्यगुरू शुक्राचार्य के कहने पर राजा बलि ने एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया। वहाँ आने वाले हर याचक को उसने दान देकर संतुष्ट किया। तब वामन रूप धारी भगवान विष्णु उसके पास गये और उससे तीन पग भूमि माँगी। दैत्यगुरू शुक्राचार्य ने राजा बलि को समझाया कि यह कोई साधारण ब्राह्मण नही है, बल्कि भगवान विष्णु स्वयं हैं और वो उनको तीन पग भूमि देने का संकल्प ना करें। परंतु राजा बलि नही माना और उसने वामन रूप धारी भगवान को तीन पग भूमि देने का संकल्प कर लिया।

प्रेम पच्चीसा(भाग 19)

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़

सेवानिवृत जेल अधीक्षक बिलासपुर, छत्तीसगढ़

रोहन और माया जो साहित्य और पत्रकारिता की दुनिया में अपनी कलम से सामाजिक और आर्थिक बदलाव लाने की कोशिश कर रहें है। लेकिन उसकी जिंदगी सिर्फ शब्दों तक सीमित नहीं है वह ग्रामीण भारत की गहराई में उतरकर शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क और नि:शुल्क कानूनी सहायता जैसे क्षेत्रों में क्रांति लाने का का प्रयास करते हैं। यह सब "आदर्श समाज" नामक एक गैर-सरकारी संस्था (एनजीओ) के तत्वावधान में होता है, जहां माया अपने साथियों मालती जी, सुधा जी और रोहन के साथ मिलकर काम करती है। जिसके सोचे सभी सपने हकीकत मवं बदलते हैं और संघर्ष सफलता की सीढ़ी बन जाता है।

जहां रोहन साहित्यकार है उधर उनकी जीवन संगिनी माया एक युवा पत्रकार और लेखिका थी, जो भोपाल की चकाचौंध में रहती थी। उसकी कलम में ताकत थी—वह महिलाओं के अधिकारों, ग्रामीण पिछड़ेपन और सामाजिक असमानता पर लेख लिखती थी। लेकिन एक दिन, एक ग्रामीण यात्रा ने उसकी जिंदगी बदल दी। वह मध्य प्रदेश के एक दूरदराज गांव में गई, जहां बच्चे स्कूल के बजाय खेतों में काम करते थे, महिलाएं बीमारियों से जूझती थीं, सड़कें कच्ची थीं और कानूनी झगड़ों में लोग बर्बाद हो जाते थे। गरीब लोग बीड़ी बनाकर, खेत - खलिहान में कम करके जीविका चलाते हैं। माया ने सोचा, "केवल लिखने से क्या होगा? बदलाव तो जमीन पर उतारना पड़ेगा।" वापस लौटकर, माया ने "आदर्श समाज" नामक एनजीओ के माध्यम से ग्रामीण विकास पर केंद्रित कार्य प्रारंभ किए। संस्था मे मालती जी एक सेवानिवृत शिक्षिका, जो 65 वर्ष की उम्र में भी शिक्षा के प्रति उत्साही थीं। उन्होंने गांवों में स्कूल चलाने का अनुभव था।

सुधा जी समाज सेवी एक डॉक्टर, जो स्वास्थ्य सेवाओं में विशेषज्ञ हैं। वह ग्रामीण महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याओं पर काम कर चुकी थीं। रोहन: एक युवा साहित्यकार और सामाजिक कार्यकर्ता, जो बुनियादी ढांचे जैसे सड़कों और पानी की व्यवस्था पर फोकस करता था। वह माया का पति ही नहीं बल्कि कुशल मार्ग-दर्शक भी है। चारों मिलकर एक सकारात्मक टीम बने, जहां माया की पत्रकारिता और साहित्यिक लेखन ने उनके काम को आवाज दी, जबकि बाकी सदस्यों ने व्यावहारिक क्रियान्वयन किया। एनजीओ का मुख्यालय एक छोटे से शहर में था लेकिन उनका कार्यक्षेत्र ग्रामीण अंचलों तक फैला।

फंडिंग शुरू में चुनौती थी वे सरकारी ग्रांट, दान और माया के लेखों से कमाए पैसे से चलता है। साहित्य और पत्रकारिता: बदलाव की पहली सीढ़ी माया जानती थी कि ग्रामीण बदलाव के लिए जागरूकता जरूरी है। इसलिए, उन्होंने साहित्य लेखन और पत्रकारिता को अपने अभियान का आधार बनाया।

माया ने एक किताब लिखी, "गांव की आवाज", जिसमें ग्रामीण जीवन की सच्ची कहानियां थीं—एक लड़की जो पढ़ना चाहती है लेकिन स्कूल नहीं है, एक महिला जो बीमारी से मर जाती है क्योंकि अस्पताल दूर है। इस किताब को उन्होंने पत्रिकाओं में सीरियलाइज किया और राष्ट्रीय अखबारों में लेख प्रकाशित किए।

सुधा जी और मालती जी के साथ मिलकर, वे "ग्रामीण जागरण" नामक एक मासिक पत्रिका शुरू की, जिसमें स्वास्थ्य टिप्स, शिक्षा के महत्व और कानूनी अधिकारों पर लेख होते है। रोहन इसमें सड़क और बुनियादी सुविधाओं पर तकनीकी लेख लिखता है पत्रकारिता के माध्यम से, माया ने टीवी इंटरव्यू और सोशल मीडिया पर गांवों की समस्याएं उजागर कीं। इससे एनजीओ को दान मिला और सरकारी ध्यान आकृष्ट हुआ। लेकिन यह सिर्फ शुरुआत थी; अब वे जमीन पर उतरने वाले थे। ग्रामीण अंचलों में शिक्षा सबसे बड़ी समस्या थी।

कई गांवों में स्कूल थे ही नहीं, या थे तो शिक्षक नहीं आते। माया की टीम ने जिलाधीश महोदय से मिलकर इसे प्राथमिकता दी। मालती जी ने नेतृत्व संभाला। उन्होंने "शिक्षा अभियान" शुरू किया, जहां गांवों में मोबाइल स्कूल बसें चलाई गईं। ये बसें किताबों, स्लेट और शिक्षकों से लैस होती थीं। शुरू में 5 गांवों से शुरू हुआ, जो बढ़कर २० हो गया। माया ने अपनी लेखनी से फंड जुटाए—एक लेख "बच्चों का खोया बचपन" ने इतना प्रभाव डाला कि एक कॉरपोरेट कंपनी ने 50 लाख रुपये दान दिए। रोहन ने स्कूल भवनों के लिए सस्ते डिजाइन बनाए, जहां स्थानीय लोग खुद निर्माण में मदद करते हैं।

सुधा जी ने शिक्षा में स्वास्थ्य को जोड़ा—स्कूलों में पोषण कार्यक्रम चलाए, जहां बच्चों को मुफ्त भोजन और स्वास्थ्य जांच मिलती। एक साल में, 500 से ज्यादा बच्चे स्कूल लौटे। माया ने इन सफलताओं पर डॉक्यूमेंट्री बनाई, जो यूट्यूब पर वायरल हुई। लेकिन चुनौतियां थीं—कुछ गांवों में रुढ़िवादी सोच, जहां लड़कियों को पढ़ाना पाप माना जाता। माया ने साहित्यिक नाटक लिखे, जिन्हें गांवों में मंचित किया गया। इससे धीरे-धीरे बदलाव आया।

स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार: जीवन की स्वास्थ्य ग्रामीणों की दूसरी बड़ी समस्या थी। अस्पताल दूर, डॉक्टर महंगे और जागरुकता कम। सुधा जी ने यहां कमान संभाली। उन्होंने "स्वास्थ्य शिविर" आयोजित किए हर महीने 10 गांवों में मुफ्त चेकअप, दवाएं और टीकाकरण। माया ने पत्रकारिता से इन शिविरों का प्रचार किया, जिससे हजारों लोग आए। रोहन ने मोबाइल क्लीनिक वैन डिजाइन की, जो सड़कों की कमी के बावजूद गांवों तक पहुंचती। मालती जी ने स्वास्थ्य शिक्षा दी—महिलाओं को मातृत्व स्वास्थ्य पर क्लासेस।

एक बड़ी सफलता तब मिली जब कोरोना महामारी के दौरान टीम ने गांवों में मास्क और सैनिटाइजर बांटे। माया ने इस पर एक किताब "ग्रामीण स्वास्थ्य की लड़ाई" लिखी, जो बेस्टसेलर बनी। इससे एनजीओ को अंतरराष्ट्रीय फंडिंग मिली। नतीजा: मृत्यु दर घटी, और महिलाओं में स्वास्थ्य जागरुकता बढ़ी। लेकिन एक घटना यादगार है—एक गांव में एक महिला को कैंसर था; टीम ने उसे शहर के अस्पताल पहुंचाया और इलाज करवाया। यह कहानी माया के लेख में अमर हो गई। ग्रामीण अंचलों में सड़कें न होना सब कुछ रोक देता था स्कूल जाना मुश्किल, अस्पताल पहुंचना असंभव।

रोहन ने इस पर फोकस किया। उन्होंने सरकारी योजनाओं जैसे पीएमजीएसवाई से जुड़कर कच्ची सड़कों को पक्का करवाया। टीम ने स्थानीय लोगों को रोजगार दिया—सड़क निर्माण में मजदूरी। माया ने पत्रकारिता से दबाव बनाया—एक लेख "सड़कों का अभाव: ग्रामीण भारत की कैद" ने विधायक को मजबूर किया कि वे फंड जारी करें। मालती जी और सुधा जी ने सड़कों के महत्व पर गांवों में सेमिनार किए रोहन ने सस्ती तकनीकें अपनाईं—स्थानीय सामग्री से सड़कें बनाईं, जो बरसात में भी टिकतीं। एक साल में 50 किलोमीटर सड़कें बनीं, जिससे व्यापार बढ़ा और गांव शहर से जुड़े। रोहन और माय की टीम अनुभव कर रही है कि भ्रष्टाचार सिस्टम को खाए जा रहा है। एक ठेकेदार ने घूस मांगी, लेकिन माया ने इसे एक्सपोज किया, जिससे जांच हुई और सड़कें समय पर बनीं। माया के इस काम से आसपास के सभी ग्रामीण बहुत खुश हैं।

पिछड़े आँचल में में लोग कानून और निशुल्क सहायता के बारे में नहीं जान रहे हैं अत: नि:शुल्क कानूनी सहायता और न्याय की पहुंच ग्रामीणों तक पहुचे इस के लिए जिला विधि अधिकारी से भेंट की। कुछ दिन में ही मुख्य न्यायिक न्यायाधीश की टीम ने "विधिक सहायता केंद्र" शुरु किए।

माया, जो कानून की छात्रा रह चुकी थी, ने वकीलों की टीम बनाई। हर हफ्ते गांवों में कैंप, जहां भूमि विवाद, घरेलू हिंसा और श्रम अधिकारों पर मुफ्त सलाह।

सुधा जी ने स्वास्थ्य से जुड़े कानूनी मुद्दे जैसे मेडिकल नेग्लिजेंस पर फोकस किया, जबकि मालती जी ने शिक्षा अधिकारों पर। रोहन ने सड़क और संपत्ति विवाद सुलझाए। माया ने साहित्य से मदद ली—एक कहानी संग्रह "न्याय की पुकार" लिखा, जिसमें वास्तविक केस स्टडीज थीं। इससे लोग जागरूक हुए। एक प्रमुख घटना: एक किसान की जमीन पर कब्जा हो रहा था; टीम ने कोर्ट में केस लड़ा और जीत हासिल की। इससे सैकड़ों लोग आगे आए।

पांच सालों में, "आदर्श समाज" ने 100 से ज्यादा गांवों को छुआ। शिक्षा दर 70% बढ़ी, स्वास्थ्य सेवाएं पहुंची, सड़कें बनीं और हजारों को कानूनी मदद मिली। माया की कलम ने इसे अमर बनाया—उसकी किताबें स्कूलों में पढ़ाई जातीं। लेकिन सफलता आसान नहीं थी; धन की कमी, विरोध और थकान आईं, लेकिन टीम का बंधन मजबूत रहा। आज माया कहती है, "साहित्य और पत्रकारिता मेरी ताकत है, लेकिन ग्रामीण बदलाव मेरा मिशन।" यह कहानी सिखाती है कि एक एनजीओ, कुछ समर्पित लोग और कलम की ताकत से समाज बदल सकता है।

(भाग २०)

शिव के ग्यारहवें अवतार ...!

'भादों की दसवीं' को लगता हैं यह मेला,
ये हजारों 'श्रद्धालु' करेंगे दर्शनीय खेला।
बाबा 'वीर तेजाजी महाराज' का दरबार,
सभी भक्तों के हैं सरकार होते बलिहार।

राजस्थान के नागौर जिले खरनाल जन्मे,
तेजाजी बाबा के लिए श्रद्धा सबके मन्मे।
शिव के ग्यारहवें अवतार वे हैं माने जाते,
एक लोक देवता के रूप में पूजे हैं जाते।

अपनी पत्नी पेमल से रिश्तों को निभाने,
वहीं ₹लाछा गुजरी की गायों₹ को बचाने।
एक 'साँप' के काटने के बाद दिया वचन,
अपनी जान की परवाह न की हुए मगन।

संजय एम तराणेकर

इस अस्तित्व में मानस की चार श्रेणी हैं जिनकी देखने/समझने की दृष्टि उसी श्रेणी के अनुसार होती है।

पहली श्रेणी, पशुओं/ पक्षियों/ कीडों/ मकोडों/ वृक्ष/ लता और मूढ़ों के पास कोई दृष्टि नहीं होती। उनको बाहरी नियमों/मालिकों/ज्ञाताओं के इशारे पर ही जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

दूसरी श्रेणी, अधार्मिक/अज्ञानी/बेहोश/हिंसक मनुष्यों के पास केवल एक दृष्टि, यानि बेहोशी की दृष्टि होती है। उनके समक्ष/सामने से गुजरता हुआ 'ज्ञान' भी दिखाई नहीं दे पाता, क्योंकि वह दिन में भी गहरी निद्रा-अवस्था रूपी समस्त क्रिया-कलाप करतें हैं।

तीसरी श्रेणी, धार्मिक/विज्ञानियों के पास दो दृष्टियाँ होती हैं। पहली आस्थागत और दूसरी अनुभवगत। वह जानने लगता है कि जो दिखता है, वह उसके बैकग्राउंड पर निर्भर करता है। सितारे चमकते दिखाई तब देते हैं, यदि पीछे आकाश काला/अंधियारा हो। सुख-दुख भी एक-दूसरे की प्रतिच्छाया में ही अनुभव होते हैं।

चौथी श्रेणी, ज्ञानी के पास तीन दृष्टियाँ होती हैं। एक, जो कुछ बाहर आकार का संसार में दिखता है, दूसरा, जो भीतर संवेदना की स्थितियां गतिमान हो रहीं हैं और तीसरा, जिसमें भीतर-बाहर जो भी दिख रहा है वह सभी, उस एक ही अस्तित्व /परमात्म में उठती-गिरती तरंगों के समान निरंतर बन-बदल रहा है, सबकुछ उसी में तरंगायित हो रहा है। ध्यान रहे कि हम सब अपनी-अपनी स्थिति को जानने और उससे जागने के लिए ही निरंतर प्रयासरत हैं।

दिल्ली–एनसीआर में प्रदूषण कम करने के लिए केंद्र सरकार की दो लाख ट्रक व तकरीबन 20,000 बसों को यूरो 6 अथवा क्लीन फ्यूल पर लाने की बड़ी योजना

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली–एनसीआर की हवा को साफ़ करने के लिए केंद्र सरकार लगभग 2 लाख पुराने डीज़ल ट्रकों (जो BS-6 मानक के अनुरूप नहीं हैं) को धीरे-धीरे हटाने की तैयारी कर रही है। इसके साथ ही अगले 5 साल में करीब 20 हज़ार डीज़ल बसों (सरकारी और प्राइवेट दोनों) को सीएनजी (CNG) बसों में बदलने की योजना बनाई जा रही है।

सरकार इस योजना को लागू करने के लिए ट्रक मालिकों को वित्तीय मदद और ब्याज़ में छूट (interest subsidy) देने पर विचार कर रही है, ताकि वे अपने पुराने ट्रक बेचकर BS-6 वाले नए ट्रक खरीद सकें। यह योजना बड़ी और जटिल है, इसलिए सरकार अभी अलग-अलग विकल्पों पर विचार कर रही है।

बसों को CNG में बदलने पर लगभग 2500 करोड़ रुपये खर्च आएंगे। यह काम जल्दी शुरू किया जा सकता है क्योंकि बसों के कन्वर्ज़न की लागत पहले से ही तय है। इससे यह सुनिश्चित होगा कि एनसीआर में चलने वाली सारी बसें साफ़ ईंधन (क्लीन फ्यूल) पर चलें।

पूरी योजना को लागू करने में 5 साल लगेंगे, उसके बाद कड़ाई से नियम लागू किए जाएंगे।

तीसरा बड़ा कदम यह होगा कि बाहर से एनसीआर में प्रवेश करने वाले डीज़ल ट्रक और बसों पर अतिरिक्त शुल्क / पेनाल्टी लगाई जाएगी।

सरकार का मानना है कि इन तीन उपायों (पुराने ट्रक हटाना, बसों को CNG में बदलना, और बाहर से आने वाले डीज़ल वाहनों पर शुल्क लगाना) से दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण काफी हद तक कम होगा।

सरकार की योजना है कि आने वाले समय में ज्यादा से ज्यादा इलेक्ट्रिक गाड़ियाँ, बसें और ट्रक सड़कों पर उतरें।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार:

दिल्ली-एनसीआर में कुल 3.3 करोड़ वाहन पंजीकृत हैं, जिनमें से 2.2 करोड़ की रजिस्ट्रेशन और फिटनेस सर्टिफिकेट वैध हैं।

इनमें से मध्यम और भारी व्यावसायिक वाहन (Medium & Heavy Commercial Vehicles) लगभग 40% प्रदूषण के जिम्मेदार हैं।

इसी वजह से CAQM (Commission for Air Quality Management) ने आदेश जारी किया है कि दिल्ली में BS-6, CNG, LNG या इलेक्ट्रिक मानकों के अनुरूप न होने वाले ट्रांसपोर्ट और कमर्शियल वाहन बिल्कुल भी नहीं घुस पाएंगे (सिवाय उन वाहनों के जो दिल्ली में पंजीकृत है).

Dr Harish Sabharwal
National President AIMTC. &
Gen secy DCBA

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा–डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

रक्षा द सेवियर की ओर से प्रस्तुत
गरबा महोत्सव में विशेष अपील
हमारी रक्षा द सेवियर की ओर से
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है–
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें :
● पुराने कपड़े
● पुराने कंबल
● पुराने जूते-चप्पल
● बच्चों के लिए बैग
● किताबें
आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

स्थान :
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
● दशहरे के दूसरे दिन
● दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
● स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड

स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

संपर्क सूत्र :
इंदु राजपूत – 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

खामोशी की आवाज़, जुदाई और दर्द की स्याही...

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

नई दिल्ली। खामोशी वह आईना है जिसमें दिल के टूटे हुए टुकड़े साफ़ नज़र आते हैं। जब कोई अपना हमेशा के लिए जुदा हो जाए, तो ज़िंदगी का हर रंग फीका पड़ जाता है और चारों ओर सन्नाटा बस जाता है। यह खामोशी शब्दों की कमी नहीं होती, बल्कि यह उन जज़्बातों की स्याही है जिन्हें बयां करने की हिम्मत हमारे पास नहीं होती है।

इंसान बोलना चाहता है, पुकारना चाहता है, पर होंठ जमे रहते हैं और आवाज़ दिल की दरारों में कैद हो जाती है। जुदाई का दर्द सिर्फ आँखों से गिरते आँसुओं का नाम नहीं, यह वह सूनापन है जो हर सांस के साथ भीतर उतरता चला जाता है। पहले जिन लम्हों में मोहब्बत की गूंज थी, वहाँ अब वीरानी का डेरा है।

खामोशी अक्सर हमें लिखने पर मजबूर करती है। यह बिखरे हुए अल्फ़ाज़ में वही तड़प ढूंढ लेती है जो दिल चीखकर कहना चाहता है। शायरी और कविता इस दर्द की वह भाषा बन जाते हैं जिसे दुनिया समझ सकती है। टूटा हुआ दिल जब काग़ज़ पर उतरता है, तो उसकी धड़कनें भी शब्दों में सुनाई देने लगती हैं।

जुदाई और खामोशी एक-दूसरे का सहारा हैं। जुदाई दिल को तोड़ती है और खामोशी उस खालीपन को अपने भीतर समेट लेती है। यही दोनों मिलकर हमें यह सिखाते हैं कि ज़िंदगी सिर्फ खुशियों का नाम नहीं, बल्कि दर्द और उम्मीद के संगम से बनती है।

ग़ज़ल,

पलकों पे ख़्वाब रख के संवरती रही नज़र।

चांदनी रातों में,अक्सर मैं जागा किया बहुत।
दिल ने तुम्हारी याद का सामान किया बहुत।

पलकों पे ख़्वाब रख के संवरती रही नज़र।
दिल ने मगर विसाल का अरमान किया बहुत।

इम्तेहान ये कैसा था मुहब्बत की राह में यारा।
यादों ने तेरी दिल को मेरे तड़पा दिया बहुत।

हर शाम ढल के दर्द को और बढ़ाती ही रही।
यादों ने दिल के ज़ख़्म को ज़िन्दाँ किया बहुत।

मोहब्बतें के वादे अधूरे ही रह गए मुश्ताक।
तक़दीर ने नसीब से भी झगड़ा किया बहुत।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह.

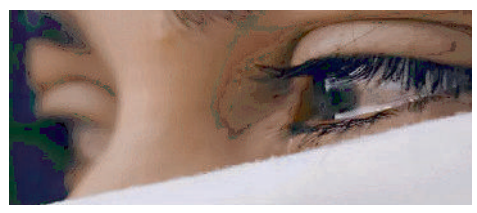

FREE HEALTH CHECK-UP CAMP
Organised by :
St. John Ambulance Brigade Delhi
on 07th Sep. 2025 (Sunday) 09:00am to 02:00pm

ST. JOHN AMBULANCE (INDIA) BRIGADE WING, DELHI

Courtesy :-
Gurudwara Singh Sabha Giri Nagar &
Guru Amardas Sewa Trust
Govind Puri, Kalkaji, New Delhi

Contact No : Guru Amardas Sewa Trust
9350791313, 9268581313

जन संचार कार्य मंत्रालय ने आदि वाणी का बीटा संस्करण भारत का पहला मोटो-संचालन डिलैन्कॅरेशन लॉन्च किया

परिवहन विशेष न्यूज

नईदिल्ली। समावेशी आदिवासी सशक्तिकरण और भाषाई संरक्षण की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल में, जनजातीय मामलों के मंत्रालय ने आज आदिवासी भाषाओं के लिए भारत के पहले एआई-संचालित अनुवाद मंच आदि वाणी का बीटा संस्करण लॉन्च किया। जनजातीय गौरव वर्ष (जेजेजीवी) के समारोह के हिस्से के रूप में लॉन्च कार्यक्रम नई दिल्ली के डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर के समरस्ता हॉल में आयोजित किया गया था।

इस कार्यक्रम की शोभा माननीय जनजातीय मामलों के राज्य मंत्री श्री दुर्गादास उइके ने बढ़ाई, जिन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जनजातीय मामलों के मंत्रालय के सचिव श्री विभु नायर और आईआईटी दिल्ली के आईआईटी निदेशक प्रोफेसर रंगन बनर्जी और जनजातीय मामलों के मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री अनंत प्रकाश पांडे, जनजातीय मामलों के मंत्रालय की निदेशक सुश्री दीपाली मासिरकर, बीबीएमसी सेल, आईआईटी दिल्ली के प्रोफेसर विवेक कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर संदीप की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलन किया। कुमार, आईआईटी दिल्ली। इस शुभारंभ समारोह में सभी राज्य जनजातीय अनुसंधान संस्थान (टीआरआई) और जनजातीय भाषाओं के प्रमुख विशेषज्ञ शामिल हुए, जिससे इस पहल के पीछे की सहयोगात्मक भावना पर ज़ोर दिया गया।

इस अवसर पर बोलते हुए, श्री उइके ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भाषा सांस्कृतिक पहचान का आधार है और समुदायों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि आदि वाणी दूर-दराज़ के इलाकों में रहने वाले जनजातीय समुदायों के लिए संचार की कमियों को दूर करने, जनजातीय युवाओं को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने और आदि कर्मयोगी ढाँचे के तहत अंतिम छोर तक सेवाओं की आपूर्ति में मदद करेगी।

जनजातीय कार्य मंत्रालय के सचिव, श्री विभु नायर ने आदि वाणी को एक किफायती नवाचार बताया, जिसे व्यावसायिक प्लेटफार्मों की लागत के लगभग दसवें हिस्से पर विकसित किया गया है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि यह परियोजना अत्याधुनिक तकनीक को राज्य जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (टीआरआई) द्वारा एकत्रित प्रामाणिक भाषाई आंकड़ों के साथ एकीकृत करती है और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से निरंतर सुधार को बढ़ावा देने के लिए एक फीडबैक प्रणाली के साथ डिज़ाइन की गई है।

आईआईटी दिल्ली के निदेशक, प्रो. रंजन बनर्जी ने कहा कि आदि वाणी दर्शाती है कि कैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं को संरक्षित करने के लिए प्रभावी ढंग से किया जा सकता है और साथ ही लोगों के जीवन पर सार्थक प्रभाव डाला जा सकता है।

संयुक्त सचिव श्री अनंत प्रकाश पांडे ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भाषा के ह्रास से संस्कृति और विरासत का क्षरण होता है। उन्होंने आगे कहा कि आदि वाणी केंद्र सरकार, जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (टीआरआई) के माध्यम से राज्य सरकारों और प्रमुख तकनीकी संस्थानों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों का परिणाम है, जो इसे आदिवासी भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए एक कम लागत वाला, उच्च प्रभाव वाला समाधान बनाता है।

काले रंग की पृष्ठभूमि वाला लोगो (एआई-जनित सामग्री) गलत हो सकता है।

आदि वाणी के बारे में

आदि वाणी केवल एक एआई-संचालित अनुवाद उपकरण ही नहीं है, बल्कि समुदायों को जोड़ने और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने का एक मंच है। यह पहल लुप्तप्राय भाषाओं के डिजिटलीकरण में सहायता करेगी, मूल भाषाओं में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और शासन तक पहुँच में सुधार करेगी, आदिवासी उद्यमिता को सुगम बनाएगी और शोधकर्ताओं के लिए ज्ञान संसाधन के रूप में काम करेगी।

आदि वाणी को आईआईटी दिल्ली के नेतृत्व वाले एक राष्ट्रीय संघ द्वारा बिट्स पिलानी, आईआईआईटी हैदराबाद, आईआईआईटी नवा रायपुर और झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मेघालय के जनजातीय अनुसंधान संस्थानों के सहयोग से विकसित किया गया है। आदि वाणी - एआई टूल वेब पोर्टल (https://adivaani.tribal.gov.in) पर उपलब्ध है और ऐप का बीटा संस्करण जल्द ही प्ले स्टोर और आईओएस पर उपलब्ध होगा। बीटा लॉन्च चरण में, यह संताली (ओडिशा), भीली (मध्य प्रदेश), मुंडारी (झारखंड) और गोंडी (छत्तीसगढ़) को सपोर्ट करता है, जबकि कुई और गारो भाषाओं पर काम चल रहा है।

इस प्लेटफॉर्म का एक लाइव प्रदर्शन भी किया गया, जिसमें भीली और गोंडी में वास्तविक समय में अनुवाद दिखाया गया। सहयोगी टीआरआई के विशेषज्ञों ने अनुवादों का सत्यापन किया, जिसके बाद प्रतिभागियों और हितधारकों के साथ एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया।

प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:

हिंदी, अंग्रेजी और जनजातीय भाषाओं के बीच रीयल-टाइम टेक्स्ट और स्पीच अनुवाद

छात्रों और शुरुआती शिक्षार्थियों के लिए इंटरैक्टिव भाषा शिक्षण मॉड्यूल

लोककथाओं, मौखिक परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत का डिजिटलीकरण

जनजातीय भाषाओं में स्वास्थ्य संबंधी जानकारी और प्रधानमंत्री के भाषणों सहित उपशीर्षक युक्त सलाह और सरकारी संदेश

मूल भाषाओं में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और शासन तक समावेशी पहुँच

विकसित भारत 2047 की ओर

भारत की जनजातीय भाषाई विरासत का डिजिटलीकरण और संरक्षण करके, आदि वाणी डिजिटल इंडिया, एक भारत श्रेष्ठ भारत, प्रधानमंत्री जनमन, आदि कर्मयोगी अभियान और धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के विज़न के अनुरूप है। यह प्लेटफ़ॉर्म कम संसाधन वाली भाषा संरक्षण के लिए एक अग्रणी वैश्विक मॉडल स्थापित करता है और 2047 तक एक समावेशी, ज्ञान-संचालित विकसित भारत के निर्माण में 20 लाख से अधिक जनजातीय परिवर्तन नेताओं को सशक्त बनाने की उम्मीद है।

'प्रभावशाली डिज़ाइन, दीर्घकालीन मजबूती' के साथ उन्नत हार्ड वाटर सुरक्षा

मुख्य संवाददाता

एंटी-स्केल तकनीक एवं 3 किलोवाट रैपिड हीटिंग से सुसज्जित सोलारियम ब्लेज़ आधुनिक भारतीय घरों के लिए टिकाऊ और प्रभावी जल हीटिंग प्रदान करता है

आज जैसे-जैसे घरेलू उपकरण हमारी जीवनशैली का हिस्सा बनते जा रहे हैं, वास्तविक नवाचार अब ऐसे डिज़ाइनों में निहित है जो न केवल बेहतरीन प्रदर्शन करते है बल्कि बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी को भी बेहतर बनाते हैं।

भारत के भरोसेमंद कंज़्यूमर इलेक्ट्रिकल्स ब्रांड क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज़्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ने नया सोलारियम ब्लेज़ पेश किया है, जिसमें शानदार गोल्ड मेटैलिक फिनिश और हार्ड वाटर की चुनौतियों से निपटने के लिए मजबूत एंटी-स्केल तकनीक शामिल है।

स्लिम और कॉम्पैक्ट डिज़ाइन व और प्रीमियम लुक के साथ यह उत्पाद आधुनिक इंटीरियर्स में सहजता से फिट हो जाता है, जो 'प्रभावशाली डिज़ाइन व दीर्घकालीन मजबूती' का प्रतीक है –सौंदर्यपूर्ण आकर्षण और इंजीनियरिंग की मजबूती को जोड़ते हुए, यह आधुनिक भारतीय घरों की बदलती जरूरतों को पूरा करता है, विशेषकर मानसून के दौरान जब पानी की गुणवत्ता अस्थिर हो सके

इससे समय के साथ हीटिंग क्षमता कम होती है, ऊर्जा की खपत बढ़ती है और रखरखाव की आवश्यकता अधिक होती है।

इस बढ़ती चुनौती को समझते हुए, क्रॉम्पटन ने हीटिंग एलिमेंट पर विशेष रूप से डिज़ाइन की गई एंटी-स्केल कोटिंग के साथ सोलारियम ब्लेज़ विकसित किया है, जो इसे 2000 पीपीएम के टीडीएस स्तर वाले हार्ड वाटर में उपयोग के लिए उपयुक्त बनाता है।

यह समाधान न केवल हीटिंग प्रदर्शन में सुधार करता है, बल्कि स्केल जमाव को भी कम करता है, हीटिंग एलिमेंट के जीवनकाल को बढ़ाता है और बार-बार सर्विसिंग की आवश्यकता के बिना निरंतर उपयोग सुनिश्चित करता है। इसके अलावा इसका आकर्षक डिज़ाइन आधुनिक घरों में सहज रूप से फिट हो जाता है — उपयोगिता और सौंदर्य को एक साथ लाते हुए।

यह नवाचार क्रॉम्पटन के इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं: एंटी-स्केल तकनीक: कठोर हार्ड वाटर परिस्थितियों को सहन करने के लिए।प्रीमियम एस्थेटिक डिज़ाइनऔर इस मॉडल में वाइड-एंगल एलईडी इंडिकेटर भी है।3 किलोवाट पावर वॉटेज। 3 लीटर क्षमता रसोई या बाथरूम की त्वरित जरूरतों के लिए ।

हीटिंग एलिमेंट पर 6 वर्ष, टैंक पर 5 वर्ष और पूरे उत्पाद पर 2 वर्ष की वारंटी के साथ विशेष रूप से उन घरों के लिए जो हार्ड वाटर और मौसमी नमी से संबंधित उपयोग में होते हैं।

नए लॉन्च के बारे में बोलते हुए, मल्हार वाडके, वाइस प्रेसिडेंट – लार्ज डोमेस्टिक अप्लायंसेस, क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज़्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ने कहा, "आज के घर ऐसे उपकरण चाहते हैं जो चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भरोसेमंद प्रदर्शन कर सकें और साथ ही आधुनिक जीवनशैली के अनुरूप हों।

सोलारियम ब्लेज़ के साथ, हमने डिज़ाइन विशेषज्ञता और मजबूत एंटी-स्केल तकनीक को एक साथ लाया है ताकि बढ़ती हार्ड वाटर की समस्या का समाधान किया जा सके – जो विशेष रूप से मानसून के दौरान और भी बढ़ जाती है।

'आप' ने कूड़ा प्रदर्शनी लगा भाजपा सरकार के सफाई अभियान की खोली पोल

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में जगह-जगह जमा कूड़े को लेकर भाजपा की चार इंजन की सरकार के खिलाफ एक नए अंदाज में विरोध जताया। मंगलवार को एमसीडी में ''आप'' के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने दिल्ली के अलग-अलग इलाकों से लोगों द्वारा भेजी गई कूड़े की तश्वीरों का बैनर बनाकर एक प्रदर्शनी लगाकर भाजपा के मेगा सफाई अभियान की पोल खोल दी। जीबी पंत अस्पताल के पास वार्ड 77 में आयोजित कूड़ा प्रदर्शनी के दौरान अंकुश नारंग ने कहा कि भाजपा की सरकार ने पहले 1 से 31 अगस्त तक सफाई अभियान चलाया था। जो अब 2 अक्टूबर तक बढ़ाया गया है। इसके बावजूद दिल्ली में जगह-जगह कूड़े का अंबार पड़ा है। भाजपा वालों को नसीहत है कि अगर दिल्ली को कूड़े से आजादी दिलानी है तो उनको जमीन पर उतरना होगा। सिर्फ फोटो खिंचवाने से दिल्ली साफ नहीं होगी।

उन्होंने कहा कि हमने कूड़ा प्रदर्शनी को चार इंजन की सरकार, कूड़े वाली सरकार' पंचलाइन दी है। यह दिल्ली की स्थिति है, जिसे कूड़े ने बेहाल कर दिया है। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और एमसीडी के मेयर राजा इकबाल सिंह ने मिलकर 'दिल्ली को कूड़े से आजादी' का अभियान चलाया। भाजपा के लोग सिर्फ उन सड़कों पर जाते हैं, जहां कर्मठ सफाई कर्मचारी पहले ही सफाई कर चुके होते हैं। वहां पर थोड़े से कागज फैलाकर झाड़ू मारने लगते हैं। एक जगह मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता गईं, जहाँ बहुत सारा कूड़ा था, लेकिन उन्होंने कूड़े वाली जगह पर सफाई अभियान नहीं चलाया। मेयर के वार्ड और उनकी पूरी विधानसभा में उनके घर के पास ही चारों तरफ कूड़ा-कूड़ा है, लेकिन वे उस कूड़े को नहीं हटा पा रहे हैं। जबकि मेयर विधायक बनने का सपना देख रहे हैं।

अंकुश नारंग ने कहा कि कोई भी अभियान तब सफल होता है, जब जनता उसे सफल मानती है। लेकिन जनता देख रही है कि हर जगह कूड़ा ही कूड़ा है। प्रदर्शनी में लगी तस्वीरें सफाई अभियान की पोल खोल रही हैं। दिल्ली में कहीं मलबा, कहीं कूड़ा तो कहीं गाद पड़ी है। अगर पूरी दिल्ली में कूड़े का अंबार है तो भाजपा सरकार को इसे शीघ्र सुधारना चाहिए। अगर मेयर राजा इकबाल सिंह चार इंजन की सरकार के बाद भी दिल्ली की स्थिति नहीं सुधार सकते, तो उन्हें तुरंत अपना इस्तीफा दे देना चाहिए। दिल्लीवालों को अब पैसों आदि का बहाने नहीं चाहिए। दिल्ली की जनता ने अपेक्षाओं के साथ भाजपा को चुना है और उसे खरा उतरना होगा।

इस दौरान "आप" के एमसीडी सह-प्रभारी प्रवीण देशमुख ने कहा कि मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, महापौर और पूरी भाजपा ने 1 अगस्त से 31 अगस्त तक दिल्ली में मेगा सफाई अभियान चलाया था। उन्होंने दावा किया था कि पूरी दिल्ली को कूड़े से आजाद कर देंगे। लेकिन दिल्ली की जनता ने हमें जीपीएस लोकेशन के साथ तस्वीरें भेजकर अपने क्षेत्र की हकीकत बताई कि गंदगी साफ हुई है या नहीं। उन्हीं तस्वीरों के साथ हमने प्रदर्शनी लगाई। यह तश्वीरें साफ दिखाती हैं कि दिल्ली अभी भी कूड़े के ढेर पर मौजूद है।

राहुल गांधी के प्रवक्ता पवन खेड़ा के दो एपीक एवं वोट सामने आने से साफ है की राहुल दोहरे मापदंड से राजनीति करते हैं : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की कांग्रेस के प्रवक्ता पवन खेड़ा के दो वोट का मामला सामने आने से दिल्ली की जनता हतप्रभ है और चाहती है की उन पर चुनाव आयोग के नियमों के विरुद्ध जा कर दो वोट रखकर लोकतंत्र पर चोट करने का मुकदमा दर्ज हो।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की कांग्रेस नेता राहुल गांधी जो देश भर में स्वोट चोरीस्व के नाम पर भ्रम की राजनीति फैला रहे हैं के सबसे करीबी प्रवक्ता पवन खेड़ा के दो एपीक एवं वोट सामने आने पर राहुल की चुप्पी से साफ है की राहुल गांधी दोहरे मापदंड से राजनीति करते हैं।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की देश में वोट चोरी पर हायड्रोजन बम्ब गेरने का दावा करने वाले राहुल गांधी एवं मल्लिकार्जुन खड़गे जवाब दें की कानून तो पवन खेड़ा पर कारवाई करेगा ही पर वह खुद स्वोट चोरी अभियानस्व चलाने वाली कांग्रेस पार्टी के मुखिया होने के नाते अपने ही पार्टी के दो वोट रखने वाले नेता पर क्या संगठनात्मक कारवाई करेंगे। दिल्ली एवं देश की जनता चाहती है की चुनाव आयोग तक पर आरोप लगाने वाले राहुल गांधी तुरंत वोट चोर पवन खेड़ा को कांग्रेस से निष्कासित कर आदर्श कारवाई का उदाहरण रखें।

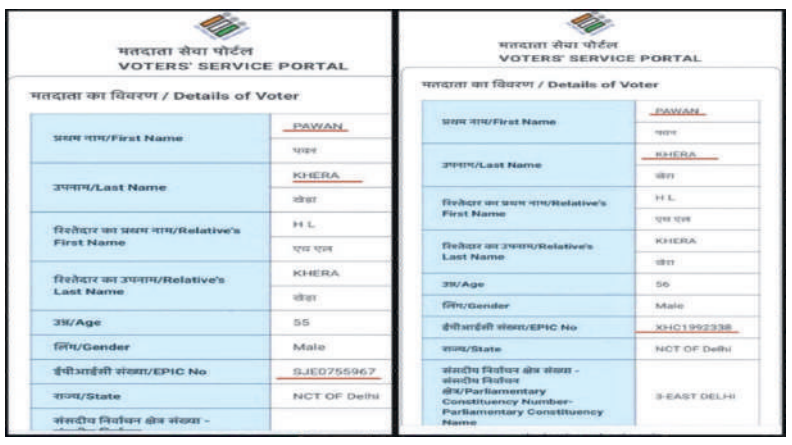

मतदाता सेवा पोर्टल
VOTERS' SERVICE PORTAL

मतदाता का विवरण / Details of Voter

प्रथम नाम/First Name	PAWAN
उपनाम/Last Name	KHERA
रिश्तेदार का प्रथम नाम/Relative's First Name	H L
रिश्तेदार का उपनाम/Relative's Last Name	KHERA
उम्र/Age	55
लिंग/Gender	Male
ईपीआईसी संख्या/EPIC No	SJE0755967
राज्य/State	NCT OF Delhi
संसदीय निर्वाचन क्षेत्र संख्या -	

मतदाता सेवा पोर्टल
VOTERS' SERVICE PORTAL

मतदाता का विवरण / Details of Voter

प्रथम नाम/First Name	PAWAN
उपनाम/Last Name	KHERA
रिश्तेदार का प्रथम नाम/Relative's First Name	H L
रिश्तेदार का उपनाम/Relative's Last Name	KHERA
उम्र/Age	56
लिंग/Gender	Male
ईपीआईसी संख्या/EPIC No	XHC1992338
राज्य/State	NCT OF Delhi
संसदीय निर्वाचन क्षेत्र संख्या - संसदीय निर्वाचन क्षेत्र/Parliamentary Constituency Number-Parliamentary Constituency Name	3-EAST DELHI

शेयर बाजार में भारी गिरावट, शुरुआती बढ़त के बाद निवेशकों को बड़ा झटका

परिवहन विशेष न्यूज

शेयर बाजार में मंगलवार को भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिला। सुबह के सत्र में बाजार ने जोरदार शुरुआत की थी और निवेशकों को बढ़त की उम्मीद जगी थी, लेकिन दोपहर तक अचानक माहौल पलट गया। दिन के अंत तक सेंसेक्स और निफ्टी दोनों बड़ी गिरावट के साथ बंद हुए। इस गिरावट से लाखों निवेशकों को झटका लगा और कई कंपनियों के शेयर धड़ाम हो गए।

शुरुआत में सेंसेक्स 500 अंकों से अधिक चढ़ा था और निफ्टी ने भी तेजी दिखाई थी। वैश्विक बाजारों से सकारात्मक संकेत और घरेलू निवेशकों की खरीदारी ने सुबह का माहौल मजबूत किया। लेकिन दोपहर के बाद बिकवाली हावी हो गई। बैंकिंग, ऑटो और आईटी सेक्टर के शेयरों में भारी दबाव देखा गया।

कई दिग्गज कंपनियों के शेयरों में सबसे ज्यादा गिरावट आई। टाटा मोटर्स, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, टीसीएस, इन्फोसिस, टेक महिंद्रा, बजाज फाइनेंस, एसबीआई और विप्रो जैसे शेयरों ने निवेशकों को निराश किया। इन कंपनियों के शेयरों में 2 से 5 फीसदी तक की गिरावट दर्ज की गई।

विशेषज्ञों का मानना है कि अमेरिकी बॉन्ड यील्ड में बढ़ोतरी और कच्चे तेल की कीमतों में तेजी ने बाजार के सेंटिमेंट को बिगाड़ा। इसके साथ ही विदेशी निवेशकों की लगातार बिकवाली से घरेलू बाजार का दबाव और बढ़ गया। खुदरा निवेशक भी घबराकर शेयर बेचने लगे, जिससे गिरावट और गहरी हो गई।

हालांकि, कुछ सेक्टर जैसे फार्मा और एफएमसीजी में हल्की खरीदारी देखने को मिली, लेकिन वह बाजार को संभालने के लिए काफी नहीं थी। बाजार विश्लेषकों का कहना है कि आने वाले दिनों में निवेशकों को सतर्क रहना होगा। वैश्विक आर्थिक हालात और घरेलू नीतिगत फैसलों पर नजर रखना जरूरी होगा। फिलहाल, अचानक आई इस गिरावट ने निवेशकों को भारी नुकसान पहुंचाया है और बाजार में अनिश्चितता का माहौल बना हुआ है।

मंगलवार की इस भारी गिरावट ने साफ कर दिया कि शेयर बाजार में अस्थिरता बनी रहेगी और छोटे निवेशकों को सोच-समझकर ही कदम बढ़ाना चाहिए।

वर्तमान समय में भी शिक्षक प्रकाश की प्रथम किरण

शिक्षा मनुष्य का तीसरा नेत्र है। शिक्षा से ही मनुष्य अपना विकास कर सकता है। शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुरु का अत्यधिक महत्व है। इसीलिए कबीर जी ने कहा है कि जब गुरु और ईश्वर दोनों एक साथ खड़े हों, तो सबसे पहले गुरु के चरण स्पर्श करना आवश्यक है। आज हमारा राज्य पंजाब शिक्षा के क्षेत्र में देश में प्रथम स्थान प्राप्त कर शिक्षक दिवस की गरिमा बढ़ा रहा है। यह सब परिश्रमी और लगनशील शिक्षकों के कारण ही संभव हो पाया है। आज के भौतिकवादी युग में विद्यार्थी और शिक्षक के रिश्ते में बहुत बदलाव आया है। कोचिंग सेंटर, पाठ्यक्रम पैकेज, डमी एडमिशन ने इसे आघात पहुँचाया है। लेकिन कड़ी मेहनत, लगन और ईमानदारी से विद्यार्थियों को पढ़ाने वाले शिक्षकों का आज भी सम्मान किया जाता है। हालाँकि

शिक्षा के व्यवसायीकरण ने इसे समाप्त करने का प्रयास किया है। लेकिन विद्यार्थियों को उनकी मंजिल तक पहुँचाने में एक रचनात्मक, परिश्रमी शिक्षक की मुख्य भूमिका विशेष होती है। शिक्षकों की कड़ी मेहनत, रचनात्मकता और राष्ट्र निर्माण को सलाम करने के लिए हर साल शिक्षक दिवस मनाया जाता है। भारत में हर साल डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के योगदान और उपलब्धियों के सम्मान में उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्कूलों से लेकर कॉलेजों तक, छात्र उनकी जयंती धूमधाम से मनाते हैं। इस दिन छात्र अपने शिक्षकों का सम्मान करते हैं। 5 सितंबर, 1888 को जन्मे डॉ. राधाकृष्णन न केवल भारत के राष्ट्रपति रहे, बल्कि एक विद्वान, दार्शनिक और भारत रत्न से सम्मानित भी थे। राधाकृष्णन जीवन भर एक शिक्षक रहे। 1954 में, उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। 1963 में उन्हें ब्रिटिश रॉयल ऑर्डर ऑफ मेरिट के मानद सदस्य के रूप में शामिल किया गया। वे एक प्रख्यात शिक्षक थे। ऐसा कहा जाता है कि जब वे 1962 में भारत के दूसरे राष्ट्रपति के रूप में कार्यरत थे, तब उनके छात्रों ने उनके जन्मदिन, 5 सितंबर को एक विशेष दिन 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाना शुरू किया।

जो आज तक जारी है।

प्रभावी और रचनात्मक शिक्षक:

एक शिक्षक के व्यक्तित्व का छात्रों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थी अपने शिक्षक को अपना आदर्श मानते हैं। एक कुशल शिक्षक अपने विद्यार्थियों को सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत करता है और उन्हें उनकी मंजिल तक पहुँचाता है। प्रत्येक शिक्षक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में प्रभावी भूमिका निभाता है।

नैतिक मूल्यों का विकास:

प्रत्येक शिक्षक का कर्तव्य है कि वह अपने विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास करे। यद्यपि आज भौतिकवादी युग में नैतिक मूल्य काफी नकारात्मक हो गए हैं। शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को बेहतर इंसान बनाया जा सकता है। उनके जीवन में सामाजिक समरसता, बड़ों के प्रति सम्मान, सभी के प्रति प्रेम और करुणा, भाईचारा और सामाजिक सहयोग के गुणों का संचार करना भी शिक्षक का प्राथमिक कर्तव्य है।

पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ जीवन अन्वेषण सिखाना भी ज़रूरी :

शिक्षा का उद्देश्य:

विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो, इसलिए शिक्षक इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वे अपनी कक्षा या विद्यालय में प्रातःकालीन सभा, खेल, भाषण, चर्चा, सामाजिक विज्ञान मेले, शैक्षिक भ्रमण और सहायक शिक्षण गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवन अन्वेषण की जानकारी दे रहे हैं। चूँकि किताबी ज्ञान के साथ-साथ जीवन अन्वेषण का ज्ञान होना भी अत्यंत आवश्यक है, इसलिए शिक्षकों को आदर्श बनकर ऐसा कार्य करना चाहिए।

तकनीकी युग में भी शिक्षक का महत्व:

तकनीकी और संचार के वर्तमान युग में भी, जहाँ आज एआई ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है, शिक्षक की भूमिका आज भी विशिष्ट है। शिक्षक मिट्टी के घड़े की तरह काम करता है, वह घड़े को बाहर से मज़बूत बनाने के लिए दो हाथों का उपयोग करता है। लेकिन वह उस घड़े के अंदर भी एक हाथ रखता है। तकनीकी उपकरण चाहे कितने भी आधुनिक क्यों न हो जाएँ, वे शिक्षक का मुकाबला नहीं कर सकते। शिक्षक छात्रों की भावनाओं और स्थिति को भली-भाँति समझता है। यह एक आध्यात्मिक रिश्ता है।

प्रभावी शिक्षण:

बाल गंगाधर तिलक ने अपनी वकालत छोड़ने के बाद शिक्षण को विशेष महत्व दिया। वर्तमान युग में शिक्षण का कार्य अत्यंत व्यापक हो गया है। शिक्षक न केवल छात्रों को शिक्षित कर रहा है, बल्कि उन्हें लैंगिक समानता, बाल विवाह, स्वास्थ्य सेवा, किशोर शिक्षा, नशाखोरी, भ्रूण हत्या, सामाजिक समानता और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाले प्रत्येक विषय पर जागरूक और शिक्षित भी कर रहा है।

5 सितंबर को ग्राम स्तर, राज्य स्तर और देश भर में आदर्श शिक्षकों का सम्मान किया जाता है। इस दिन सभी छात्र अपने शिक्षकों को शुभकामनाएँ देते हैं। चूँकि भारतीय इतिहास में गुरु का स्थान सर्वोच्च है, आइए शिक्षक दिवस पर अपने शिक्षकों को याद करें और उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में आत्मसात करें।

जय हिंद..

अवनीश लोंगोवाल
जिला बरनाला,
पंजाब

राधाष्टमी पर धूमधाम से सम्पन्न हुआ सम्मान समारोह व काव्य सम्मेलन

कार्यक्रम में "रम गयौ मन वृंदावन में" ब्रजभाषा साझा काव्य संग्रह का हुआ विमोचन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मथुरा। ट्रांसपोर्ट नगर/मंडी समिति के पीछे मंशा टीला स्थित पं लटूर प्रधान फार्म हाउस में प्राग हरि साहित्यिक व आध्यात्मिक शोध संस्थान, जयपुर एवं ब्रजवानी जन सेवा समिति, ब्रज नगर (डीग) राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में राधाष्टमी के पावन अवसर पर साहित्यकार एवं पत्रकार सम्मान समारोह और कवि सम्मेलन का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास व धूमधाम के साथ संपन्न हुआ ।सर्वप्रथम प्राग हरि साहित्यिक और आध्यात्मिक शोध संस्थान की संस्थापक अध्यक्ष साहित्य पद्मश्री साध्वी प्रोफेसर डॉ. सरोज गुप्ता (जयपुर), ब्रजवानी जन सेवा समिति के अध्यक्ष हरीश चंद्र शर्मा "हरि", कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे ओम प्रकाश पांडेय "निर्भय",मुख्य अतिथि डॉक्टर ब्रज भूषण चतुर्वेदी एवं विशिष्ट अतिथि प्रख्यात साहित्यकार/ पत्रकार डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी व कन्हैया लाल सारस्वत आदि ने मां सरस्वती के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित किया गया ।साथ ही प्रख्यात कवि अभिषेक "अमर" (ब्रज नगर,डीग) ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की।
तत्पश्चात आयोजित कवि सम्मेलन में डॉ. आर.के. पाण्डेय (ओजस्वी गीतकार), सोहनलाल प्रेम (व्यंग्यकार), नानकचंद "नवीन" (गीतकार), भुवनेश चौहान "चिंतन" (गीतकार), सबरस मुरसानी (हास्यकवि), श्याम सिंह मधुर जघीना (गजलकार), विनीता गौतम (ओज कवि), श्रीमती रेनू उपाध्याय (गीतकार), हिमांशु भारद्वाज "नीतू" (गीतकार), प्रतीक्षा सुहानी (गीतकार), राजेन्द्र अनुरागी (कवि), आचार्य निर्मल (छंदकार), लोकेश सिंघल (व्यंग्यकार) एवं डॉ. राधाकांत शर्मा (कवि) आदि ने काव्य पाठ किया।
कार्यक्रम के अन्तर्गत समस्त अतिथियों की सन्निधि में "रम गयौ मन वृंदावन में" ब्रजभाषा साझा काव्य संग्रह का विमोचन किया गया ।साथ ही समस्त साहित्यकारों, पत्रकारों व कवियों का पगड़ी बांधकर सम्मान किया गया ।साथ ही प्राग हरि साहित्यिक और आध्यात्मिक शोध संस्थान एवं ब्रजवानी जन सेवा समिति के द्वारा उन्हें "अध्यात्म प्रखर लेखनी" व "काव्यश्री अलंकार" आदि की उपाधि से अलंकृत किया गया ।संचालन कार्यक्रम के संयोजक प्रख्यात कवि अभिषेक "अमर" (ब्रज नगर,डीग) ने किया ।साहित्य पद्मश्री साध्वी प्रोफेसर डॉ. सरोज गुप्ता ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सफल घुटना प्रत्यारोपण का रिकॉर्ड तोड़ने वाले विशेषज्ञ टीम एके अग्रवाल ने सत्या में की गठिया के खिलाफ कार्यशाला

सुनील बाजपेई

कानपुर। गठिया आज विश्व की तेज बढ़ती हुई बीमारी है। विश्व में इनकी संख्या लगभग 60 करोड़ है ,जिनके इलाज आदि में पूरे विश्व की 1.5% इकॉनमी इसमें खर्च हो जाती है। इनमें से 30 प्रतिशत यानी लगभग 18 करोड़ गठिया रोगी अपने भारत में हैं। जोकि देश के लिए भी बड़ा भार भी हैं। वे देश की जीडीपी में अपना समुचित योगदान भी नहीं दे पा रहे हैं। इसी लिए देश के नीति निर्धारकों को इस ज्वलंत मुद्दे पर शीघ्रता से पॉलिसी बनाने की भी आवश्यकता है। जहां तक इस संबंध में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान का सवाल है। हाल फ़िलहाल उसने गठिया के रोग को 90 फीसदी से ज्यादा खत्म करने का विकल्प निकाल लिया है।

यह बात यहां सामाजिक चेतना के इरादे से जानी मानी स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉक्टर मनीषा अग्रवाल की अगुवाई में गठिया विषय पर आयोजित एक कार्यशाला को संबोधित करते हुए 20 हजार से ज्यादा सर्जरी करके एक बड़ा कीर्तिमान स्थापित करने वाले बर्रा 6 स्थित सत्य हॉस्पिटल के डायरेक्टर और जाने माने प्रत्यारोपण व घुटने के विशेषज्ञ डॉ ए के अग्रवाल ने कही।

गठिया, नी रिप्लेशमेंट, हिप रिप्लेशमेंट, आर्थोस्कोपिक सर्जरी जैसे जटिल ऑपरेशन कर मरीजों को शत प्रतिशत लाभ पहुंचाने वाले डॉक्टर ए के अग्रवाल की टीम सत्य हॉस्पिटल में अब एक ऐसी आधुनिक तकनीक से घुटना प्रत्यारोपण कर रहे हैं ,जिससे गठिया रोगी ऑपरेशन के तुरंत बाद खड़ा होकर चलने भी लग जाता है।

बूढे व वृद्ध लोगों के गठिया जैसी बीमारी का सफल घुटना प्रत्यारोपण या अन्य ऑपरेशन से उन्हें न केवल अपनी सामान्य जिदंगी प्रदान करने बल्कि उन्हें 30 साल का नौजवान भी महसूस कराने वाले विश्व प्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉक्टर एके अग्रवाल की वजह से ही चलने फिरने में बिल्कुल असमर्थ किदवई नगर निवासी एक 72 वर्षीय महिला ,गोविंद नगर निवासी मिसज़ सप्रा भी घुटनों की पीड़ा से मुक्त होकर अब खुशहाल जीवन यापन कर रही हैं।

इस कार्यक्रम को आए हुए अन्य विशेषज्ञों ने भी संबोधित किया। साथ ही कानपुर समेत पूरे उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से सफल ऑपरेशन का लाभ उठा चुके मरीजों, निकट भविष्य में गठिया जैसी बीमारी से निजात पाने के लिए ऑपरेशन की तैयारी कर रहे लोगों के बीच खेल कूद व मनोरंजक कार्यक्रमों को भी आयोजित कर उनमें गठिया के खिलाफ सफलता का उत्साह भी भरा गया। इसमें संवाद के जरिए घुटना प्रत्यारोपण के भय भी निजात दिलाई गई। हर दृष्टिकोण से गठिया के खिलाफ बहुत सफल इस आयोजन में डॉक्टर ए के अग्रवाल द्वारा लिखित पुस्तक गठिया पर विजय का विमोचन और उसका वितरण भी किया गया।

कार्यक्रम में सम्मिलित लोगों ने न केवल विभिन्न खेलों का आनन्द उठाया बल्कि गठिया रोग से दुख से आनन्द में बदलने की अपनी कहानियों को भी साझा किया। खेलकूद व अन्य प्रतिभागी प्रतियोगिताओं में शामिल लोगों को डॉ ए के अग्रवाल व डॉ मनीषा अग्रवाल द्वारा पुरुस्कार देकर सम्मानित भी किया गया।

सत्या हॉस्पिटल के डॉयरेक्टर डॉ ए के अग्रवाल व डॉ मनीषा अग्रवाल की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम में अनुज अग्रवाल, डॉ के के पटेरिया, आदेश तिवारी, ऐड्वोकेट विप्लव अवस्थी अमन शर्मा, अमिता पॉल, विनोद यादव, कोमल यादव, मोहित विश्वकर्मा आदि ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव सत्येंद्र ने दिया।

नेत्रदान के प्रति जागरूकता हेतु चल रहा है 40वां राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा

नेत्र दान से दृष्टिहीन लोगों को दुनिया देखने का मौका मिलता है : सी.पी. मैसी

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मथुरा रोड़ स्थित रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम चैरिटेबल हॉस्पिटल में बी.एच.आर.सी. डॉक्टर श्रॉफ आई केयर इंस्टिट्यूट, वृन्दावन के द्वारा 15 दिवसीय 40वां राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाडा आयोजित किया जा रहा है ।जो कि 25 अगस्त से प्रारंभ होकर 8 सितंबर 2025 तक चलेगा।

डॉ. श्रॉफः आई केयर, वृन्दावन के प्रसाशनिक अधिकारी सी.पी. मैसी ने कहा कि नेत्र दान से दृष्टिहीन लोगों को दुनिया देखने का मौका मिलता है ।इसीलिए नेत्रदान को महादान कहा जाता है ।नेत्रदान पखवाड़े का उद्देश्य लोगों को नेत्रदान के महत्व के बारे में शिक्षित करना, मिथको को दूर करना और अन्य बाधाओं को तोड़ना भी है, जो अंगदान के बारे में लोगों के निर्णयों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। नेत्रदान के तथ्य मोतियाबिंद, दूरदृष्टि दोष, ऑपरेशन की गई आँखों या सामान्य बीमारियों से पीडित कोई भी व्यक्ति चाहे उसकी उम्र 2 साल से 80 साल तक हो अथवा उनकी उम्र, लिंग, धर्म रक्त समूह कुछ भी हो अपनी आँखें दान कर सकता है। उन्होंने कहा कि क्षतिग्रस्त कोर्निया को दान किए गए स्वस्थ कोर्निया से अंधेपन का इलाज किया जा सकता है। व्यक्ति की मृत्यु के छह से आठ घंटे के भीतर कोर्निया को हटा दिया जाता है। एक नेत्रदाता की आँखों से दो लोगों को रोशनी दी जा सकती है। हालांकि जागरूकता की कमी सामाजिक या धार्मिक कारणों से नेत्रदान को अभी उचित महत्व नहीं मिल पाया है। हमारी आप सभी लोगों से प्रार्थना है कि ज्यादा से ज्यादा लोग हमारे बी.एच.आर.सी. डॉक्टर श्रॉफ आई केयर इंस्टिट्यूट, वृन्दावन में शपथ पत्र या संकल्प पत्र भरे। ताकि जरुरतमंद लोगों को दुनिया देखने का मौका मिल सके ।इस अवसर पर डॉ. प्रवीण सैन शाही, डॉ. अंकिता, नेत्रदान सलाहकार रोशन सिंह आदि उपस्थित रहे।

शंघाई सहयोग संगठन का 25वां शिखर सम्मेलन तियानजिन 2025-वैश्विक राजनीति का निर्णायक मोड़-बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की ओर कदम बढ़ाने का मंच साबित हुआ

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

शंघाई सहयोग संगठन 31 अगस्त से 1 सितंबर 2025 तियानजिन चीन में बदलता हुआ अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य देखने को मिला ।2025 की विश्व राजनीति उस मोड़ पर खड़ी है,जहाँ अमेरिकाकी पारंपरिक प्रभुत्वशाली स्थिति को गंभीर चुनौतियाँ मिल रही हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की₹अमेरिका फर्स्ट₹नीति,जिसमें टैरिफ और एकतरफा आर्थिक प्रतिबंध प्रमुख हथियार हैं, ने न केवल चीन और रूस बल्कि भारत जैसे साझेदार देशों के साथ भी तनाव पैदा कर दिया है ।दूसरी ओर, यूक्रेन युद्ध, ताइवान विवाद, पश्चिम एशिया में अस्थिरता और ऊर्जा संकट जैसी घटनाओं ने दुनियाँ को अस्थिर बना रखा है। ऐसे समय में चीन के तियानजिन शहर में आयोजित 25वें शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन ने यह संकेत दिया कि एशिया और यूरेशिया के देश अब अपने हितों की रक्षा के लिए एकजुट हो रहे हैं ।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि यह सम्मेलन केवल एक औपचारिक मुलाकात नहींथा,बल्किबहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की ओर कदम बढ़ाने का मंच था। भारत, रूस और चीन की सक्रिय भागीदारी और आपसी समीकरणों ने यह साबित किया कि पश्चिमी दबाव अब उतना प्रभावी नहीं रह गया है जितना शीत युद्ध के बाद था ।एससीओ के राष्ट्राध्यक्षों का पच्चीसवां शिखर सम्मेलन संयुक्त घोषणा पत्र के साथ समाप्त हो गया,31 अगस्त से लेकर 1 सितंबर तकचली इस बैठक में सदस्य देशों ने आतंकवाद, ट्रंप की संरक्षणवादी नीति, रूस और यूक्रेन युद्ध, गाजा संकट एवं वैश्विक व्यवस्था पर पश्चिम के अधिपत्य के साथ कमजोर होती ग्लोबल गवर्नेंस पर अपनी चिंताएं साझा की. इन चुनौतियों से निपटने के लिए इन्होंने अपने घोषणा पत्र में भारत के द्वारा दिए गए मूल संकल्प ₹एक पृथ्वी, एक परिवार एवं एक भविष्य₹ पर जोड़ दिया ।चूंकि एससीओ का मुख्य जोर बहुध्रुवीकृत व्यवस्था को मजबूत करते हुए तीसरी दुनिया के देशों के हितों की रक्षा करना है, इसलिए इस सम्मेलन में इन देशों की चिंताओं को रेखांकित करते हुए उसे दूर करने के प्रयास पर भी बल दिया गया ।यह शिखर सम्मेलन भारत के लिए एक अवसर था, जहां एक ओर ट्रंप अपनी टैरिफ नीति से भारत की वैश्विक आकांक्षाओं को नियंत्रित करना चाह रहे हैं, तो दूसरी ओर पाकिस्तान अमेरिका के साथ शीतयुद्ध कालीन गठबंधन से भारत के शक्ति संतुलन को चुनौती देने के प्रयास में है, यह शिखर सम्मेलन वैश्विक राजनीति का निर्णायक मोड़-बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की ओर कदम बढ़ाने का मंचसाबित हुआ इसी संदर्भ में इस शिखर सम्मेलन को समझने की आवश्यकता है।

साथियों बात अगर हम भारतीय पीएम की कूटनीतिक क्रांति की करें तो,उनकी भूमिका इस सम्मेलन में बेहद अहम रही। भारतीय कूटनीति का यह नया चेहरा पश्चिम और एशिया दोनों को यह संदेश देने में सफल रहा कि भारत किसी का पिछलग्गू नहीं, बल्कि स्वतंत्र और संतुलनकारी शक्ति है ।उन्होंने अपने भाषण में तीन प्रमुख बिंदु उठाए,आतंकवाद का उन्मूलन, संप्रभुता का सम्मान और वैश्विक आर्थिक संतुलन। उन्होंने कहा कि किसी भी देश की संप्रभुता का उल्लंघन वैश्विक अस्थिरता को जन्म देता है। यह सीधा संदेश रूस-यूक्रेन युद्ध और चीन- ताइवान विवाद दोनों से जुड़ा हुआ था ।भारत की कूटनीति का यह स्वरूप अमेरिका के लिए भी चिंता का विषय है क्योंकि हाल ही में ट्रंप प्रशासन ने भारत की आईटी और फार्मास्यूटिकल कंपनियों पर नए टैरिफ लगाने की घोषणा की थी। लेकिन तियानजिन सम्मेलन में मोदी का रवैया इस बात का प्रमाण था कि भारत आर्थिक दबावों केबावजूद स्वतंत्र विदेश नीति पर अडिग है। यही कारण है कि कई विश्लेषकों ने इसे ₹मोदी की कूटनीतिक क्रांति₹ नाम दिया।

साथियों बात अगर हम इस सम्मेलन के सानिध्य से मोदी- पुतिन-जिनपिंग की यारी, कूटनीति का त्रिशूल की करें तो,इस सम्मेलन की सबसे बड़ी घटना थी मोदी, पुतिन और जिनपिंग का एक साथ आना। इसे पश्चिमी मीडिया ने ₹न्यू एशिन त्रिडेंट₹ यानी ₹कूटनीति का त्रिशूल₹ कहा ।अमेरिका ने हाल ही में भारत, रूस और चीन से आयातित तकनीकी उत्पादों, ऊर्जा संसाधनों और डिजिटल सेवाओं पर भारी टैरिफ लगाया था। ट्रंप का उद्देश्य था कि ये देश आर्थिक दबाव में आकर वाशिंगटन की शर्तें मान लें। लेकिन तियानजिन सम्मेलन में तीनों नेताओं की एकजुटता ने यह साबित कर दिया कि रणनीतिक साझेदारी आर्थिक प्रतिबंधों से कहीं ज्यादा शक्तिशाली होती हैं (1) भारत- रूसः ऊर्जा और रक्षा सहयोग ने दोनों देशों को करीब रखा है। भारत रूस से कच्चा तेल और गैस आयात बढ़ा रहा है।(2)भारत-चीनः सीमा विवादों के बावजूद दोनों देशों का व्यापार 200 बिलियन डॉलर से ऊपर जा चुका है।(3)रूस-चीनः पश्चिमी प्रतिबंधों के बीच चीन रूस का सबसे बड़ा ऊर्जा और तकनीकी साझेदार बन चुका है ।इस त्रिकोणीय साझेदारी ने यह संकेत दिया कि अमेरिका की टैरिफ राजनीति लंबे समय तक इन देशों को कमजोर नहीं कर पाएगी।

साथियों बात अगर हम पूरे विश्व का ध्यान मोदी-पुतिन की 45 मिनट की कार डिप्लोमेसी द्वारा आकर्षित करने की करें तो, शिखर सम्मेलन के दौरान मोदी और पुतिन की 45 मिनट लंबी कार यात्रा ने वैश्विक मीडिया में सुर्खियाँ बटोरीं ।₹कार डिप्लोमेसी₹ का यह अनोखा उदाहरण इसलिए अहम था क्योंकि एक दिन पहले ही मोदी ने यूक्रेन के राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की से फोन पर बातचीत की थी ।कूटनीति विशेषज्ञ मानते हैं कि मोदी ने पुतिन तक ज़ेलेंस्की का संदेश पहुँचाया और दोनों पक्षों के बीच संवाद की संभावना पर चर्चा की। रूस और यूक्रेन केबीच संवाद की किसी भी कोशिश में भारत की भागीदारी अमेरिका और यूरोप के लिए असहज स्थिति पैदा करती है,क्योंकि इससे भारत ₹मध्यस्थीय शक्ति₹ के रूप में उभरता है ।इसके साथ ही यह मुलाकात अमेरिका को सीधा संदेश थी कि भारत रूस से दूरी नहीं बनाएगा, बल्कि रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखेगा। यह वही नीति है जिसने भारत को शीत युद्ध के दौरान₹गुटनिरपेक्ष आंदोलन₹ का अगुवा बनाया था जो विश्व के लिए रेखांकित करने वाली बात है।

साथियों बात अगर हम चीन के मीडिया में मोदी-जिनपिंग की दोस्ती की जबरदस्त चर्चाओं की करें तो,चीन के घरेलू मीडिया ने मोदी- जिनपिंग की मुलाकात को जिस तरह से प्रचारित किया, वह अपने आप में एक कूटनीतिक संकेत था ।चीन के प्रिंट, डिजिटल टीवी और सोशल मीडिया पर दिनभर इस दोस्ती की खबरें चलती रहीं ।यह बदलाव इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि पिछले कुछ वर्षों से भारत और चीन के संबंध लद्दाख सीमा विवाद और व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के कारण तनावपूर्ण रहे हैं। लेकिन तियानजिन सम्मेलन में दोनों नेताओं के बीच नरमी के संकेत मिले। चीन जानता है कि अमेरिका के खिलाफ एक मजबूत एशियाई गठबंधन तभी संभव है जब भारत और चीन के बीच संतुलन बना रहे। ₹ड्रैगन- एलीफैंट फ्रेंडशिप₹ का यह नया अध्याय पश्चिमी देशों के लिए चिंता का विषय है। यदि भारत और चीन आपसी मतभेद कम कर लें,तो एशिया की अर्थव्यवस्था और राजनीतिक ताकत पश्चिमी दबावों का मुकाबला आसानी से कर सकती है।

साथियों बात अगर हम एशिया द्वारा जारी संयुक्त घोषणा पत्र मैं भारत की कूटनीतिक जीत करें तो पहलगाम आतंकी हमले की निंदा-22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में निर्दोषनागरिकों और फिल्म कलाकारों की मौत ने पूरे क्षेत्र को हिला दिया था। एससीओ शिखर सम्मेलन के घोषणा पत्र में पहलगाम हमले की कड़ी निंदा की गई ।यह निंदा केवल औपचारिकता नहीं थी, बल्कि भारत की कूटनीतिक जीत थी। एससीओ के कई सदस्य देश पाकिस्तान के साथ करीबी रखते हैं, लेकिन इस बार सभी ने आतंकवाद पर एकजुट होकर भारत का समर्थन किया ।इससे पाकिस्तान पर दबाव बना कि वह अपने यहां पल रहे आतंकी ढाँचों पर कार्रवाई करे। भारतीय पीएम ने अपने संबोधन में दोहराया कि आतंकवाद के लिए कोई अच्छा या बुरा कारण नहीं हो सकता। यह बयान अमेरिका और यूरोप तक संदेश देने वाला था, जहाँ अक्सर आतंकवाद को ₹राजनीतिक संदर्भ₹ में तौला जाता है।

साथियों बात अगर हम शिखर सम्मेलन द्वारा जारी संयुक्त घोषणा पत्र को समझने की करें तो, इसमें छह बड़े बिंदु शामिल थेः- (1) आतंकवाद और अलगाववाद के खिलाफ साझा लड़ाई। (2) आर्थिक सहयोग- ऊर्जा, तकनीक और डिजिटल अर्थव्यवस्था पर ध्यान। (3)सार्वभौमिक संप्रभुता का सम्मान-किसी भी देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का वादा। (4) अमेरिकी टैरिफ नीति की अप्रत्यक्ष आलोचना। (5) यूरेशियन कनेक्टिविटी, बीआरआई और भारत की चाबहार परियोजना को जोड़ने की संभावना।(6) सांस्कृतिक और शैक्षिकसहयोग ।यह घोषणा पत्र एससीओ को केवल सुरक्षा मंच से आगे ले जाकर आर्थिक और सांस्कृतिक साझेदारी का केंद्र बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था। मोदी ने इसकी सराहना की और सीधे दिल्ली लौटकर इसे भारत की उपलब्धि बताया।

साथियों बात अगर हम शिखर सम्मेलन के प्रमुख नेताओं के संबोधन व अमेरिका को संदेश की करें तो, तीनों प्रमुख नेताओं,जिनपिंग, मोदी और पुतिन,के भाषण अमेरिका की नीतियों पर अप्रत्यक्ष लेकिन कड़ा हमला थे ।जिनपिंग ने कहा कि दुनिया अब एकध्रुवीय शक्ति के आधिपत्य से बाहर निकलकर बहुध्रुवीय संतुलन की ओर बढ़ रही है ।मोदी ने आतंकवाद और संप्रभुता पर जोर दिया और कहा कि किसी भी राष्ट्र को दूसरे पर थोपे गए आदेश स्वीकार नहीं करने चाहिए ।पुतिन ने नाटो विस्तार और अमेरिकी टैरिफ नीति पर तीखा प्रहार किया और इसे ₹वैश्विक असंतुलन की जड़₹ बताया ।तीनों भाषणों का सार यही था कि अमेरिका को अब संतुलन में रखने का समय आ चुका है और एशिया मिलकर यह भूमिका निभाएगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि तियानजिन का 25वां एससीओ शिखर सम्मेलन केवल औपचारिक कूटनीति नहीं था,बल्कि यह आने वाले दशक की वैश्विक राजनीति की दिशा तय करने वाला ऐतिहासिक क्षण था। मोदी ने भारत की कूटनीति को नए आयाम दिए, पुतिन और जिनपिंग के साथ मिलकर ₹कूटनीति का त्रिशूल₹ बनाया, यूक्रेन संकट पर मध्यस्थ की भूमिका निभाई और आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक सहमति बनाई ।यह सम्मेलन इस बात का प्रमाण है कि दुनिया अब बहुध्रुवीय युग में प्रवेश कर चुकी है और एशियाई देशों की एकजुटता अमेरिका के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। आने वाले वर्षों में तियानजिन सम्मेलन को उसी तरह याद किया जाएगा जैसे बांडुंग सम्मेलन (1955) को गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव के रूप में याद किया जाता है।

बीवाईडी का कमाल: 472.41km/h की टॉप-स्पीड से दौड़ी इलेक्ट्रिक कार; बनाया रिकॉर्ड

बीवाईडी की YANGWANG U9 Track Edition सुपरकार ने जर्मनी के ऑटोमोटिव टेस्टिंग ट्रैक पर 472.41 किमी/घंटा की टॉप स्पीड से नया इलेक्ट्रिक कार रिकॉर्ड बनाया। यह कार e4 प्लेटफॉर्म और DiSus-X आर्किटेक्चर पर बनी है जिसमें क्वाड-मोटर सिस्टम है। ड्राइवर मार्क बासेंग ने यह रिकॉर्ड बनाया जिन्होंने कहा कि नई तकनीकों के साथ इसे संभव बनाया गया। YANGWANG अब दुनिया की सबसे फ़ास्ट इलेक्ट्रिक कार बन गयी है।

नई दिल्ली। हाल ही में BYD की YANGWANG ने जर्मनी के AYP ऑटोमोटिव टेस्टिंग पापेनबर्ग टेस्ट ट्रैक पर 472.41 किमी/घंटा की स्पीड का नया ग्लोबल इलेक्ट्रिक कार के टॉप-स्पीड का रिकॉर्ड बनाया है। इस टॉप स्पीड को YANGWANG U9 Track Edition सुपरकार ने हासिल की है, जो दुनिया की सबसे फास्ट ईलेक्ट्रिक कार बन गई है।

परफॉर्मेंस रहा काफी शानदार

YANGWANG U9 Track Edition को उसी e4 प्लेटफॉर्म और DiSus-X कोर आर्किटेक्चर पर बनाया गया है, जिस पर चीन में बिक रही YANGWANG U9 बेस्ड है। इसके अलावा, समें दुनिया का पहला बड़े पैमाने पर उत्पादित 1200V अल्ट्रा-हाई-वोल्टेज वाहन प्लेटफॉर्म है, जिसे एक्सट्रीम स्थितियों के लिए अनुकूलित थर्मल-मैनेजमेंट सिस्टम के साथ जोड़ा गया है।

YANGWANG U9 ट्रैक एडिशन में e4 प्लेटफॉर्म दिया गया है, जो 30,000rpm हाई-परफॉर्मेंस मोटर्स वाला दुनिया का पहला क्वाड-मोटर सिस्टम है। यह सिस्टम प्रति मोटर 555kW की पावर जनरेट करता है, जिससे संयुक्त सिस्टम आउटपुट 3,000PS से ज्यादा हो जाता है। यह कार को 1,217PS प्रति टन का पावर-टू-वेट रेशियो देता है, जो ग्लोबल ऑटोमोटिव उद्योग में शीर्ष पर रखता है।

इसके अलावा, e4 प्लेटफॉर्म का क्वाड-मोटर इंडिपेंडेंट टॉर्क-वेक्टरिंग सिस्टम लगातार सड़क से मिलने वाली जानकारी पर नजर रखता है और प्रति सेकंड 100 से अधिक बार की अल्ट्रा-हाई फ्रीक्वेंसी पर प्रत्येक पहिये के टॉर्क को एडजस्ट करता है। इसकी वजह से यह हाई स्पीड पर भी बॉडी पोस्चर पर पूरा कंट्रोल बनाए रखता है, जिससे हिया फिसलने या ट्रैक्शन खोने का कोई मौका नहीं रहता है।

YANGWANG U9 Track Edition के फीचर्स

इसे e4 प्लेटफॉर्म + DiSus-X तकनीकी आर्किटेक्चर पर डेवलप किया गया है, जो रेसट्रैक पर बॉडी पोस्चर कंट्रोल में रखने का काम करता है। इससे ड्राइवर को अच्छी सेफ्टी मिलने के साथ ही कार को कंट्रोल में रखने में भी मदद मिलती है। इसके अलावा, यांगवांग U9 ट्रैक एडिशन वर्तमान यांगवांग U9 के एयरोडायनामिक डिज़ाइन को बरकरार रखता है और इसमें एक उन्नत, वैकल्पिक कार्बन-फाइबर फ्रंट स्प्लिटर लगा है, जो पहले से ही बड़े पैमाने पर उत्पादन में है। व्हील-रिम इंटरफ़ेस पर एक अभिनव नलिंग ट्रीटमेंट, हाई-विस्कोसिटी लुब्रिकेंट के साथ मिलकर, हार्ड एक्सीलरेशन या ब्रेकिंग के दौरान टायर और रिम के बीच सापेक्ष स्लिप को कम करता है।

ड्राइवर मार्क बासेंग ने बनाया ये रिकॉर्ड

इस रिकॉर्ड को जर्मन पेशेवर ड्राइवर मार्क बासेंग के जरिए बनाया गया है, जो 2024 में पिछले ग्लोबल EV स्पीड रिकॉर्ड के पीछे थे। यांगवांग के लिए हाई-स्पीड परीक्षण पूरा करने के बाद, उन्होंने कहा कि पिछले साल, मैंने सोचा था कि मैं अपने शिखर पर पहुँच गया हूँ। मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी कि मैं इतनी जल्दी अपना खुद का रिकॉर्ड तोड़ दूंगा, लेकिन हम यहाँ हैं, उसी ट्रैक पर, नई तकनीकों के साथ जिन्होंने इसे संभव बनाया है।

नई स्कोडा ऑक्टेविया इलेक्ट्रिक का आया नया टीजर; इस माह में होगी पेश, जानें क्या होगा खास

परिवहन विशेष न्यूज

स्कोडा सितंबर 2025 यानि इस माह में म्यूनिख IAA शो में विजन ओ वैगन कॉन्सेप्ट पेश करेगी जो नेक्स्ट-जनरेशन इलेक्ट्रिक ऑक्टाविया की झलक है। टीजर से इंटीरियर और एक्सटीरियर की हल्की झलक मिलती है जिसमें कनेक्टेड विंडस्क्रीन पैनोरमिक रूफ और मिनिमलिस्ट थीम शामिल हैं। टिकाऊ पाट्र्स के इस्तेमाल पर जोर दिया गया है जिसमें 3D-प्रिंटेड हेडरेस्ट भी शामिल हैं। इलेक्ट्रिक स्कोडा ऑक्टाविया को डेवलप करने के लिए SSP प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया जाएगा।

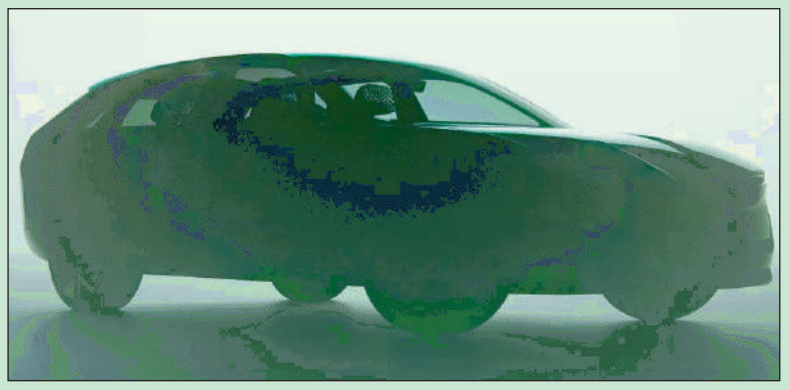

नई दिल्ली। इस माह सितंबर 2025 में म्यूनिख IAA शो होने वाला है। इस शो में Skoda अपने कई नए प्रोडक्ट और कॉन्सेप्ट मॉडल को दिखाने वाली है। इनमें Vision O wagon कॉन्सेप्ट भी होगी, जो जो नेक्स्ट-जनरेशन इलेक्ट्रिक ऑक्टाविया की झलक देगा। हाल ही में इसका एक टीजर जारी किया गया है, जिसमें इंटीरियर और एक्सटीरियर की हल्की झलक दिखाई गई है।

क्या मिलेगा नया?

नई जनरेशन Skoda Octavia इलेक्ट्रिक में कनेक्टेड विंडस्क्रीन और पैनोरमिक रूफ देखने के लिए मिला है। इसमें मिनिमलिस्ट थीम भी देखने के लिए मिली है। यह भी लगता है कि कॉन्सेप्ट के बीच में एक बड़ी डिजिटल स्क्रीन लगी हुई है। इसके टीजर में टिकाउ पाट्र्स के इस्तेमाल पर भी जोर दिया गया है। इसमें 3D-प्रिंटेड हेडरेस्ट देखने के लिए मिला है। स्कोडा का कहना है कि ये हेडरेस्ट खाद बनाने योग्य, पौधों पर आधारित सामग्रियों से बने हैं। यह ब्रांड के पर्यावरणीय संरक्षण और कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के प्रयासों के अनुरूप है।

इससे पहले की गई जारी टीजर में इस कॉन्सेप्ट के बाहरी झलक देखने के लिए मिली थी। इससे पता चलता है कि नेक्स्ट-जनरेशन इलेक्ट्रिक ऑक्टाविया का डिजाइन और स्टाइलिंग पूरी तरह से अलग होगा। इसमें एक पीछे की ओर झुकी हुई विंडशील्ड, हल्की ढलान वाली रूफलाइन, एक ज़्यादा झुकी हुई रियर विंडशील्ड और स्पोर्टी टेल लाइट्स शामिल हैं।

इसके अलावा, इसमें शार्प एलईडी DRL, टर्न सिग्नल वाले ORVM और एक रूफ-माउंटेड स्पॉइलर भी दिया जा सकता है। इसका ओवरऑल प्रोफाइल बेहतर एयरोडायनामिक्स के हिसाब से बनाया गया है, जो इसकी अपील को बढ़ाता है और संभावित रूप से वाहन की रेंज को भी बेहतर बना सकता है। स्कोडा के अनुसार, यह कॉन्सेप्ट कार निर्माता की नई 'मॉडर्न सॉलिड' डिज़ाइन भाषा की झलक देता है, जिसका उपयोग इसकी अगली पीढ़ी की इलेक्ट्रिक कारों में किया जाएगा।

इस प्लेटफॉर्म पर होगी डेवलप

इलेक्ट्रिक Skoda Octavia को डेवलप करने के लिए SSP प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया जाएगा, जिसका पहले इस्तेमाल Volkswagen ID.Golf में भी किया जाएगा। दोनों को 2029 तक बिक्री के लिए उपलब्ध कराने की योजना है। SSP प्लेटफॉर्म, VW के PPE प्लेटफॉर्म की तुलना में छोटा है। हालांकि, नई ऑक्टाविया का व्हीलबेस VW ID.Golf से लंबा होगा। इससे इसके इंटीरियर में ज़्यादा जगह और संभावित रूप से बड़ा बूट स्पेस मिल सकता है। SSP प्लेटफॉर्म 800-वोल्ट चार्जिंग आर्किटेक्चर का उपयोग करता है, जिससे तेज चार्जिंग मिलती है।

किआ सेल्टोस की नई जेनरेशन जल्द होगी लॉन्च, भारत में पहली बार दिखी, क्या होंगे बदलाव

किआ सेल्टोस वाहन निर्माता किआ की ओर से भारत में कई सेगमेंट मे एमपीवी और एसयूवी को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक एसयूवी की नई जेनरेशन को जल द लॉ न्च करने की तैयारी की जा रही है। इसके पहले इसे टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। एसयूवी की नई जेनरेशन को लेकर क या जानकारी सामने आई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में कई वाहन निर्माताओं की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। किआ की ओर से भी एसयूवी सेगमेंट में सेल्टॉस को ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी की नई जेनरेशन को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक एसयूवी की नई जेनरेशन की क्या जानकारी सामने आई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Kia Seltos की नई जेनरेशन होगी लॉन्च

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक किआ की ओर से सेल्टॉस की नई जेनरेशन को भारतीय बाजार में जल्द लॉन्च किया जा सकता है। निर्माता की ओर से इसे लॉन्च करने से पहले टेस्ट किया जा रहा है।

मिली क्या जानकारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक एसयूवी के लॉन्च से पहले इसे टेस्ट किया जा रहा है। जिस दौरान इसे पहली बार भारत के हैदराबाद में देखा गया है। जबकि इसके पहले कई देशों में भी इसे देखा गया है। नई जेनरेशन सेल्टॉस को नई एलईडी हेडलाइट्स, ब्लैक रूफ रेल, ब्लैक अलॉय व्हील्स, ड्यूल टोन ओआरवीएम, ट्रिपल स्क्रीन, ईवी9 की तरह सीट्स, ड्यूल जोन ऑटो एसी, पावर्ड सीट्स, पैनोरमिक सनरूफ, वायरलैस फोन चार्जर, छह एयरबैग, 360 डिग्री कैमरा, Level-2 ADAS, टीपीएमएस और कई फीचर्स को दिया जा सकता है।

मिलेंगे इंजन के विकल्प

रिपोर्ट्स के मुताबिक किआ की ओर से सेल्टॉस की नई जेनरेशन को कई इंजन विकल्पों के साथ लॉन्च किया जा सकता है। इसमें पेट्रोल और डीजल के साथ ही हाइब्रिड तकनीक को भी दिया जा सकता है। जिसके साथ मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के विकल्प दिए जा सकते हैं।

कब होगी लॉन्च

अभी किआ की ओर से इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि एसयूवी को भारतीय बाजार में 2026 तक लॉन्च किया जा सकता है।

किनसे मिलेगी चुनौती

किआ की सेल्टॉस को मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसे Honda Elevate, Maruti Grand Vitara, MG Hector, Mahindra Scorpio जैसी एसयूवी से चुनौती मिलती है।

ओला इलेक्ट्रिक के सभी सात जेन 3 स्कूटरों को मिला पीएलआई सर्टिफिकेशन, कंपनी को बिक्री पर मिलेगा 13-18% का प्रोत्साहन

ओला इलेक्ट्रिक को जेन 3 स्कूटर पोर्टफोलियो के लिए PLI स्कीम के तहत कंप्लायंस सर्टिफिकेशन मिला है। ARAI ने यह सर्टिफिकेशन ओला के सात S1 जेन 3 इलेक्ट्रिक स्कूटरों के सभी मॉडलों के लिए दिया है। इस सर्टिफिकेशन के बाद कंपनी को बिक्री मूल्य के अनुसार प्रोत्साहन राशि मिलेगी जिससे लागत और मार्जिन को मज़बूती मिलेगी। ओला इलेक्ट्रिक के Gen 2 और Gen 3 दोनों स्कूटर अब PLI-प्रमाणित हैं।

नई दिल्ली। ओला इलेक्ट्रिक को जेन 3 स्कूटर पोर्टफोलियो के लिए ऑटोमोबाइल और ऑटो कंपोनेंट के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव PLI) स्कीम के तहत कंप्लायंस सर्टिफिकेशन मिला है। भारी उद्योग मंत्रालय के तहत काम करने वाली ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया (ARAI) ने यह सर्टिफिकेशन दिया है, जो ओला के सात S1 Gen 3 इलेक्ट्रिक स्कूटरों के सभी मॉडलों के लिए मान्य है। इस सर्टिफिकेट के मिलने के बाद इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर निर्माता कंपनी को निर्धारित बिक्री मूल्य के 13 से 18 प्रतिशत तक की प्रोत्साहन राशि मिलेगी। इसके साथ, ओला इलेक्ट्रिक के Gen 2 और Gen 3 दोनों स्कूटर पोर्टफोलियो अब PLI-प्रमाणित हो गए हैं।

Gen 3 स्कूटर के मॉडल

Ola Electric के Gen 3 पोर्टफोलियो में 7 इलेक्ट्रिक स्कूटर शामिल है। इस पोर्टफोलियों के तहत ग्राहकों को S1 Pro 3 kWh, S1 Pro 4 kWh, S1 Pro+ 4 kWh, S1 X 2 kWh, S1 X 3 kWh, S1 X 4 kWh, और S1 X+ 4 kWh इलेक्ट्रिक स्कूटर को ऑफर किया जाता है।

लागत और मुनाफे पर प्रभाव

ओला इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड के प्रवक्ता ने कहा कि हमारे Gen 3 स्कूटरों के लिए PLI सर्टिफिकेशन हासिल करना, जो हमारी अधिकांश बिक्री का हिस्सा हैं, मुनाफे की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। यह सीधे तौर पर हमारी लागत संरचना और मार्जिन को मज़बूत करेगा, जिससे हमें स्थिर विकास हासिल करने में मदद मिलेगी। हमारे ऑटो व्यवसाय के EBITDA सकारात्मक होने के लक्ष्य के साथ, यह सर्टिफिकेशन उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक मजबूत उत्प्रेरक का काम करता है।

क्या है PLI सर्टिफिकेशन?

यह भारत सरकार द्वारा कंपनियों को कुछ उत्पादों के उत्पादन में वृद्धि के लिए दी जाने वाली वित्तीय प्रोत्साहन योजना का हिस्सा है। इसका मुख्य लक्ष्य भारत में मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देना, आयात कम करना, और रोजगार के अवसर पैदा करना है। जब कोई कंपनी, जैसे ओला इलेक्ट्रिक, अपनी उत्पादन प्रक्रिया को सरकार की इस योजना के नियमों के अनुसार ढालती है, और उसके उत्पाद पात्रता मानदंडों को पूरा करते हैं, तो उसे यह सर्टिफिकेशन मिलता है। यह सर्टिफिकेशन मिलने के बाद, कंपनी को सरकार से वित्तीय लाभ या इंसेंटिव मिलता है, जिससे उसे मुनाफा बढ़ाने में मदद मिलती है। यह ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, खाद्य प्रसंस्करण, और सोलर पीवी निर्माण जैसे कई सेक्टरों के लिए उपलब्ध है।

नई रेनॉल्ट डस्टर की कीमतों का जल्द होगा एलान, जानें क्या होंगे खास फीचर्स

रेनॉल्ट जल्द ही भारत में नई Duster SUV लॉन्च करने वाली है। इसका निर्माण चेन्नई में होगा और इसे 2025 के अंत तक पेश किया जा सकता है। शुरुआत में यह पेट्रोल इंजन के साथ आएगी जिसके बाद हाइब्रिड वर्जन लॉन्च किया जाएगा। नई डस्टर में कई आधुनिक फीचर्स होंगे और इसकी कीमत 10 लाख से 17 लाख रुपये के बीच होने की उम्मीद है।

नई दिल्ली। हाल ही में Renault ने भारतीय बाजार में नई ट्राइबर और अपग्रेडेड काइगर को लॉन्च कियाय है। अब कंपनी अपनी सबसे पॉपुलर SUV, Renault Duster की कीमत की घोषणा को पक्की कर दी है। इसकी कीमतों का एलान आने वाले महीनों में किया जाएगा। इसे पहले से ज्यादा कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लेकर आया जाएगा, जो इसे बाकी SUV से अलग बनाने का काम करेगा।

नई Duster लॉन्च की टाइमलाइन हुई कन्फर्म

तीसरी जनरेशन की Renault Duster SUV का प्रोडक्शन सितंबर 2025 से शुरू होगा। इसका निर्माण Renault के चेन्नई में स्थित प्लांट में होगा। हाल ही में Renault ने निसान इंडिया से 51 प्रतिशन हिस्सेदार खरीदकर इस प्लांट का पुरा कंट्रोल अपने पास ले लिया है।

उम्मीद है कि भारत के लिए नई-जनरेशन Renault Duster को फेस्टिव सीजन यानी अक्टूबर-नवंबर 2025 के आसपास पेश किया जा सकता है। कीमतों का एलान इस साल के अंत तक होने की उम्मीद है, जबकि इसकी डिलीवरी जनवरी 2026 से शुरू हो सकती है।

पहले पेट्रोल, फिर हाइब्रिड में होगी लॉन्च

नई-जनरेशन Renault Duster को शुरुआत में केवल पेट्रोल इंजन के साथ लेकर आया जाएगा। इसके पेट्रोल इंजन को लॉन्च करने के कुछ महीनों के बाद हाइब्रिड वर्जन को लाया जाएगा। इसके हाइब्रिड वर्जन को साल 2026 के अंत या 2027 के शुरुआत में लॉन्च किया जा सकता है। उम्मीद है कि यह एसयूवी 1.3-लीटर, 4-सिलेंडर, टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल इंजन दिया जाएगा, जो 151bhp की पावर और 250Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। ट्रांसमिशन ऑप्शन के रूप में 6-स्पीड मैनुअल और एक डुअल-क्लच ऑटोमैटिक दिया जा सकता है। इसके बेस मॉडल में 1.5-लीटर NA पेट्रोल या 1.0-लीटर 3-सिलेंडर टर्बो पेट्रोल इंजन मिल सकता है।

नई-जनरेशन Renault Duster को कंपनी के नए CMF-B मॉड्यूलर प्लेटफॉर्म पर डिजाइन और डेवलप किया गया है। यह एसयूवी आधुनिक इंटीरियर और कई सुविधा फीचर्स के साथ आएगी। इसमें 0.1-इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट यूनिट (वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले के साथ), एक डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, पावर्ड ड्राइवर सीट, वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स और ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल जैसे फीचर्स दिए जा सकते हैं। सेफ्टी के लिए लेवल 2 ADAS तकनीक, 360-डिग्री सराउंड व्यू कैमरा, 6 एयरबैग, ESP, ट्रैक्शन कंट्रोल, और हिल लॉन्च/डिसेंट कंट्रोल दिए जा सकते हैं।

कितनी होगी कीमत?

नई-जनरेशन Renault Duster को 10 लाख रुपये से 17 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत के बीच लॉन्च किया जा सकता है। भारतीय बाजार में इसका मिड-साइज एसयूवी सेगमेंट मुकाबला, Hyundai Creta, Kia Seltos, Maruti Grand Vitara से देखने के लिए मिलेगा।

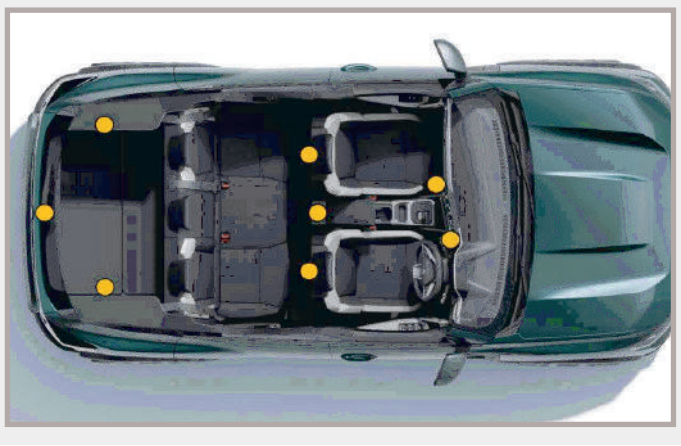

हाल के दिनों में कोचिंग का तेजी से बढ़ता प्रचलन अभिभावकों के बजट को बिगाड़ रहा है

विजय गर्ग

हाल के दिनों में कोचिंग का तेजी से बढ़ता प्रचलन अभिभावकों के बजट को बिगाड़ रहा है। छात्रों का कोचिंग जाना धीरे-धीरे अपरिहार्य माना जाने लगा है। जिसके चलते माता-पिता को अपने अन्य जरूरी खर्चों में कटौती करनी पड़ती है। हाल ही में भारत सरकार के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि देश भर के लगभग हर चार में से एक स्कूली छात्र ने इस वर्ष निजी कोचिंग ली। कुल मिलाकर देश के 27 फीसदी विद्यार्थी निजी कोचिंग लेते हैं। यह प्रतिशत शहरों में ज्यादा है, जो सर्वे में करीब 31 फीसदी पाया गया। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में शहरों की तुलना में कम- 25 फीसदी पाया गया है। पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में यह कोई वैकल्पिक सुविधा नहीं है बल्कि शिक्षा प्रणाली की विसंगतियों से अपने बच्चों को उबारकर उनके बेहतर भविष्य की आस का जरिया है। उस स्थिति से उबरने की कोशिश है जो छात्रों को परीक्षा से पूर्व तनाव व परेशानी में धकेल देती है। केंद्र सरकार के व्यापक वार्षिक माड्यूलर सर्वेक्षण यानी सीएमएस में खुलासा हुआ है कि शहरी परिवार कोचिंग पर साल में औसतन चार हजार रुपये खर्च करते हैं। वहीं उच्चतर माध्यमिक छात्रों के लिये राशि बढ़कर दस हजार रुपये हो जाती है। दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में यह खर्च कम हो जाता है। लेकिन फिर भी परिवार की आय पर दबाव जरूर बनाता है। कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के व्यापक मॉड्यूलर सर्वेक्षण (शिक्षा) के ये आंकड़े एक सच्चाई को उजागर करते हैं कि स्कूली पढ़ाई छात्रों की सभी जिज्ञासाओं को शांत नहीं कर पाती। यानी स्कूल छात्रों की परीक्षाओं के लिये अपेक्षित आत्मविश्वास प्रदान करने में पूरी तरह सफल नहीं हो पा रहे हैं। जाहिर बात है कि यदि स्कूलों में पढ़ाई छात्राओं की आकांक्षाओं के अनुरूप हो और उनकी जिज्ञासा कक्षा की पढ़ाई के दौरान शांत हो जाए, तो वे कोचिंग की आवश्यकता महसूस नहीं करेंगे।

सर्वे बताता है कि आज देश में 56 फीसदी छात्र सरकारी स्कूलों में शिक्षा ले रहे हैं। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह संख्या दो दिहाई है। निस्संदेह, ऐसी स्थिति में कोचिंग का बढ़ता प्रचलन आकांक्षाओं से ज्यादा व्यवस्थागत कमजोरी का संकेत है। वहीं पंजाब और हरियाण में, यह प्रचलन ज्यादा है जहां बोर्ड और प्रवेश परीक्षाओं का अधिक दबाव हावी रहता है। जिसके चलते कुकरमुत्तों की तरह कोचिंग सेंटर उग रहे हैं। नतीजा साफ है कि कक्षाओं में ठीक से पढ़ाई न होने के कारण छात्रों का ध्यान व पैसा स्कूल के समानांतर चलाए जा रहे कोचिंग सेंटरों को जा रहा है। कोचिंग सेंटर, जिनका मकसद सिर्फ मुनाफा जुटाना ही है, वे समाज में एक कृत्रिम स्पर्धा ट्यूशन पढ़ने व न पढ़ने वाले छात्रों के बीच पैदा कर रहे हैं। पारिवरिक परिस्थितियों के चलते ट्यूशन न पढ़ने वाले छात्र असुरक्षा व हीन भावना के शिकार हो जाते हैं। दरअसल, इस समस्या का समाधान कोचिंग को बाजार हिस्सा मानकर नहीं किया जा सकता है। प्रतिबंध या सीमाएं निर्धारण से भी समस्या का समाधान करने के बजाय हम इस मुद्दे को और जटिल बना देंगे। बेहतर होगा कि स्कूल में कमजोर छात्रों को स्कूल के समय बाद अतिरिक्त कक्षाओं के जरिये मजबूती प्रदान की जाए। खासकर बोर्ड की परीक्षाओं में शामिल हो रहे छात्रों पर अधिक ध्यान व समय देकर स्कूल प्रबंधक रचनात्मक भूमिका निभा सकते हैं। जिससे अभिभावकों पर अतिरिक्त आर्थिक दबाव भी नहीं पड़ेगा। अधिक विषयों के लिये योग्य शिक्षकों की नियुक्ति व रटने के बजाय समझने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देकर भी कोचिंग प्रथा को कम किया जा सकता है। इसके साथ ही स्कूलों में छात्रों का मध्यावधि मूल्यांकन भी मददगार साबित हो सकता है। राज्य बोर्डों को भी छात्रों के ज्ञान के मूल्यांकन को नया स्वरूप देना चाहिए। वे छात्रों को समझ और व्यावहारिक ज्ञान देने को प्राथमिकता दें बजाय कि रटने की प्रवृत्ति को बढ़ाने की। यदि निजी कोचिंग अपरिहार्य है तो कम आय वाले छात्रों के लिये आर्थिक सहायता नैसर्गिक न्याय करेगी। इससे शिक्षा के क्षेत्र में समानता लाना संभव है। अन्यथा कोचिंग का दायरा बढ़ता ही रहेगा। अन्यथा असमानता बढ़ेगी और कक्षाओं में छात्रों की भागीदारी कम होती जाएगी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कैसे छात्र एक पुस्तक महोत्सव का अधिकतम लाभ उठा सकते हैं

विजय गर्ग

एक पुस्तक त्योहार छात्रों के लिए सीखने, प्रेरित होने और मज़े करने का एक शानदार अवसर है। इसका अधिकतम लाभ उठाने के लिए, उन्हें आगे की योजना बनानी चाहिए, सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए, और उपलब्ध अवसरों के साथ जुड़ना चाहिए। 1.। अपनी यात्रा की योजना बनाएं

अनुसूची की जाँच करें: जाने से पहले, त्योहार की आधिकारिक वेबसाइट या कार्यक्रम देखें। उन घटनाओं की तारीखों और समय पर ध्यान दें जिनमें आप रुचि रखते हैं, जैसे लेखक वार्ता, कार्यशालाएं, या पैनल चर्चा।

लक्ष्य निर्धारित करें: इस बारे में सोचें कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं। क्या आप नई किताबें ढूंढना, किसी विशिष्ट लेखक से मिलना या किसी निश्चित विषय के बारे में जानना चाहते हैं? एक लक्ष्य होने से आपको अपने समय और ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है। 2.। लेखकों और विशेषज्ञों के साथ संलग्न हैं

सत्र में भाग लें: लेखकों, चित्रकारों और कवियों द्वारा वार्ता पर जाएं। वे अक्सर अपनी रचनात्मक प्रक्रिया, अपनी पुस्तकों के पीछे की कहानियों और अपने कैरियर की यात्रा में अंतर्दृष्टि साझा करते हैं। यह इच्छुक लेखकों और कलाकारों के लिए बहुत प्रेरित हो सकता है।

प्रश्न पूछें: शर्मीली मत बनो! प्रश्नोत्तर सत्रों में भाग लें। एक विचारशील प्रश्न पूछने से एक लेखक के साथ सीधी और यादगार बातचीत हो सकती है। 3। अन्वेषण करें और खोजें

बूथों पर जाएँ: विभिन्न प्रदर्शक बूथों के माध्यम से चलें। कई प्रकाशकों, बुकस्टोर्स और साहित्यिक संगठनों ने नई रिलीज़, क्लासिक शीर्षक और विशेष संस्करणों को प्रदर्शित किया है। आप एक नई शैली या एक पुस्तक की खोज कर सकते हैं जो आपको अन्यथा नहीं मिली होगी।

मुफ्त की तलाश करें: कुछ बूथ मुफ्त बुकमार्क, पोस्टर या यहां तक कि पुस्तकों की अग्रिम प्रतियां भी देते हैं। ये महान स्मृति चिन्ह हैं और नए पाठ खोजने का एक मजेदार तरीका है। 4। नेटवर्क और कनेक्ट

फेलो रीडर्स से मिलें: त्यौहार उन लोगों को आकर्षित करते हैं जो किताबों से उतना ही प्यार करते हैं जितना आप करते हैं। अन्य उपस्थित लोगों के साथ बातचीत करें कि वे क्या पढ़ रहे हैं या उन्होंने किन घटनाओं का आनंद लिया है। यह समान हितों वाले दोस्तों के समुदाय का निर्माण करने का एक शानदार तरीका है।

एक बुक क्लब में शामिल हों: कई त्योहारों में स्थानीय पुस्तक क्लबों के बारे में जानकारी होती है। त्योहार खत्म होने के लंबे समय बाद पुस्तकों के बारे में बातचीत जारी रखने के लिए एक उत्कृष्ट तरीका है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

भारत-रूस और चीन का मेल, अमेरिका का 'ट्रंप कार्ड' हुआ फेल

प्रदीप कुमार वर्मा

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत पर लगाए गए पचास फ़ीसदी टैरिफ के बाद अब भारत ने अपने नए भागीदारों की तलाश शुरू कर दी है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हाल ही में जापान होते हुए चीन की यात्रा को इसी तलाश का एक अहम पड़ाव माना जा रहा है। रूस से परंपरागत एवं स्वाभाविक दोस्ती के बाद अब भारत ने चीन के साथ भी दोस्ती का हाथ बढ़ाया है जिसके चलते विश्व पटल पर भारत रूस और चीन का मजबूत "त्रिकोण" बनने के आसार बन रहे हैं। भारत, रूस और चीन के त्रिकोण के बाद टैरिफ के रूप में दुनिया को अमेरिका की चुनौती से राहत मिलेगी। वहीं, विश्व के अन्य देशों द्वारा इस त्रिकोण को अमेरिका के लिए एक कड़ा संदेश माना जा रहा है। फिलहाल हालात ऐसे बने हैं कि रूस और चीन के साथ अमेरिका की कथित दुश्मनी के बाद अब भारत को भी इसी कड़ी के रूप में देखा जा रहा है। रूस और चीन के साथ भारत के मिलने के बाद अब विश्व पटल पर एक नए "वर्ल्ड ऑर्डर" की तस्वीर भी साफ होने लगी है।

ऐसा लगता है कि इस कवायद में भारत, रूस और चीन के मेल के बाद अमेरिकी ट्रंप कार्ड फेल हो गया है। अब यह भी तय हो गया है कि इस नए वर्ल्ड ऑर्डर में भारत की भूमिका भी महत्वपूर्ण होने वाली है। करीब एक पखवाड़े पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने "लिबरेशन डे" पर विदेशी वस्तुओं पर मनमाना टैरिफ लगा दिया था। इसकी बेस लाइन 10 प्रतिशत से लेकर 50 प्रतिशत तक रही। इस टैरिफ के पीछे अमेरिका ने "ड्रग्स", "प्रवासी" और "ट्रेड डेफिसिट" तीनों को राष्ट्रीय आपातकाल का बहाना बना डाला। इसी कवायद में ट्रंप ने भारत पर 50 फीसदी टैरिफ का ऐलान किया। इसके बाद में भारतीय उत्पादों के लिए अमेरिकी बाजारों में बिक्री और व्यापार के हालात प्रभावित हुए हैं। इस स्थिति से निपटने के लिए अब भारत ने अमेरिका से इतर दुनिया के अन्य देशों में अपने उत्पादों के लिए नए बाजार की तलाश शुरू कर दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हाल की जापानी यात्रा इसी तलाश का एक उदाहरण है।

जापान के साथ अच्छी बातचीत करते हुए भारत में अपने हितों को साधते हुए कई अहम समझौते किए हैं। इनमें सबसे आम समझौता जापान के भारत में निवेश से संबंधित है। पहली तिमाही में भारत ने 7.8 प्रतिशत की जीडीपी ग्रोथ दिखाकर दुनिया को चौंकाया। अब चीन के तीसरे सबसे बड़े शहर तियानजिन में हुई शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में भारत रूस और चीन की बेहतर दोस्ती ने एक नया त्रिकोण बना दिया है। जानकारों का मानना है कि जिस प्रकार से रूस के राष्ट्रपति पुतिन और भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की केमिस्ट्री इस समिट में दिखाई पड़ी है, इसके बाद यह दोस्ती एक प्रकार से अमेरिका के लिए खतरे की घंटी है। उधर, समूचे विश्व पर टैरिफ थोपने के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को अपने ही घर में मुसीबत का सामना करना पड़ रहा है। अमेरिकी अदालत ने दो टूक कह दिया कि "राष्ट्रपति टैरिफ नहीं ठोक सकता, यह कांग्रेस का अधिकार है।" यही नहीं, इस टैरिफ को 14 अक्टूबर तक हटाने का आदेश भी आ चुका है।

अगर सुप्रीम कोर्ट ने भी यही फैसला दोहरा दिया तो अमेरिका को लगभग 14 लाख करोड़ रुपये रिफंड करना पड़ सकता है। यही है ट्रंप का अपना खोदा गड्ढा जिसमें आज वह खुद गिर चुके हैं। टैरिफ के संबंध में ट्रंप की दलील है कि अगर टैरिफ हटा दिए गए तो अमेरिकी अर्थव्यवस्था बर्बाद हो जाएगी।" यूरोप से लेकर एशिया तक हालात बदल रहे हैं। भारत निवेश खींच रहा है, ब्रिक्स और RIC की "पहाड़ जैसी मुसीबत" अमेरिका के सामने खड़ी हो रही है और ऊपर से ट्रम्प की तुगलकी नीतियों ने अमेरिकी थिंक टैंकों की नींद उड़ा दी है। शंघाई सहयोग संगठन की समिट में पाकिस्तान को बड़ा झटका लगा है, जिससे उसकी कूटनीतिक छवि प्रभावित हुई है। भारत की सक्रिय एवं दमदार सहभागिता के बाद इस बार के शंघाई सहयोग संगठन के वार्षिक सम्मेलन में पाकिस्तान की भूमिका अपेक्षा से कमजोर रही। भारत ने इस मंच पर अपनी उपस्थिति को प्रभावशाली ढंग से दर्ज कराया और क्षेत्रीय सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और राजनीतिक स्थिरता के मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभाई।

यह भारत की कूटनीतिक जीत ही है कि इस समिट के साझा घोषणापत्र में एक ओर जहां पहलगाम आतंकी हमले की निंदा की गई है जिसमें सीधे तौर पर पाकिस्तान का हाथ रहा है, तो वहीं दूसरी ओर भारत के इस रुख से भी सहमति जताई कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में "दोहरे मानदंड" अस्वीकार्य हैं। घोषणापत्र में कहा गया- "सदस्य देश आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों की कड़ी निंदा करते हैं। वे इस बात पर जोर देते हैं कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोहरे मानदंड अस्वीकार्य हैं और वे अंतरराष्ट्रीय समुदाय से आतंकवादियों की सीमा पार गतिविधियों सहित आतंकवाद का मुकाबला करने का आह्वान करते हैं।" एससीओ समिट के दौरान पीएम मोदी ने पुतिन और जिनपिंग से द्विपक्षीय मुलाकात भी की। जहां वैश्विक व्यापार भी चर्चा हुई। समिट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, पुतिन और जिनपिंग की तिकड़ी ने ऐसा प्रभाव छोड़ा कि अंतरराष्ट्रीय मीडिया में इसे अमेरिकी वर्चस्व के खिलाफ एकजुटता के रूप में देखा गया।

घरौंदों की तलाश

विजय गर्ग

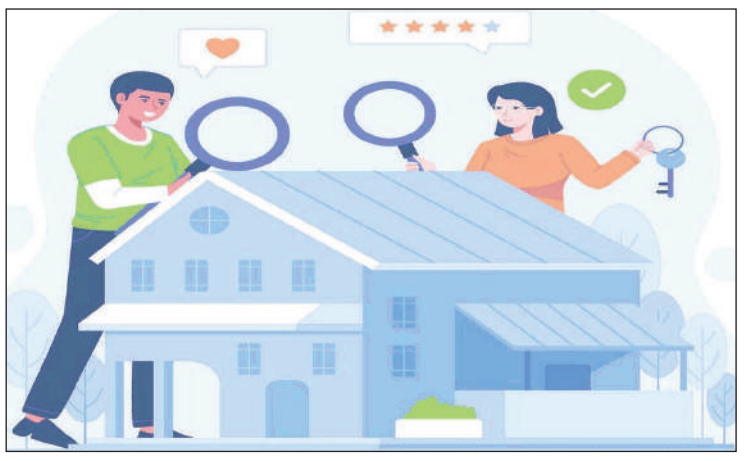

घरौंदों की तलाश में करोड़ों लोग इधर से उधर भटकते रहते हैं, वर्षों तक संघर्ष करते हैं, तब जाकर कहीं उन्हें एक छोटा-सा घर मिलता है। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि वह छोटा घर भी उन्हें नसीब नहीं होता। अपने घर में रहने का सुख अलग और खास होता है। जब आदमी किराए के मकान को छोड़ कर अपने मकान में रहने जाता है, तो उसे ऐसा लगता है कि आज ही वह अपने जीवन में स्वतंत्र हुआ है। हालांकि यह भी सच है कि छोटे से लेकर बड़े शहरों के हजारों बाशिंदे किराए के मकान को ही अपना घरौंदा बनाकर रह रहे हैं । उन्हें कभी मजबूरी में तो कभी नौकरी और अपने काम के लिए किराए के मकान में रहना पड़ता है । इस सबके बीच इसमें कोई दोराय नहीं कि आवास एक बहुत बड़ी समस्या है, जिसका निराकरण होना आवश्यक है । मगर आर्थिक जटिलताओं के और घनीभूत होने के दौर में क्या अपना घर होने का सवाल इतना आसान रह गया है ?

अपने घर का सपना हर आदमी हर रोज देखता है। यह जीवन के कुछ मूलभूत उद्देश्यों में शामिल होता है। संघर्ष करते- करते दो कमरों की आस में कभी- कभी व्यक्ति जीवन की संध्या तक पहुंच जाता है, लेकिन अपना मकान नसीब की ही बात हो जाती है।

आज शहर कंक्रीट के जंगल बन गए, लेकिन आवास एक समस्या बनकर उभरी है। किराएदार होने का दर्द हो या सड़क पर सोने का संकट, समस्या दोनों ही रूप में काफी गंभीर है। टपकती छतें, मकान मालिक के ताने या फिर बार-बार मकान बदलने का झंझट आदि, संकट में सिर्फ आम आदमी पिसता है। सरकारों ने समय- समय पर कम कीमतों पर आवासीय कालोनियां बसाने का दावा किया है, लेकिन सच यह है कि कई बार यह भी आम आदमी की पहुंच से बाहर ही रहा है। सरकार की ओर से पहुंच वाली कीमत पर आवास उपलब्ध कराने की बात तो कही जाती है, लेकिन संसाधनों के साथ-साथ आवासों की सीमित उपलब्धता ने इस संकट को बरकरार रखा है ।

दिल्ली, मुंबई जैसे महानगर में मकान लेना मध्यम वर्ग के लिए अब कल्पना होती जा रही है। सरकार की ओर से जरूरतमंदों को आवास मुहैया कराने की योजना के जरिए शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की दिक्कतों को कुछ कम करने की कोशिश हो रही है और उसे महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। इस योजना में झुग्गी-झोपड़ी वालों को भी शामिल किया गया। इसके अंतर्गत कमजोर वर्ग के लोगों, निम्न आय वर्ग और मध्यम वर्ग के लोगों को आवास उपलब्ध कराने के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों के उन लोगों को भी शामिल किया गया, जिनके पास आवास नहीं है या कच्चे मकान हैं। मगर हकीकत यह है कि इन कवायदों के बावजूद आज भी बहुत सारे लोग सिर्फ अपने घर का सपना देखने तक सीमित हैं ।

वक्त के साथ सब कुछ महंगा होते जाने और आय में कमी के साथ-साथ घर बनाना बहुत मुश्किल साबित हो रहा है। बड़े रिहाइशी परिसरों या बहुमंजिला इमारतों में फ्लैट या छोटे से छोटे घरों की कीमत अब लोगों की पहुंच से दूर होती जा रही है। ऐसे में गरीब आदमी की आर्थिक क्षमता उसे यह सपना देखने से भी वंचित करती है कि वह कहीं घर बना ले। जहां दो वक्त की रोटी जुटाना मुश्किल हो रहा हो, वहां अपना घर लेना वाकई असंभव दिखता है ।

इसके लिए हमारी सरकारों को कोई सुचिंतित पहल करनी होगी, न केवल अपने स्तर पर, बल्कि जमीन-जायदाद की कीमतों पर भी नियंत्रण रखना होगा । व्यक्ति तभी सुकून से जीवन जी सकता है, जब उसका स्वाभिमान बरकरार रहे। यह हमारे समाज की जिम्मेदारी भी है कि व्यक्ति स्वाभिमान के साथ जिए। अगर व्यक्ति किराएदार के तौर पर रह रहा है तो उसके

अधिकारों और सम्मान का पूरा ध्यान रखना कई बार व्यक्तिगत स्तर पर इस आवासीय तनाव को कम कर सकता है ।

इसके अलावा, मकानों के निर्माण से संबंधित सामग्री जैसे सीमेंट, बजरी, ईंटों से लेकर मजदूरी तक सभी चीजों की कीमतें निर्धारित होनी चाहिए। उनमें बेतहाशा बढ़ोतरी की स्थिति को नियंत्रित किया जाना चाहिए । निर्माण सामग्री की मनमानी कीमतें घर बनाने के आम आदमी के हौसले को पस्त कर देती हैं। साथ में समाज के समर्थ लोग अगर खुद को सक्षम पाएं, तो वे एक या दो परिवारों के लिए घर की छत का इंतजाम कर सकते हैं। यह बहुत नेक काम होगा । उनके ऐसा करने से धीरे-धीरे बहुत से लोग आगे आएंगे और इस समस्या को हल करने में मदद कर पाएंगे ।

चाहे वह सड़क पर सो रहा आदमी हो या किराए की छत के नीचे आस लगाए बैठा व्यक्ति, दोनों ही परिस्थितिवश मजबूर हैं, लेकिन उनको मजबूत बनाकर समाज उनको एक आधारशिला प्रदान कर सकता है। ऐसा सुनिश्चित करके बहुत सारे जरूरतमंद लोगों की रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकता पूरी की जा सकती हैं। हमारा देश लोकतांत्रिक और कल्याणकारी विचारधारा पर आधारित है, तो उसके जरूरतमंद नागरिकों के पास सम्मान से जीने के लिए एक घर हो तो इससे आखिरकार बेहतर भविष्य का ही निर्माण होगा ।

प्लास्टिक को पचाने वाले सूक्ष्मजीव एंटीबायोटिक प्रतिरोध को ईंधन दे सकते हैं

विजय गर्ग

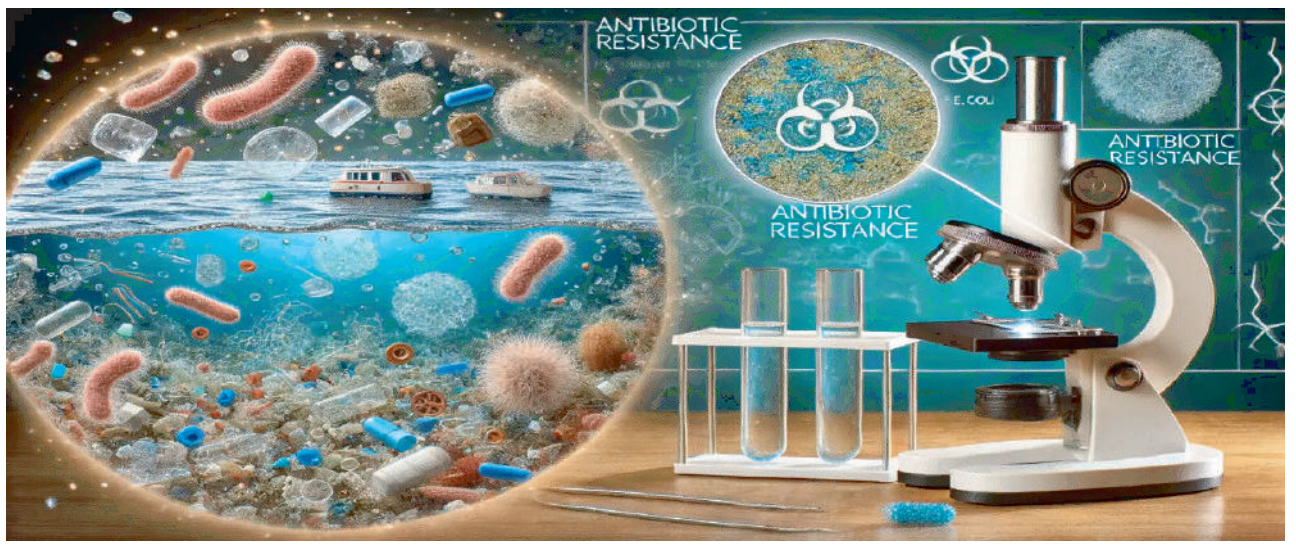

प्लास्टिक को तोड़ने वाले सूक्ष्मजीव प्लास्टिक प्रदूषण संकट का एक आशाजनक समाधान हैं, लेकिन शोध से पता चलता है कि यह प्रक्रिया अनजाने में एंटीबायोटिक प्रतिरोध में योगदान दे सकती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि प्लास्टिक, विशेष रूप से माइक्रोप्लास्टिक, एंटीबायोटिक प्रतिरोध जीन (एआरजी) को विकसित करने और फैलाने के लिए बैक्टीरिया के लिए एक आदर्श वातावरण बनाते हैं। कैसे प्लास्टिक ईंधन एंटीबायोटिक प्रतिरोध प्लास्टिक के कण, विशेष रूप से छोटे जिन्हें माइक्रोप्लास्टिक के रूप में जाना जाता है, सिर्फ पर्यावरण में नहीं बैठते हैं; वे माइक्रोबियल गतिविधि के लिए हॉटस्पॉट बन जाते हैं। यहाँ प्रमुख तंत्र का टूटना है:

बायोफिल्म निर्माण: प्लास्टिक बैक्टीरिया के लिए एक बड़ी, चिपचिपी सतह प्रदान करता है और एक सुरक्षात्मक परत बनाता है जिसे बायोफिल्म कहा जाता है। यह बायोफिल्म एक किले की तरह काम करता है, एंटीबायोटिक दवाओं और अन्य पर्यावरणीय तनावों से बैक्टीरिया को बचाता है। अध्ययनों से पता चला है कि माइक्रोप्लास्टिक पर बनने वाले बायोफिल्म अक्सर अन्य सतहों पर उन लोगों की तुलना में मजबूत और मोटे होते हैं, जिससे उन्हें एंटीबायोटिक दवाओं के लिए प्रवेश करना विशेष रूप से मुश्किल हो जाता है।

प्रदूषकों की एकाग्रता: प्लास्टिक को अपने परिवेश से अन्य प्रदूषकों को आकर्षित करने और अवशोषित करने के लिए जाना जाता है, जिसमें भारी धातु, जहरीले रसायन और, गंभीर रूप से, एंटीबायोटिक्स शामिल हैं। यह एक अत्यधिक केंद्रित माइक्रोएनवायरमेंट बनाता है जहां बैक्टीरिया, एंटीबायोटिक्स और एआरजी सभी निकटता में हैं। यह निकटता क्षैतिज जीन हस्तांतरण नामक प्रक्रिया के माध्यम से एआरजी प्राप्त करने वाले बैक्टीरिया की संभावना को काफी बढ़ाती है।

क्षैतिज जीन ट्रांसफर (एचजीटी): एचजीटी यह है कि बैक्टीरिया एंटीबायोटिक प्रतिरोध को प्रदान करने वाले जीन सहित आनुवंशिक जानकारी को कैसे साझा करते हैं। प्लास्टिक से जुड़े बायोफिल्म के केंद्रित वातावरण में, बैक्टीरिया इन प्रतिरोध जीन का आदान-प्रदान करने की अधिक संभावना रखते हैं। यह बैक्टीरिया की विभिन्न प्रजातियों के बीच भी प्रतिरोध के तेजी से प्रसार की अनुमति देता है।

तनाव प्रतिक्रिया: प्लास्टिक और अवशोषित प्रदूषकों की उपस्थिति रोगाणुओं में तनाव को प्रेरित कर सकती है। यह तनाव प्रतिक्रिया कुछ आनुवंशिक तंत्रों को ट्रिगर कर सकती है, जिनमें वे शामिल हैं जो बैक्टीरिया को नए जीन प्राप्त करने के लिए अधिक ग्रहणशील बनाते हैं, एंटीबायोटिक प्रतिरोध के प्रसार को और तेज करते हैं। संक्षेप में, प्लास्टिक अपशिष्ट सिर्फ पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करता है; यह एंटीबायोटिक प्रतिरोधी सुपरबग के लिए एक प्रजनन भूमि में बदल जाता है, जिससे प्लास्टिक प्रदूषण और बढ़ते वैश्विक स्वास्थ्य खतरे के बीच एक खतरनाक लिंक बन जाता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

आधुनिक शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह बच्चों को दुनिया से जोड़ती है।

आधुनिक शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह बच्चों को दुनिया से जोड़ती है। विजय गर्ग शिक्षा मानव जीवन का सबसे बड़ा खजाना है। शिक्षा के बिना व्यक्ति अधूरा है। जिस तरह समय के साथ सब कुछ बदला है, उसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में भी बड़े बदलाव आए हैं। आज की शिक्षा को आधुनिक शिक्षा कहा जाता है। प्राचीन काल में शिक्षा का मतलब केवल पढ़ना-लिखना और धार्मिक ज्ञान प्राप्त करना था, लेकिन आधुनिक शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है। अब शिक्षा का अर्थ है व्यक्ति के भीतर छिपे गुणों को पूर्णतः जागृत करना, उसे रोजगारपरक बनाना और जीवन में आगे बढ़ने के लिए तैयार करना।

आधुनिक शिक्षा में विज्ञान, तकनीक, कंप्यूटर, इंटरनेट और नई खोजों का ज्ञान दिया जाता है। आज स्कूलों और कॉलेजों में स्मार्ट क्लासेस, डिजिटल बोर्ड, ऑनलाइन स्टडी और वर्चुअल लाइब्रेरी जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। बच्चे अब सिर्फ़ शिक्षक की कॉपी पर लिखा हुआ ही नहीं पढ़ते, बल्कि वीडियो, एनिमेशन और प्रैक्टिकल के ज़रिए समझते भी हैं। इससे ज्ञान और भी ठोस और रोचक हो जाता है। आधुनिक शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह बच्चों को दुनिया से जोड़ती है। पहले शिक्षा किसी क्षेत्र या देश की सीमाओं तक ही सीमित थी, लेकिन अब इंटरनेट के माध्यम से छात्र घर बैठे ही विदेशी विद्वानों के व्याख्यान सुन सकते हैं और नई जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आधुनिक शिक्षा न केवल व्यक्ति को नौकरी के लिए तैयार करती है, बल्कि उसे एक अच्छा और ज़िम्मेदार नागरिक बनाने में भी मदद करती है।

इससे व्यक्ति की सोचने की क्षमता, निर्णय लेने की शक्ति और रचनात्मकता भी बढ़ती है। इससे समाज में जागरूकता आती है और लोग अंधविश्वासों से दूर रहते हैं। लेकिन यह भी सच है कि आधुनिक शिक्षा के कुछ नुकसान भी हैं। इंटरनेट और मोबाइल के अत्यधिक उपयोग के कारण, बच्चे कई बार पढ़ाई की बजाय मनोरंजन में खो जाते हैं। इसलिए, यह बेहद ज़रूरी हो जाता है कि माता-पिता और शिक्षक बच्चों का सही मार्गदर्शन करें। उपरोक्त बातों का सार यह है कि आधुनिक शिक्षा जीवन का आधार है। यह व्यक्ति को न केवल पढ़ना-लिखना सिखाती है, बल्कि उसे समाज में रहने, नए विचार रखने और भविष्य के लिए भी तैयार करती है। अगर हम आधुनिक शिक्षा का सही उपयोग करें, तो यह हमारे जीवन को समृद्ध और सफल बना सकती है।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

पंजाब की बाढ़

बरसात की बूंदें बरसीं बेइंतहा,
नदियाँ बनीं लहरों का कहर सदा।
खेतों की हरियाली डूब गई पानी में,
सपनों की फसल बह गई तूफ़ानी रवानी में।

गाँवों की गलियाँ नावों में बदलीं,
मकानों की दीवारें लहरों से ढलीं।
बचपन की किलकारियाँ भीगीं आँसुओं में,
माएँ ढूँढतीं छत, पिता भटकते सड़कों में।

क्या ये प्रकृति का प्रकोप है अकेला?
या इंसानों का लालच, जिसने राहें मोड़ा
झरनों का झेला।
नदियों को बाँध कर किया कैद हमने,
और अब वही नदियाँ माँग रही हक़ अपने।

पंजाब की धरती पुकार रही आज,
"संतुलन बनाओ, करो प्रकृति का सम्मान।"
वरना हर साल ये मंजर लौटेगा,
हर सपनों का आँगन यूँ ही रोएगा।

– डॉ सत्यवान सौरभ

भारी बारिश बरपा रही है कहर !

जलवायु परिवर्तन, अंधाधुंध विकास, अनियोजित शहरीकरण, वनों की अंधाधुंध कटाई, नदियों के किनारों पर अतिक्रमण व विभिन्न मानवजनित कारणों से आज संपूर्ण धरती पर बारिश का पैटर्न लगातार बदलता चला जा रहा है और हमें प्रकृति के रौद्र रूप का सामना करना पड़ रहा है।मानसून के दौरान कभी अचानक बादल फटने, कभी लगातार भारी वर्षा, तो कभी अल्प समय में रिकॉर्ड तोड़ बारिश ने न सिर्फ़ सामान्य जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है, बल्कि जान-माल की भारी क्षति भी पहुँचाई है। उत्तर भारत में इस साल बहुत ज्यादा बारिश हुई है और उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान , हरियाणा में जन-धन की व्यापक क्षति हुई है। पंजाब में तो बाढ़ से बहुत बुरा हाल हो गया है। बाढ़ से जहां एक ओर खेतों में खड़ी फसलें नष्ट हो चुकीं हैं, पशु धन हानि से लेकर मिट्टी की उर्वरता तक पर बहुत असर पड़ा है। अनेक लोग बाढ़ के कारण बेघर हो गए हैं।कहना ग़लत नहीं होगा कि बाढ़ के पानी ने अनेक स्थानों पर बहुत से महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचों तक को तहस-नहस कर दिया है।सच तो यह है कि बारिश के आगे अब लोग लाचार व असहाय नजर आ रहे हैं।इस बार मॉनसून का रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन रहा है। यदि हम यहां पर आंकड़ों की बात करें तो उत्तर-पश्चिम भारत (जिसमें उत्तर भारत शामिल है) में इस मॉनसून का औसत बारिश 21% अधिक रहा—पिछले 12 वर्षों में सबसे ज़्यादा बारिश की मात्रा। यह स्थिति 2013 के बाद पहली बार देखी गई है।विशेष रूप से अगस्त माह में बारिश ने 25 साल का रिकॉर्ड तोड़ते हुए सामान्य से लगभग 34.5% अधिक बारिश दर्ज की है।जून से अगस्त तक पूरे देश में मानसूनी वर्षा में 6.1%, जबकि उत्तर-पश्चिम भारत में 34.4% अधिक बारिश हुई। आंकड़े बताते हैं कि पंजाब में अब तक लगभग 1,000 गांव बाढ़ की चपेट में आए और 61,000 हेक्टेयर से अधिक खेत जलमग्न हो गए। लगभग 1.46 मिलियन (14.6 लाख) लोग प्रभावित हुए, जिन्हें बड़ी मात्रा में निकाला गया।एक रिपोर्ट के अनुसार, 29 लोगों की मौत हुई और हज़ारों लोग विस्थापित हुए; लगभग 300,000 एकड़ (₹121,400 हेक्टेयर) खेत, फसल कटने से पहले ही पानी में डूब गए। वहीं दूसरी ओर हिमाचल में बारिश और भूस्खलनों ने 326 लोगों की जान ले ली। अगस्त में 431.3 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई, जो 1949 के बाद सबसे अधिक थी।प्रदेश भर में 1,200 से अधिक सड़कें अवरुद्ध हो गये, कई घर ध्वस्त या क्षतिग्रस्त हो गये तथा लोगों को ₹25,000 राहत व अस्थाई शिविर उपलब्ध कराये गए। जम्मू कश्मीर में वैष्णो देवी के पास एक भयंकर भूस्खलन में कम से कम 30 लोगों की मौत हो गई। वहीं पर जम्मू में 368 मिमी वर्षा हुई जो सामान्य से 726% अधिक थी—यह अगस्त 23–27 के बीच रिकॉर्ड की गई।समाचार एजेंसी रायटर के अनुसार केवल एक दिन में 36 लोग मारे गए, और कई सेवाएँ बाधित हुईं। कुल मिलाकर, किस्तवाड़ में पहले ही 60 लोग मृत और 200 लापता थे; फिर अन्य घटनाओं से कुल गिरावट और मौतें बढ़ीं।उत्तराखंड में कई जिलों

(रुद्रप्रयाग, चमोली, बागेश्वर, टिहरी) में बादल फटने की घटनाओं से 7 मौतें, और 8 लोग लापता बताए जा रहे हैं। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि यह संकट की घड़ियां हैं, क्यों कि बारिश से पूरा जन-जीवन अस्त-व्यस्त हुआ है। देश के नागरिक संकट के वक्त में शासन से सहानुभूति और निर्णायक मदद की कार्रवाई की उम्मीद कर रहे हैं।शासन, प्रशासन व सरकार मदद हेतु कार्रवाई कर भी रही है। बाढ़ की तबाही से किसानों को बहुत नुक्सान पहुंचा है। विशेषकर पहाड़ी राज्यों में भारी बारिश से सड़कों का ताना-बाना बिखर गया है। बादल फटने की घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि ने व्यापक जन-धन की हानि की है। भूस्खलन की घटनाओं से सड़कों, पुलों, घरों व इंफ्रास्ट्रक्चर को जो नुकसान पहुंचा है, उसकी भरपाई करना इतना आसान नहीं है। कहना ग़लत नहीं होगा कि बारिश से संवेदनशील पहाड़ी राज्यों की अर्थव्यवस्था भी कहीं न कहीं खतरे में पड़ गई है। बाढ़ ने हजारों लोगों को विस्थापित कर दिया है। बारिश से उत्तर भारत के अनेक राज्यों में काफी नुकसान पहुंचा है।हर जगह त्राहि-त्राहि ऐसे समय में विशेष आपदा राहत की जरूरत महत्ती है। वास्तव में, राज्यों में विनाश के स्तर को देखते हुए तत्काल और ठोस हस्तक्षेप करने की जरूरत है। वक्त की मांग है कि इन क्षेत्रों के लिये विशेष राहत पैकेज की घोषणा हो। आपदा राहत निधि का त्वरित वितरण किया जाए। इसके साथ ही जरूरी है कि पीड़ित परिवारों को तुरंत सीधा वित्तीय हस्तांतरण किया जाए।एक बात और, यह समय आपदा प्रबंधन या राहत पर राजनीति करने का नहीं है।यह घोर संकट की घड़ी है और इस संकट की घड़ी से उबरने के लिये राजनीतिक मतभेदों को तत्काल दूर करने की आवश्यकता है। हाल फिलहाल,प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाना (रेस्क्यू ऑपरेशन) हमारी जिम्मेदारी है।अस्थायी आश्रय स्थल (राहत शिविर) स्थापित करना, पीड़ितों को समय पर भोजन, पानी, दवाइयाँ और कपड़े उपलब्ध कराना, उन्हें प्राथमिक उपचार और चिकित्सकीय सहायता देना तथा बच्चों, बुजुर्गों और दिव्यांगों को विशेष सहायता प्रदान करना हम सभी का सामूहिक दायित्व और कर्तव्य है। इसके साथ ही, हमें दीर्घकालिक आपदा प्रबंधन पर भी विशेष ध्यान देना होगा।साथ ही साथ, कहना चाहूंगा कि बरसात सुख की हो, इसके लिए ज़रूरी है कि हम प्रकृति की भी मर्यादा को समझें और उसका सदैव सम्मान करें। हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि प्रकृति हमारी जीवनदायिनी है। यदि हम उसके साथ छेड़छाड़ करेंगे—पेड़ काटेंगे, नदियों को प्रदूषित करेंगे, पहाड़ों और जंगलों को नष्ट करेंगे—तो इसका सीधा दुष्परिणाम हमें ही भुगतना पड़ेगा। बाढ़, भूकंप, सूखा, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन इसी का परिणाम हैं। इसलिए हमें चाहिए कि हम प्रकृति का संरक्षण करें, पेड़ लगाएँ, जल-संरक्षण करें और प्रदूषण कम करें।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

खतरनाक मौसम में भी स्कूल खुले क्यों?

बारिश और बाढ़ की स्थिति में बच्चों और शिक्षकों को स्कूल बुलाना उनकी जान से खिलवाड़ है। जर्जर इमारतें, गंदगी, जलभराव और यातायात बाधाएँ पहले से ही खतरनाक हालात पैदा कर चुकी हैं। ऐसे में पढ़ाई से ज़्यादा बच्चों की सुरक्षा पर ध्यान देना ज़रूरी है। शिक्षा तभी सार्थक है जब बच्चे सुरक्षित माहौल में सीखें। सरकार को चाहिए कि संकट की घड़ी में औपचारिकताओं से ऊपर उठकर तुरंत अवकाश घोषित करे, ताकि संभावित हादसों से बचा जा सके।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

बरसात का मौसम बच्चों के लिए रोमांच और खेलने का समय माना जाता है, लेकिन जब यही मौसम बाढ़, गंदगी और जीवन-जोखिम का कारण बन जाए, तब सवाल उठता है कि हमारी व्यवस्था आखिर बच्चों और शिक्षकों की सुरक्षा के प्रति कितनी संवेदनशील है। हाल ही में हरियाणा प्रदेश के 18 जिलों में बाढ़ का हाई अलर्ट घोषित होने के बावजूद स्कूलों को बंद न करने का निर्णय इस संवेदनशीलता पर गंभीर प्रश्नचिन्ह लगाता है।

स्कूल भवनों की जर्जर हालत किसी से छिपी नहीं है। कई जगहों पर दीवारों में दरारें हैं, छतों से पानी टपकता है और फर्श गीले होकर दुर्घटनाओं को न्यौता देते हैं। जिन इमारतों में सामान्य दिनों में पढ़ाई मुश्किल हो, वहां लगातार बारिश के दौरान बच्चों और स्टाफ की सुरक्षा कैसे सुनिश्चित की जा सकती है? कई सरकारी और ग्रामीण स्कूल तो वैसे भी मरम्मत और रखरखाव के अभाव में खंडहर जैसी स्थिति में हैं।

साफ-सफाई की समस्या भी गंभीर है। गंदगी, पानी भराव और खुले नाले स्कूल परिसरों को अस्वस्थ और खतरनाक बना देते हैं। बारिश के दिनों में मच्छरों और संक्रामक बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। ऐसे में बच्चों को स्कूल बुलाना केवल उनकी जान से खिलवाड़ करना है।

यही नहीं, बाढ़ और जलभराव के कारण परिवहन व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हो जाती है। बच्चे और शिक्षक स्कूल तक पहुँचने में भारी कठिनाइयों का सामना करते हैं। कई इलाकों में सड़कों पर घुटनों-घुटनों पानी भरा होता है, कहीं पुल टूटे हैं तो कहीं नदियाँ उफान पर हैं। बच्चों का ऐसे हालात में रोज़ाना आना-जाना केवल प्रशासन की संवेदनहीनता का उदाहरण है।

सबसे हैरानी की बात यह है कि सरकार और उच्च अधिकारी जानते हुए भी स्कूल बंद करने का आदेश नहीं देते। यह निर्णय किसी मजबूरी से अधिक औपचारिकता जैसा लगता है—जैसे केवल आदेश देकर अपनी ज़िम्मेदारी निभा दी गई हो। सवाल यह उठता है कि क्या बच्चों की सुरक्षा से बढ़कर भी कोई औपचारिकता हो सकती है? अगर हादसा हो जाए तो क्या प्रशासन की यह चुप्पी और लापरवाही माफ़ की जा सकेगी?

दुनिया भर में आपदा और संकट के समय शिक्षा व्यवस्था पर अस्थायी रोक लगाना कोई नई बात नहीं है। कोरोना काल में महीनों तक स्कूल बंद रहे और वैकल्पिक माध्यमों से शिक्षा को आगे बढ़ाया गया। जब महामारी के दौर में बच्चों की सुरक्षा सर्वोपरि मानी गई, तो बाढ़ और प्राकृतिक आपदा की स्थिति में वही संवेदनशीलता क्यों नहीं दिखाई जाती?

यहाँ तर्क दिया जा सकता है कि पढ़ाई का नुकसान न हो, इसलिए स्कूल बंद नहीं किए जा सकते। लेकिन क्या पढ़ाई का महत्व बच्चों और शिक्षकों की जान से बड़ा है? शिक्षा तभी सार्थक है जब छात्र और शिक्षक सुरक्षित हों। गीली और टूटती छतों के नीचे, पानी से भरे आंगनों में और बीमारी के खौफ में पढ़ाई कराने का निर्णय शिक्षा नहीं, बल्कि मजबूरी और लापरवाही कहलाएगी।

दरअसल, असली समस्या हमारी नीति और नीयत दोनों की है। जिन अधिकारियों को स्थानीय हालात देखकर तुरंत निर्णय लेना चाहिए, वे केवल ऊपर से आए आदेशों का इंतज़ार करते रहते हैं। और ऊपर बैठे नीति-निर्माता आमतौर पर कागज़ी रिपोर्टों और फाइलों के आधार पर निर्णय लेते हैं। नतीजा यह होता है कि जमीनी हालात और सरकारी आदेशों के बीच बड़ा अंतर रह जाता है।

आज ज़रूरत इस बात की है कि शिक्षा विभाग और आपदा प्रबंधन विभाग मिलकर एक स्पष्ट नीति बनाएँ। इसमें यह तय हो कि किन परिस्थितियों में स्वतः स्कूल बंद माने जाएँगे। जैसे – जब किसी जिले में बाढ़ का हाई अलर्ट जारी हो, जब लगातार बारिश से जीवन अस्त-व्यस्त हो जाए, या जब भवनों की सुरक्षा संदिग्ध हो। इससे निचले स्तर के अधिकारी समय रहते फैसला ले सकेंगे और बच्चों को जोखिम से बचाया जा सकेगा।

इसके साथ-साथ स्कूल भवनों की नियमित मरम्मत और रखरखाव पर भी ज़ोर दिया जाना चाहिए। हर बरसात में छत टपकना और दीवारें गिरना हमारी शिक्षा व्यवस्था की पोल खोल देता है। यदि बच्चों के लिए सुरक्षित भवन तक उपलब्ध नहीं करा सकते तो फिर शिक्षा के अधिकार की बातें खोखली साबित होती हैं।

एक और पहलू पर ध्यान देना ज़रूरी है। जब सरकारें 'स्मार्ट क्लास', 'डिजिटल एजुकेशन' और 'न्यू एजुकेशन पॉलिसी' की बात करती हैं, तो क्यों न आपदा के समय ऑनलाइन या वैकल्पिक शिक्षा का सहारा लिया जाए? बच्चों की पढ़ाई बिना उनकी सुरक्षा से समझौता किए जारी रखी जा सकती है। लेकिन दुर्भाग्य है कि ऐसे दूरदर्शी कदमों की जगह केवल आदेश जारी करने की औपचारिकता निभाई जाती है।

बच्चे देश का भविष्य हैं—यह वाक्य हम बार-बार सुनते हैं। लेकिन जब इस भविष्य को सुरक्षित रखने का समय आता है, तो हमारी व्यवस्था सबसे ज्यादा असफल साबित होती है। बारिश और बाढ़ जैसे हालात में स्कूलों को खुला रखना बच्चों और शिक्षकों दोनों की जान को खतरे में डालने जैसा है। यह केवल संवेदनहीनता ही नहीं, बल्कि लापरवाही की पराकाष्ठा है।

ओडिशा के यात्री ऐप की मदद से हमारी बस और चिलिका बोटिंग टिकट खरीद सकते हैं

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : आवास एवं शहरी विकास विभाग ने ओडिशा यात्री ऐप की क्षमताओं को बढ़ाया है। अब इस ऐप के ज़रिए आप हमारी बसों और सतपाड़ा में चिल्का बोटिंग के लिए टिकट खरीद सकते हैं। पर्यटकों और यात्रियों के अनुभव को और भी सुखद और आसान बनाने के उद्देश्य से ऐप में यह नया फ़ीचर शामिल किया गया है।आप इस ऐप के ज़रिए राज्य सरकार की बस सेवा के तहत चलने वाली किसी भी बस के लिए टिकट बुक कर सकते हैं और बिना किसी परेशानी के सुरक्षित और आरामदायक बस यात्रा का आनंद ले सकते हैं। इसी तरह, चिल्का आने वाले पर्यटक इस ऐप के ज़रिए टिकट बुक करके अपनी

सुविधानुसार सातपाड़ा में नौका विहार के लिए टिकट बुक कर सकते हैं। नौका विहार शुरू होने से पहले इस डिजिटल टिकट की जाँच की जाएगी और यात्रा की अनुमति दी जाएगी।

यह ऐप सभी एंड्रॉइड प्लेटफ़ॉर्म पर उपलब्ध है, लेकिन निकट भविष्य में यह आईओएस पर भी उपलब्ध होगा। इसके साथ ही, यात्रियों की प्रतिक्रिया के आधार पर टिकट बुकिंग प्रणाली में आवश्यक सुधार भी किए जाएँगे। आवास और शहरी विकास विभाग की प्रमुख प्रशासनिक सचिव श्रीमती उषा पाढ़ी ने कहा कि ओडिशा यात्री केवल एक डिजिटल सेवा नहीं है, बल्कि यात्रियों को सार्वभौमिक, तकनीक-आधारित, त्रुटि-मुक्त सेवा प्रदान करने का एक विज़न है। इस डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म की मदद से बस सेवाएँ और नौका विहार एक घंटे के भीतर उपलब्ध हो सकेंगे।

चाईबासा मुख्यालय में बैंक के समीप ग्राहक से पांच लाख की लूट

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला। दशकों से झारखंड का शान्त शहर रहा चाईबासा मुख्यालय में अपराधियों ने सोमवार दिनदहाड़े हथियार के बल पर एक व्यक्ति से पांच लाख रुपये लूट पर पुलिस को चुनौती दे डाली है । यह घटना तब हुई जब बैंक खुलने पर पेट्रल पंप कर्मी पैसे जमा करने आये थे।जानकारी के अनुसार गांधी मैदान के पास स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा शाखा में पेट्रोल पम्प कर्मी विमलेश कुमार और संजय नंदी पांच लाख रुपये बैंक में जमा करने जा रहे थे। पहले से घात लगकार बैठे अपराधियों ने विमलेश कुमार को हथियार के बट से घायल कर दिया। वहीं दूसरे कर्मी संजय नंदी को हथियार के भय दिखाकर रुपये से भरा बैग लूट कर फरार हो गए। वहीं पूरी घटना बैंक के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। वहीं की सूचना मिलते हुए सादर थाना प्रभारी तरुण कुमार पहुंचे और घायल विमलेश कुमार को अस्पताल भेजा। साथ ही अपराधियों के भागने की दिशा के तरफ की पुलिस थाना को अलर्ट कर दिया गया है। उन्होंने भरोसा दिया कि अपराधी जल्द पकड़े जाएंगे। घटना बाद पहुंची

पुलिस ने दोनों कर्मियों से पूछताछ किया। सबसे बड़ी बात तो यह है कि भीड़भाड़ वाले इलाके में घटना के समय कई लोग थे। लेकिन किसी ने बचाने की हिम्मत नहीं किया।

राष्ट्रीय स्त्री शक्ति सम्मान-2025 से सम्मानित हुई सीमा यादव

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में गंतव्य संस्थान के द्वारा देश की कई प्रतिभाशाली स्त्रियों को राष्ट्रीय स्त्री शक्ति सम्मान-2025 एवं कई प्रतिभाशाली पुरुषों को गंतव्य राष्ट्रीय गौरव सम्मान-2025 से अलंकृत किया गया। यह सम्मान देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के पुत्र सुनील शास्त्री (पूर्व सांसद एवं मंत्री), दिल्ली के पूर्व मंत्री मंगतराम सिंघल, विधायक राजकुमार भाटिया, निगम पार्षद नेहा अग्रवाल व अन्य गणमान्य विभूतियों के कर कमलों द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये प्रतिभावानो को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली की महिलाओं को जागरूक करने व समाज के लिये बेहतर कार्य करने के लिए दिल्ली की सीमा यादव को स्त्री शक्ति सम्मान 2025 से अलंकृत किया गया।

इस कार्यक्रम के आयोजक डॉ. अरविंद कुमार त्यागी अध्यक्ष गंतव्य संस्थान व अर्चना त्यागी रहे। इस अवसर पर कई लोगों ने सीमा यादव को शुभकामनायें प्रेषित की। मंच का संचालन कवि आशीष श्रीवास्तव ने बेहतरीन अंदाज़ में किया।

इस मौके पर सीमा यादव ने गंतव्य संस्थान की पूरी टीम का धन्यवाद किया।

राज्य का सर्वाधिक बड़े औद्योगिक जिले के रोजगार मेले में 206 युवा रोजगार पाने हेतु चयनित

सरायकेला खरसावां जहां 1200 उद्योगों का जाल, 700 करीब कार्यरत 500 बीमारू !

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

जमशेदपुर। झारखंड का सर्वाधिक बड़ा औधोगिक जिला जहां बारह सौ करीब छोटे- मझले-बड़े उद्योग का भरमार है ,उसी जिले के लोगों को उद्योगों में रोजगार काफी कम मिलना बड़ी समस्या है । सरायकेला के अंतिम शासक राजा महाराजा आदित्य प्रताप के नाम से आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्र नामकरण हुआ है जहां करीब 1200 उद्योगों का भरमार है । जहां स्थानीय युवाओं को रोजगार नहीं मिलना सबसे बड़ी विकराल समस्या है इस जिले की ।सच्चाई तो जिले में रुंगटा जैसे बडे प्रतिष्ठान द्वारा लोगों का जमीन अधिग्रहण कर बड़ा औद्योगिक इकाई तैयार कर चुका है ,पर कितने लोगों को रोजगार मिला है इसकी तहक़ीकात कर बयां करने वाला कोई नहीं है सरायकेला खरसावां अथवा झारखंड राज्य में ।इसके अलावा अनेक उदाहरण है जिले में जहां सरकारी नियम बड़े फाईलों तक सीमित रह जाते है विगत दशकों से ।

हालांकि उर्जा वान जिला नियोजन पदाधिकारी तपनो द्वारा अपने कार्यालय सरायकेला खरसावां सह मॉडल कैरियर सेन्टर की तरफ से अब रोजगार मेले का आयोजन हो रहा है , जहां युवाओं का रूझान देखा गया है ।

जिन उद्योग ने इस मेले में शिरकत की उनमें रामकृष्ण फोर्जिंगस लिमिटेड, श्याम स्टील, मयंक इंटरप्राइजेज, यूनाइटेड एयर एक्सप्रेस, प्रधान कंस्ट्रक्शन, एलआईसी ऑफ़ इंडिया, युवा शक्ति फाउंडेशन, टैलेंटनेक्सा सर्विसेज लिमिटेड, टाटा वोल्टास एवं बीएन महिंद्रा ट्रैक्टर्स सहित कुल 13 संस्थानों में नियुक्ति हेतु चयन प्रक्रिया हुई।

इस संबंध में जिला नियोजन पदाधिकारी आलोक कुमार तोपनो ने बताया कि रोजगार मेला में रामकृष्ण फोर्जिंगस लिमिटेड, श्याम स्टील, मयंक इंटरप्राइजेज, यूनाइटेड एयर एक्सप्रेस, प्रधान कंस्ट्रक्शन, एलआईसी ऑफ़ इंडिया, युवा शक्ति फाउंडेशन, टैलेंटनेक्सा सर्विसेज लिमिटेड, टाटा वोल्टास एवं बीएन महिंद्रा ट्रैक्टर्स सहित कुल 13 संस्थानों के अधिकारियों द्वारा एचएमसी ऑपरेटर, विएमसी ऑपरेटर, रोबोट ऑटोमेशन इंजीनियर, फोर्जिंग क्वालिटी असिस्टेंट, वेल्डर, हाउस कीपर, सिक्योरिटी गार्ड, ड्रिल ऑपरेटर, ग्राइंडिंग एन्ड मिलिंग ऑपरेटर, गैस कटर, क्रेन ऑपरेटर, ऑटो इलेक्ट्रीशियन, हैवी व्हीकल ड्राइवर, स्टोर कीपर, एसी तकनीशियन, सर्विस मैकेनिक, सेल्स मैनेजर, टेली कॉलर सहित विभिन्न पदों पर सरायकेला-खरसावां एवं जमशेदपुर में नियुक्त करने हेतु 206 अभ्यर्थियों को शॉर्टलिस्ट किया गया।

उन्होंने बताया कि जिला नियोजनालय सह मॉडल कैरियर सेन्टर, सरायकेला-खरसावां के सौजन्य से नियमित रूप से रोजगार शिविर एवं रोजगार मेला का आयोजन किया जाता है। उन्होंने रोजगार की तलाश कर रहे जिले के सभी व्यक्तियों से आह्वान किया कि भविष्य में भी रोजगार मेला एवं भर्ती कैंप में अधिक से अधिक संख्या में भाग ले एवं रोजगार के अवसर प्राप्त करें। इसकी पूरी प्रक्रिया पूर्णता निशुल्क है।

रोजगार मेला में जिला नियोजन पदाधिकारी आलोक कुमार तोपनो, वाईपी रवि प्रकाश सिंह सहित जिला नियोजनालय के कर्मी सुरेंद्र रजक, सुजीत सरदार व अन्य एवं संबंधित संस्थानों के एचआर मैनेजर उपस्थित रहे।

जगतसिंहपुर: एम्बुलेंस में ऑक्सीजन खत्म, एक व्यक्ति की मौत

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : जगतसिंहपुर में एक महिला मरीज़ की कथित तौर पर ऑक्सीजन खत्म होने से मौत हो गई। यह घटना रविवार देर रात हुई और एम्बुलेंस में तोड़फोड़ की गई। एम्बुलेंस चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस मौके पर पहुँची और वाहन को जब्त कर थाने ले आई।मृतक महिला की पहचान जगतसिंहपुर प्रखंड के आला पंचायत ब्राह्मणखंड क्षेत्र निवासी वकील पीतांबर पांडा की पत्नी कमला पांडा के रूप में हुई है। सीने में दर्द होने पर परिजनों ने उन्हें कल रात करीब 11:30 बजे जगतसिंहपुर मुख्य अस्पताल में भर्ती कराया था। डॉक्टर को दिल का दौरा पड़ने का संदेह हुआ और उन्होंने उन्हें कटक बड़ा अस्पताल भेज दिया। उस समय कोई सरकारी एम्बुलेंस नहीं थी। जब परिवार ने 108 एम्बुलेंस से संपर्क किया, तो उन्हें बताया गया कि एम्बुलेंस 40 मिनट देरी से आएगी। नतीजतन, परिवार महिला को एक निजी एम्बुलेंस से कटक बड़ा अस्पताल ले गया। हालांकि, दो किलोमीटर का सफर तय करने के बाद गोपालसागर के पास एम्बुलेंस में ऑक्सीजन खत्म हो गई और मरीज की कथित तौर पर वहीं मौत हो गई। जिससे देर रात घटनास्थल पर तनाव फैल गया। एम्बुलेंस में तोड़फोड़ होने पर चालक मौके से फरार हो गया।

इस बात की जांच शुरू कर दी गई है कि सरकारी एम्बुलेंस क्यों उपलब्ध नहीं थी और निजी एम्बुलेंस में ऑक्सीजन क्यों खत्म हो गई। एक टीम ने आज उस डॉक्टर से पूछताछ की जो कल रात वहां मौजूद था। दूसरी ओर, निजी एम्बुलेंस के निरीक्षण की ज़िम्मेदारी परिवहन कार्यालय की है। जब किसी एम्बुलेंस को लाइसेंस दिया जाता है, तो उसकी जाँच ज़रूर की जाती है कि उसमें ज़रूरी उपकरण हैं या नहीं, वह मरीज़ों को ले जाने के लिए उपयुक्त है या नहीं। इसी तरह, नियम है कि एटीओ और एमवीआई मरीज़ों की देखभाल में लगी एम्बुलेंस का नियमित निरीक्षण करें। स्वास्थ्य विभाग भी परिवहन विभाग के साथ मिलकर निजी एम्बुलेंस का निरीक्षण करना चाहिए, ऐसा एटीओ दीपक कुमार सेठी ने बताया। वहीं, बताया जा रहा है कि जिला कलेक्टर ने इस संबंध में सीडीएमओ से रिपोर्ट मांगी है। बताया जा रहा है कि जांच पूरी होने के बाद कल जिला कलेक्टर को रिपोर्ट सौंप दी जाएगी।

केदारनाथ-हेमकुंड साहिब रोपवे परियोजनाओं पर हुआ समझौता

परिवहन विशेष न्यूज

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की उपस्थिति में मंगलवार को सचिवालय में राज्य सरकार और नेशनल हाईवे लॉजिस्टिक्स मैनेजमेंट लिमिटेड (एनएचएलएमएल) के बीच बड़ा समझौता हुआ। इस करार के तहत केदारनाथ और हेमकुंड साहिब में रोपवे परियोजनाओं का विकास किया जाएगा।

समझौते के अनुसार इक्विटी भागीदारी में एनएचएलएमएल की 51 और राज्य सरकार की 49 फीसदी हिस्सेदारी होगी। वहीं राजस्व साझेदारी के तहत 90 प्रतिशत धनराशि उत्तराखंड में पर्यटन, परिवहन और गतिशीलता को मजबूत करने पर खर्च होगी।

मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि करीब 4100 करोड़ की लागत से सोनप्रयाग-केदारनाथ (12.9 किमी) और 2700 करोड़ की लागत से गोविंदघाट-हेमकुंड साहिब (12.4 किमी) रोपवे परियोजनाओं को मंजूरी मिल चुकी है। ये परियोजनाएं श्रद्धालुओं की यात्रा को सुगम बनाने के साथ ही पर्यटन, रोजगार और पर्यावरण संरक्षण

में नए आयाम स्थापित करेंगी।

केंद्रीय सड़क परिवहन राज्य मंत्री ने इसे राज्य के लिए ऐतिहासिक दिन बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में उत्तराखंड में विकास कार्य तेजी से हो रहे हैं। पर्यटन मंत्री ने कहा कि रोपवे से स्थानीय आर्थिकी और रोजगार को सीधा लाभ मिलेगा।

इस मौके पर प्रमुख सचिव आर.के. सुधांशु, सचिव दिलीप जावलकर, एनएचएलएमएल के सीईओ राजेश मलिक समेत केंद्र और राज्य के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

जूनियर इंजीनियर्स काउंसिल सिटी सर्कल अमृतसर के प्रधान इंजीनियर रणजीत सिंह वरियाम की अगुवाई में उनकी पूरी टीम ने आज अमृतसर में इंजीनियर श्री राजीव पाराशर जी को उनकी बेहतरीन सेवाओं और बॉर्डर ज़ोन के मुख्य इंजीनियर का कार्यभार संभालने पर सम्मानित किया।

अमृतसर 2 सितंबर (साहिल बेरी)

इस अवसर पर काउंसिल ऑफ जूनियर इंजीनियर्स सिटी सर्कल अमृतसर की समिति ने बॉर्डर ज़ोन में नियुक्त हुए मुख्य इंजीनियर श्री राजीव पाराशर जी से मुलाकात कर उनका स्वागत किया। साथ ही शहरी हल्का अमृतसर के अधीन कार्यरत JE/AAE अधिकारियों को ड्यूटी के दौरान आ रही कठिनाइयों से भी अवगत करवाया गया। श्री पाराशर ने इन समस्याओं का समय रहते समाधान करवाने का आश्वासन दिया। इस मौके पर इंजीनियर रणजीत सिंह वरियाम, इंजीनियर मनिंदर सिंह, इंजीनियर प्रेम सिंह, इंजीनियर हरदीप सिंह, इंजीनियर राजीव कुमार, इंजीनियर हरिंदर सिंह, इंजीनियर विमल कुमार, इंजीनियर रणजीत सिंह, इंजीनियर अनुज नारंग तथा विशेष रूप से पहुंचे इंजीनियर शशि पाल उपस्थित रहे।

डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, सीएनआई ने बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए ऑपरेशन फेथ इन एक्शन शुरू किया

अमृतसर, 2 सितंबर (साहिल बेरी)

अमृतसर के सीमावर्ती क्षेत्र के गांवों में आई विनाशकारी बाढ़ के बीच, डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया (सीएनआई) ने आशा की एक नई किरण प्रदान की है। ऑपरेशन फेथ इन एक्शन, एक व्यापक पहल, हजारों प्रभावित निवासियों को राहत पहुंचा रही है। डायोसिस के मन में इससे भी अधिक बहुत कुछ है, जिसमें पीड़ितों को बाढ़-उपरंत राहत प्रदान करना भी शामिल है।

डायोसिस लगातार जिला प्रशासन और स्थानीय विधान सभा सदस्य के संपर्क में है। इसने उन बाढ़ प्रभावित गांवों तक भी पहुंच बना ली है, जहां पहले पहुंचना संभव नहीं था। गांवों से संपूर्ण रूप से परिचित और स्थापित संपर्क संसाधनों वाले व्यक्तियों की दो समर्पित टीमें राहत कार्यों की पूर्ण कवरेज और सफलता सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास कर रही हैं।

डायोसिस के प्रशासक रेवरेंड अयूब डैनियल और अमृतसर डायोसिसन ट्रस्ट एसोसिएशन के सचिव श्री डैनियल बी दास के नेतृत्व में एक टीम अजनाला क्षेत्र में रमदास, मलिकपुर और जुजोवाल को कवर कर रही है। दूसरी टीम, जिसका नेतृत्व वित्त अधिकारी श्री ओम प्रकाश, बिशप के चैपलेन रेव मरकुस मसीह और डायोसिस के संचार विभाग के श्री शक्ति मल कर रहे हैं, डेरा बाबा नानक में तलवंडी तपाला, चक बाला, थोबा और दयाल भट्टी को कवर कर रही है।

गहरे पानी में से चल कर, डायोसिस की राहत टीमें जरूरतमंद लोगों को भोजन, चिकित्सा आपूर्ति और आश्रय प्रदान करने के लिए कई कठिनाइयों का सामना कर रही हैं। श्री ओम प्रकाश ने कहा, ₹हम डेरा बाबा नानक के तलवंडी तपाला जैसे गाँवों तक पहुंचे हैं, जहाँ लोग बिना भोजन या चिकित्सा देखभाल के फँसे हुए थे। हम पंजग्रही, नंगल सोहल और रूढेवाल का भी दौरा करेंगे। मैंने अजनाला के चक बाला का दौरा किया, जहाँ पहले कोई पहुँच नहीं थी।₹"हमारी टीमें थोबा, सूफ़ियाँ, दयाल भट्टी, मलिकपुर, जूजोवाल और फतेहगढ़ चूड़ियां गांवों में सक्रिय रूप से काम कर रही हैं और आवश्यक सामान पहुंचाने के लिए गहरे पानी में से होकर जा रही हैं।पानी कडियाल मोतला और भिंडी सैदां की ओर बढ़ रहा है और इन गाँवों तक पहुँच कट गई है। हम जल्द ही राहत पहुँचाने के लिए वहाँ पहुँचेंगे," उन्होंने आगे कहा।

डायोसिसन सोशल एम्पावरमेंट एंड एजुकेशन प्रोजेक्ट के परियोजना अधिकारी श्री सैमसन राम अजनाला में रहते हैं और प्रतिदिन की परिस्थिति पर निगरानी रखे हुए हैं।ज़मीनी स्तर पर स्थिति बहुत ख़राब है, और बाढ़ का पानी अपने साथ कई चुनौतियां लेकर आ रहा है। श्री ओम प्रकाश ने बताया, ₹बाढ़ के पानी में तैरते मृत पशुओं और चूहों की बदबू के कारण गांवों में रहना मुश्क़लि हो गया है।₹ उन्होंने बताया, ₹यहां तक कि सांप और चूहे भी पेड़ों पर शरण ले रहे हैं, जो स्थिति की गंभीरता और बीमारियों के फैलने की उच्च संभावना को दर्शाता है।₹ श्री डैनियल बी दास ने कहा, ₹रमदास के गग्गर गांव में एक युवक की सांप के काटने से उस समय मौत हो गई जब वह अपने घर के अंदर अपने सामान का जायज़ा लेने गया था।₹डायोसिस ने अमृतसर में दित मेमोरियल रिसोर्स सेंटर और अजनाला में बेरिंग स्कूल में आश्रय स्थल स्थापित किए हैं, ताकि जरूरत पड़ने पर बाढ़ से विस्थापित लोगों को सुरक्षित आश्रय प्रदान किया जा सके। डायोसिस ने रोग फैलने के बढ़ते खतरे से निपटने के लिए प्रभावित क्षेत्रों में चिकित्सा शिविर आयोजित करने की योजना भी बनाई है। श्री ओम प्रकाश ने कहा, ₹हम सरकार के चिकित्सा राहत कार्यों का आकलन कर रहे हैं और उसके अनुसार अपने प्रयासों को संरेखित करेंगे, तथा सरकार की सिफारिशों के अनुरूप तैयार चिकित्सा किट वितरित करेंगे।₹

इस उल्लेखनीय प्रयास के पीछे स्थानीय चर्चों के स्वयंसेवकों का समर्पण है, जो बाढ़ पीड़ितों के लिए लंगर बना और परोस रहे हैं। राइट रेवरेंड मनोज चरन, बिशप, डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, चर्च ऑफ़ नार्थ इंडिया ने कहा, ₹हम समन्वित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करने के लिए सरकारी विभागों और स्थानीय अधिकारियों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।₹डायोसिस के प्रयास अमृतसर के उन लोगों के लिए आशा की किरण हैं, जो बाढ़ के विनाशकारी प्रभाव से निपटने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इस समय पानी का स्तर बहुत ऊँचा है। राहत और बचाव कार्यों में लगे सभी संगठनों का उत्साह भी बहुत ऊँचा है।

पूर्व निर्धारित मानदंडों व नियमानुसार ही रॉयल्टी के पैसे काटे व भुगतान किये जाते हैं - एस ई आर एन्ड बी (राउरकेला अतिरिक्त प्रभार)

वर्तमान व्यवस्था में कोई भी बड़े टेंडर लेकर पहाड़ काटने की ताकत रख सकता है वर्तमान व्यवस्था को जांच एजेंसी द्वारा खंगाला जाए – प्रदेश अध्यक्ष एनसीपी

राउरकेला - निर्माण के संबंधित विभिन्न विभागों में सरकार की ओर से विसंगति रेखांकित की गई है जिससे वास्तविक रूप से रेत,गिट्टी, मुरूम व मिट्टी जैसे पदार्थों का प्रयोग बिना वास्तविक निरीक्षण व प्रयोग किए गए पदार्थ के स्त्रोत की पुष्टि किए बिना ही पूर्व निर्धारित मानदंडों के अनुसार रॉयल्टी के पैसे काट लेना व वाई फॉर्म जमा नहीं करने पर रॉयल्टी का भुगतान नहीं करना अपने आप में विसंगतियों का पहाड़ है जिसका लाभ अवैध रूप से आपूर्ति कर्ताओं को सीधे तौर पर मिलता है।वही सरकारी राजस्व को सीधे तौर पर करोड़ों का नुकसान झेलना पड़ रहा है वॉलीबॉल सिस्टम में चल रहे विभिन्न विभाग एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप तो लगते हैं किंतु इसे रोकने का कोई ठोस प्रयास नहीं किया जा रहा।1एक अनुमान के अनुसार कई करोड़ के सड़क या भवन निर्माण का काम लेकर खुद के प्रोजेक्ट में वैध व अवैध तरीके से रेत गिट्टी का इस्तेमाल कर सकता है वैसे दूसरे प्रोजेक्ट को भी उसी स्रोत से आपूर्ति नहीं करता हो इसकी कोई गारंटी नहीं है न ही इस जांच करने की कोई कारगर व्यवस्था कार्यरत है, आने वाले समय में रेत,गिट्टी, मिट्टी, मोरम कहीं ना कहीं भ्रष्टाचार का पहाड़ बनने जा रहा है इस बात से कतई इंकार नहीं किया जा सकता।1पत्थर व गिट्टी के खनन में ब्लास्टिंग मेटेरियल पर उचित निगरानी से इस पर लगाम लगाया जा सकता है।1वहीं एनडीए सरकार के मुखिया मोहन माझी से निवेदन है की उच्च स्तरीय जांच समिति के द्वारा इसकी जांच की जाए व गलतियां उजागर होने पर उस ठेकेदार को ब्लैकलिस्टेड ही नहीं बल्कि उनसे भुगतान किए गए राशि की भी वसूली हो उचित जुर्माने सहित 1 बीजू जनता दल सरकार के समय से चली आ रही इस व्यवस्था को बदलने की नितांत आवश्यकता जान पड़ती है ऐसा कहना है राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव का1

वहीं एस ई (सुपरिटेंडिंग इंजिनियर)- आर एन्ड बी राउरकेला अतिरिक्त प्रभार - अमित कुमार टुडू ने फोन पर कहा ₹ पूर्व निर्धारित प्रिसक्राइब्ड फॉरमैट में दर्शाये गए प्रावधानों के अनुसार ही रॉयल्टी के पैसे काटे जाते हैं वही फॉर्म जमा नहीं करने की स्थिति में रॉयल्टी के पैसे की भुगतान ठेकेदार को नहीं की जाती, विभिन्न निर्दीष्ट विभागों के अंतर्गत इसके पुर्ननिरीक्षण या पुष्टि करने का जिम्मा है, हमारा विभाग पूर्णतया सतर्कता से अपने आबंटित कार्य निष्पादन में प्रतिबद्ध है "

स्थानीय कोंट्रैक्टर एसोसिएशन के वरिष्ठ सदस्य टी एस के पात्रो के अनुसार ₹ वास्तविक कार्य गुणवत्ता के साथ करने वाले ठेकेदारों की अनदेखी हो रही है वहीं निम्न स्तरीय कार्य को बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे सच्चे व मेहनतकस ठेकेदार अब काम करने के प्रति इच्छुक नहीं है,आज के समय में ठेकेदार की स्थिति दयनीय है सरकार को कार्य सही तरीके से करवाने के लिए एक स्वस्थ वातावरण बनाने की आवश्यकता पर जोर देना चाहिए, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता की रेत व गिट्टी चोरियां बिलकुल भी नहीं होती"

झारखंड से ज़ेवरात चोरी कर बिहार में बेचने वाले चोर एसएसपी चंदन सिन्हा में जाल में फंसे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, रांची के कई इलाकों से घरों में चोरी कर जेवरात को बिहार खपाने वाले गिरोह के दो शातिर चोर को पुलिस ने पकड़ा है. पकड़े गए आरोपियों में सन्नी कुमार साहु और आलोक कुमार सिंह शामिल है. डीआईजी सह एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा के आदेश पर गठित टीम ने दोनों आरोपियों को पकड़ा है.

दोनों सुखदेवनगर थाना क्षेत्र का रहने वाले है. इनकी गिरफ्तारी से रांची पुलिस के कई अलग-अलग थाना क्षेत्र में हुए चोरी कांड का खुलासा हुआ है. उक्त जानकारी एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने प्रेसवार्ता में दी. उन्होंने कहा कि इनलोगों का सबसे बड़ा कनेक्शन बिहार स्थित नवादा जिला से जुड़ा है.

चोरी के जेवरात को नवादा में खपाने का काम करता है. इसमें कई अन्य लोग भी शामिल है. जिनकी गिरफ्तारी के लिए रांची पुलिस की टीम बिहार में छापेमारी कर रही है.

पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने कहा कि 18 अगस्त को समय करीब 12:30 बजे दिन में अपाची मोटरसाईकिल JH01EZ-4947 से जयप्रकाश नगर, अरसण्डे पहुँच गये और पीला रंग के दो तत्ला मकान के चाहरदिवारी को फांद कर मुख्य दरवाजा में लगे ताला को तोड़कर घर के अंदर प्रवेश किये तथा घर के सभी कमरो में कीमती समान की खोजबीन किये जाने पर घर के एक कमरे में अलमीरा से सोने का जेवरात से भरा थैला एवं बिस्तर पर पड़ा मोबाईल को लेकर भाग गये.

चोरी की जेवरात को ठिकाना लगाने के लिए घटना की तिथि को ही संध्या में बस से नवादा, बिहार के लिए निकल गये. फिर दूसरे दिन सुबह में नवादा, बिहार पहुँचकर सोनू एवं राजेश को उक्त जेवर बेच दिया गया, जिसके एवज में 12 लाख रूपया प्राप्त हुआ. प्राप्त रकम में से 01 लाख रूपया आलोक को हिस्सेदारी के रूप में दिया.

एसएसपी ने कहा कि दोनों की गिरफ्तारी के बाद कांके थाना क्षेत्र में बीते दिन हुए 35 लाख की चोरी समेत कई अन्य थानों के मामलों का खुलासा हुआ है. जिसमें कांके थाना का 7 कांड, रातु थाना का 2, पण्डरा ओपी का-01 कांड सहित कुल 10 चोरी के मामलों का खुलासा हुआ है।

झारखंड सरकार ने 975 शिक्षकों को सौंपें नियुक्ति पत्र ,मेट्रीक व इंटर टॉपरों स्कूटी - लैपटॉप

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने मंगलवार को झारखंड मंत्रालय में आयोजित एक कार्यक्रम में 975 नवनियुक्त स्नातकोत्तर प्रशिक्षित शिक्षकों, सहायक आचार्यों और प्रयोगशाला सहायकों को नियुक्ति पत्र सौंपा। उन्होंने झारखंड एकेडमिक काउंसिल की ओर से आयोजित वर्ष 2025 के मैट्रिक और इंटरमीडिएट परीक्षा के टॉपर छात्र-छात्राओं को भी सम्मानित किया गया।

इन्हें 125 सीसी की स्कूटी, लैपटॉप, मोबाइल फोन और 3 लाख रुपये के चेक प्रदान किए गए। कार्यक्रम में सीबीएसई और आईसीएसई बोर्ड के टॉपर्स को भी पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार शिक्षा व्यवस्था को समग्र रूप से मजबूत बनाने पर फोकस कर रही है। उन्होंने राज्य के प्रसिद्ध नेतरहाट आवासीय विद्यालय में को-एजुकेशन शुरू करने की भी घोषणा की।

अगले सत्र से यह विद्यालय में लड़कियों का भी नामांकन किया जाएगा। सोरेन ने कहा कि सरकार नेतरहाट की तर्ज पर तीन और विद्यालय खोलेगी। राज्य में शैक्षणिक सुधार के लिए सरकार की ओर से उठाए जा रहे कदमों का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, "सरकारी विद्यालय अब निजी स्कूलों से पीछे नहीं रहेंगे। हमारी कोशिश है कि यहां पढ़ने वाले बच्चों को भी वही संसाधन और अवसर मिलें।"

मुख्यमंत्री ने कहा कि विद्यार्थियों को पढ़ाई और करियर के लिए किसी प्रकार की आर्थिक परेशानी न हो, इसके लिए गुरुजी क्रेडिट कार्ड योजना के तहत 15 लाख रुपये तक का लोन बिना गारंटी उपलब्ध कराया जा रहा है। वहीं, विदेश में उच्च शिक्षा के लिए शत-प्रतिशत छात्रवृत्ति की सुविधा भी दी जा रही है। कार्यक्रम के दौरान स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार योजना और झारखंड ई-शिक्षा महोत्सव की भी औपचारिक शुरुआत की गई। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री राधाकृष्ण किशोर, मंत्री संजय प्रसाद यादव, मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की, राज्यसभा सांसद महुआ माजी सहित वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

अजनाला बाढ़ पीड़ितों का हाल लेने आए राज्यपाल श्री कटारिया से विधायक एवं पूर्व मंत्री धालीवाल ने केंद्र से कम से कम 2 हजार करोड़ रुपये के पैकेज जारी करवाने की उठाई मांग

अमृतसर / अजनाला, 02 सितंबर (साहिल बेरी)

आज शाम को खराब मौसम और बारिश के बावजूद विधान सभा क्षेत्र अजनाला के रावी नदी और सक्की नाले में आई बाढ़ लाने वाली भयानक बाढ़ का मौके पर जायजा लेने और जिला प्रशासन द्वारा गांव चमियारी में बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए लगाए गए राहत शिविर में प्रभावित लोगों से संवाद स्थापित करने के लिए पंजाब के राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया विशेष रूप से पहुंचे। इस मौके पर प्रशासनिक और सेना के अधिकारियों सहित प्रभावित लोगों और गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में हुई अनौपचारिक बैठक में विधायक और पूर्व कैबिनेट मंत्री पंजाब सरदार कुलदीप सिंह धालीवाल पिछले 7 दिनों से बाढ़ की प्राकृतिक विभीषिका की मार झेल रहे क्षेत्रवासियों के दुखद वृत्तांत पेश करने के लिए शामिल हुए।इस दौरान पूर्व कैबिनेट मंत्री और विधायक सरदार धालीवाल ने पंजाब के राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया का औपचारिक शब्दों में स्वागत करते हुए कहा कि

पंजाब को नशा मुक्त करने सहित अन्य सामाजिक बुराइयों के खात्मे के लिए पहले से ही आपके द्वारा नेक नीयत, दूरदर्शिता और सर्वजन के कल्याण के मिशन में शुरू की गई वास्तविक लहर से क्षेत्र अजनाला के वासी आपके आगमन पर शानदार स्वागत करना चाहते थे, लेकिन बाढ़ के कारण हुई भारी तबाही को देखते हुए उन्होंने (सरदार धालीवाल) सहित क्षेत्रवासी सिर्फ आपका औपचारिक रूप से स्वागत करने में ही सक्षम हैं। विधायक सरदार धालीवाल ने राज्यपाल पंजाब श्री गुलाब चंद कटारिया को बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रवासियों की ओर से मांग पत्र पेश करते हुए कहा कि भारत-पाक अंतरराष्ट्रीय लगभग 49 किलोमीटर लंबी सीमा पर विधान सभा क्षेत्र अजनाला स्थित होने के कारण इस अंतरराष्ट्रीय सीमा के लोगों को अंतरराष्ट्रीय रावी नदी के उफनते पानी का दर्द अक्सर झेलना पड़ता है। इस क्षेत्र में बसने वाले ग्रामीण और अर्ध-शहरी नागरिक बीएसएफ के पीछे पड़ोसी देश पाकिस्तान की भारत विरोधी साजिशों, ड्रोन द्वारा नशों, हथियारों और घुसपैठ आदि को विफल करने के लिए बीएसएफ, पंजाब पुलिस और सिविल प्रशासन के सहयोग में दूसरी सुरक्षा पंक्ति के रूप में देश की एकता और अखंडता की मजबूती के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। और अतीत में 1965, 1971, 1999 की कारगिल लड़ाइयों और हाल ही में ऑपरेशन सिंधूर के दौरान भी इन सीमावर्ती लोगों ने पड़ोसी देश पाकिस्तान की साजिशों के दांत खट्टे करने के लिए मजबूत चट्टान की तरह बीएसएफ जवानों के साथ खड़े रहे। सरदार धालीवाल ने पेश किए गए मांग पत्र में राज्यपाल पंजाब श्री कटारिया को अवगत कराया कि अब पिछले 1 हफ्ते से रावी नदी में 1988 से भी भयानक बाढ़ की तरह आई बाढ़ ने 1988 के बाद 38 वर्षों में इस क्षेत्र के लोगों द्वारा कड़ी मेहनत से आर्थिक, सामाजिक, शानदार घर, कृषि, पशु धन, छोटे कारोबार, बहुपक्षीय विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़कों, बांध, पुल-पुलिया आदि क्षेत्रों में सरकारी अनुदान के अलावा गैर-सरकारी साधनों से पैरों पर खड़े किए मूल ढांचे को अजनाला में तबाही करके बर्बाद करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है। बाढ़ की भयावहता के कारण इस क्षेत्र में रहने वाले शांतिप्रिय नागरिक सीधे और अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 2 हजार करोड़ रुपये का आर्थिक नुकसान उठाने के लिए प्राकृतिक विभीषिका का शिकार हो गए हैं।

अमृतसर इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स एसोसिएशन की ओर से आज रविदास रोड हॉल बाजार के सभी दुकानदारों ने जीएसटी की लगातार हो रही इंस्पेक्शन से दुखी होकर एक बैठक की।

अमृतसर, 2 सितंबर (साहिल बेरी)

इस बैठक में गुरप्रीत सिंह कटारिया, सुरिंदर दुग्गल और बलबीर भसीन ने शिरकत की। दुकानदारों ने उन्हें अपनी समस्याओं से अवगत करवाया। इस पर कटारिया जी ने आश्वासन दिया कि जीएसटी विभाग के उच्च अधिकारियों के साथ बैठक करके जल्द ही समाधान निकाला जाएगा।

इस अवसर पर प्रधान रणजीत सिंह नागपाल, जनरल सेक्रेटरी रमेश कपूर, कैशियर नानक सिंह, प्रिंस, चंद्रमोहन, रमेश, शिव कुमार, अशोक, पवन कुमार पप्पू, गुरमीत सिंह छीना, केशव, अश्वनी, बलदेव कुमार काका, राहिल खन्ना, हरपिंदर सिंह, समीर अरोड़ा, अभिजीत सिंह, साहिल अरोड़ा, राजू भरत और बंटी सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023